ऑटिस्टिक विद्यार्थियों के शैक्षणिक जीवन में दृश्य कला का महत्व: एक कार्यात्मक अध्ययन (विशेष सन्दर्भ: 4-14 वर्ष के आयु वर्ग)

The Importance of Visual Arts in the Academic Lives of Autistic Students: A Functional Study (with special reference to the 4-14 age group)

कोटा विश्वविद्यालय, कोटा

की

पीएच.डी. (चित्रकला)

उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध प्रबन्ध

कला संकाय

शोधार्थी

रूबीना खान

पंजीयन क्रमांक (RS/2809/20)

शोध पर्यवेक्षक

डॉ. शालिनी भारती

आचार्य

चित्रकला विभाग

राजकीय कला महाविद्यालय, कोटा (राज.)

कोटा विश्वविद्यालय, कोटा

(राजस्थान) 324005

भारत

मार्च, 2026

शोध निदेशालय
कोटा विश्वविद्यालय
एम.बी.एस. मार्ग, कोटा (राजस्थान)–३२४००५
फोन नम्बर : ०७४४–२४७१०३७

Directorate of Research
University of Kota
MBS Marg, KOTA (Rajasthan)-324005
Phone No.: 0744-2471037

CERTIFICATE

I feel great pleasure in certifying that the Ph.D. thesis entitled **"ऑटिस्टिक विद्यार्थियों के शैक्षणिक जीवन में दृश्य कला का महत्व: एक कार्यात्मक अध्ययन (विशेष सन्दर्भ: 4-14 वर्ष के आयु वर्ग)''** submitted by **Rubina Khan**, Registration No. **(RS/2809/20)** to the University of Kota in the partial fulfillment of the requirements for the award of the degree of Doctor of Philosophy is based on the research work carried out under my guidance.

She has completed the following requirements as per UGC Regulations and research ordinance of the University:

(a) Satisfactory Completion of the Ph.D. Course Work.

(b) Submission of Half Yearly Progress Reports.

(c) Fulfillment of residential requirement of the Research Centre (Minimum 200 Days).

(d) Presentation of research work before the Departmental Committee.

(e) Publication at least Two research paper in the referred research journal of national and international repute.

(f) Two paper presentations in the Conferences/ Seminars.

I recommend the submission of the Ph.D. thesis and certify that it is fit to be evaluated by the examiners.

Date:

Place: **Kota**

(Prof. Shalini Bharti)

Research Supervisor

शोध निदेशालय
कोटा विश्वविद्यालय
एम.बी.एस. मार्ग, कोटा (राजस्थान)–३२४००५
फोन नम्बर : ०७४४–२४७१०३७

Directorate of Research
University of Kota
MBS Marg, KOTA (Rajasthan)-324005
Phone No.: 0744-2471037

DECLARATION

I, **Rubina Khan**, hereby certify that the research work presented in my Ph.D. thesis entitled **"ऑटिस्टिक विद्यार्थियों के शैक्षणिक जीवन में दृश्य कला का महत्व: एक कार्यात्मक अध्ययन (विशेष सन्दर्भ: 4-14 वर्ष के आयु वर्ग)"** which is carried out by me under the supervision of supervisor **Professor Shalini Bharti, Dept. of Drawing & Painting Govt. Arts College, Kota, Rajasthan** and submitted in the partial fulfillment of the requirement for the award of the degree of **Doctor of Philosophy** of the University of Kota, represents my ideas in my own words and where others ideas or words have been included in this thesis, I have adequately cited and referenced the original sources.

The work presented in this thesis has not been submitted elsewhere for the award of any degree or diploma from any other institution or university in India or abroad. I declare that I have adhered to all the principles of academic honesty and integrity and have not misrepresented or fabricated or falsified any idea / data / fact / source in my submission.

I understand that any violation of the above will cause for disciplinary action by the University and can also evoke penal action from the sources which have thus not been properly cited or from whom proper permission has not been taken when needed.

Date: **(Rubina Khan)**

Place: **Kota** **Research Scholar**

This is to certify that the above statement made by **Rubina Khan** (Registration **No. RS/2809/20**) is correct to the best of my knowledge.

Date: **(Prof. Shalini Bharti)**

Place: **Kota** **Research Supervisor**

शोध निदेशालय
कोटा विश्वविद्यालय
एम.बी.एस. मार्ग, कोटा (राजस्थान)–३२४००५
फोन नम्बर : ०७४४–२४७१०३७

Directorate of Research
University of Kota
MBS Marg, KOTA (Rajasthan)-324005
Phone No.: 0744-2471037

Anti-Plagiarism Certificate

It is certified that the Ph.D. thesis entitled **"ऑटिस्टिक विद्यार्थियों के शैक्षणिक जीवन में दृश्य कला का महत्व: एक कार्यात्मक अध्ययन (विशेष सन्दर्भ: 4-14 वर्ष के आयु वर्ग)"** submitted by **Rubina Khan** has been examined with the anti-plagiarism tool. We undertake that:

a) The thesis has significant new work/knowledge as compared already published or are under consideration to be published elsewhere. No sentence, equation, diagram, table, paragraph or section has been copied verbatim from previous work unless it is placed under quotation mark and duly referenced.

b) The work presented is original and own work of the author i.e. there is no plagiarism. No ideas, processes, results or words of others have been presented as the author's own work

c) There is no fabrication of data or results which have been compiled and analyzed.

d) There is no falsification by manipulating research materials, equipment or processes, or changing or omitting data or results such that the research is not accurately represented in the research record.

e) The thesis has been checked by using **DrillBit** tool/software and found within the limits as per UGC plagiarism policy and instructions issued from time to time.

Report is also enclosed along with this Ph.D. thesis.

Date: **(Rubina Khan)**
Place: **Research Scholar**

Date: **(Prof. Shalini Bharti)**
Place: **Research Supervisor**

The Report is Generated by DrillBit Plagiarism Detection Software

Selected Language Hindi

Submission Information

Author Name	RUBINA KHAN
Title	ऑटिस्टिक विद्यार्थियों के शैक्षणिक जीवन में दृश्य कला का महत्व: एक का र्यात्मक अध्ययन (विशेष सन्दर्भ: 4-14 वर्ष के आयु वर्ग)
Paper/Submission ID	5302247
Submitted by	drhkbairwa@gmail.com
Submission Date	2026-02-26 13:57:25
Document type	Thesis

Result Information

Similarity	**0%**

A Unique QR Code use to View/Download/Share Pdf File

DrillBit

DrillBit Similarity Report

0	2	A	A-Satisfactory (0-10%) B-Upgrade (11-40%) C-Poor (41-60%) D-Unacceptable (61-100%)
SIMILARITY %	MATCHED SOURCES	GRADE	

LOCATION	MATCHED DOMAIN	%	SOURCE TYPE
1	Thesis Submitted to Shodhganga, shodhganga.inflibnet.ac.in	<1	Publication
2	Paper Submitted to Shri Khushal Das University_5279983	<1	Student Paper

प्राक्कथन

आधुनिक युग में हर दिन कुछ नया सीखने को मिलता है। हर दिन कुछ नया रहता है। इसलिए शिक्षा का महत्व हर दिन बढ़ता ही जा रहा है। जहाँ पहले कॉलेज या स्कूलों में प्रत्यक्ष रूप से जाकर के शिक्षा ग्रहण की जाती थी। आजकल वही आप घर में बैठकर सुविधा पूर्वक अच्छी से अच्छी शिक्षा को दृश्य व श्रव्य माध्यम के द्वारा ग्रहण कर सकते हैं। इस शोध कार्य में शिक्षा और कला के महत्व को खुली तौर पर दर्शाया गया है तथा यह बताया गया है कि एक विशेष परिस्थिति वाले विद्यार्थी को उसके मानसिक स्तर के आधार पर ही शिक्षा देना उचित रहता है।

गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागूं पाय।

बलिहारी गुरु आपने, गोविंद दियो बताय॥

संत कबीर जी का उपरोक्त दोहा मेरे जीवन में सदैव ही सार्थक रहा है। मेरे जीवन में सदैव हि गुरुजनों का आशीष रहा है, जिस वजह से मैं आज यहां पर पहुंच पाई हूं,तो भगवान को नमन करने से पहले मैं अपने गुरुजनों को नमन करना चाहूंगी तथा आगे इस शोध का श्रेय मैं अपने विद्यार्थियों को देना चाहूंगी जो मेरे प्रेरणा का स्रोत बने मैंने एक शिक्षिका के पद पर रहते हुए कई बच्चों को पढ़ाया है।

इसमें से कई बच्चे पढ़ाई में अच्छे ना होते हो हुए भी कला में बहुत अच्छा प्रदर्शन करते थे। मुझे से सदैव से ही यह लगता था, कि वह पढ़ाई में क्यों अच्छा प्रदर्शित नहीं कर पाए। तो छोटे-मोटे प्रयोग मैंने अपनी कक्षा में ही शुरू कर दिए थे । सामाजिक विज्ञान में इतिहास को उन्हें कहानियों के माध्यम से समझाया। किताबें बंद करके पढ़ाया ताकि वह सिर्फ शब्दों को ना समझे, उनके पीछे के मतलब को जान सके। उनको अपने आप को व्यक्त करने के लिए समझी हुई बात को उसी समय व्यक्त करने को कहा,ताकि वह तथ्य याद रह सके। कई विद्यार्थी ऐसे थे जो अधिक प्रयासों के बाद भी सामान्य बच्चों के साथ तालमेल नहीं बिठा पाते थे। उनकी खोज में यह शोध कार्य शुरू हुआ।

सौभाग्यपूर्वक मेरे इस विषय:- **ऑटिस्टिक विद्यार्थियों के शैक्षणिक जीवन में दृश्य कला का महत्व: एक कार्यात्मक अध्ययन (विशेष सन्दर्भ: 4-14 वर्ष के आयु वर्ग)** को पैनल के द्वारा स्वीकृति मिल गई । यहां पर मैं अपने आप को दूसरी बार भाग्यशाली कहूंगी, क्योंकि शोध पर्यवेक्षक के रूप में मुझे **डॉक्टर शालिनी भारती आचार्य और चित्रकला विभागाध्यक्ष (राजकीय कला महाविद्यालय, कोटा राज.)** की नियुक्त हुई ।

शोध विषय नया होने के बावजूद भी उन्होंने स्वतंत्र रूप से मुझे इसमें काम करने की अनुमति दी तथा विषम परिस्थितियों में गुरु ना होकर उन्होंने एक मां के जैसे मेरा मार्गदर्शन किया। कई बार ऐसी परिस्थितियों कासामना भी करना पड़ा है। जहां पर मुझे लगा कि यह शोध कार्य पूर्ण नहीं हो पाएगा। किंतु उनके सहयोग समर्थ और प्रोत्साहन से यह कार्यपूर्ण हुआ है।

कला राजकीय महाविद्यालय कोटा के **प्राचार्य डॉक्टर महोदय रोशन भारती** जी ने भी विश्वास दिलाया कि मन लगा कर कार्य करे सफलता ज़रूर हासिल होगी। मुझमें विश्वास रखने उनका तहे दिल से धन्यवाद ।

शोध कार्य में सबसे महत्वपूर्ण सहयोग मेरी **स्वर्गीय माँ रिजवाना** का रहा है क्योंकि जब शोध कार्य के लिए इंटरव्यू हो रहे थे। तब मेरा बेटा 40 दिन का था और वह मेरे साथ एक मजबूत चट्टान की तरह खड़ी रही और मुझे कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करती रही।

सभी कठिनाइयों का सामना करते हुए मेरे जीवनसाथी **आमिर मंजूर खान** ने मेरा हर संभव सहयोग दिया। उनके बिना इस कार्य की कल्पना करना संभव ही नहीं था। मैं उनकी अंतःकरण से आभारी रहूंगी।

शोध कार्य में सहयोग प्रदान करने वाले **डॉ. राज कुमार गर्ग, आचार्य** महोदय का भी उचित दिशानिदेर्शों से मिलने वाले मार्गदर्शन पर आभार प्रकट करती हूँ।

राजकीय कला महाविद्यालय, कोटा के पुस्तकालयाध्यक्ष एवं कर्मचारियों का भी आभार व्यक्त करती हूँ।

गौरवी गोविंद यादव स्कूल प्रभारी और **शिक्षिका कल्पना सुधाकर गिरि** (अन्ज़ा स्पेशल स्कूल मुंबई) को आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने शोध कार्य मे सहयोग किया।

मैं अपने परिवार के सभी सदस्यों और अपने बच्चों को धन्यवाद देना चाहती हूँ।

इस शोध प्रबन्ध के कलात्मक एवं त्रुटि रहित मुद्रण कार्य के लिए मैं कम्प्यूटर आपरेटर, **श्री योगेश कुमार नामा,** निकुंज कम्प्यूटर एण्ड जाब वर्क सेन्टर, 129-A, केशवपुरा-4, कोटा (राज.) को हृदय से धन्यवाद देती हूँ, जिन्होंने अपनी व्यस्तता के बाद भी अथक सहयोग प्रदान किया। वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियों को शुद्ध करने का मैंने यथा सम्भव प्रयास किया है फिर भी टंकण सम्बन्धी कुछ त्रुटियाँ रह गयी हो, तो मैं क्षमा प्रार्थी हूँ।

सभी कठिनाईयों को पार करते हुए मैं इस शोधग्रन्थ को प्रस्तुत कर पाई इसमें कोई त्रुटि रह गई हो तो यह मेरे अल्पज्ञान के कारण हुआ होगा।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि विद्वज्जन मेरे इस शोध प्रबन्ध का रूचिकर अध्ययन करके मुझे अनुगृहित करेंगे।

इसी मंगलकामना के साथ।

शोधार्थी

रुबीना खान

शोध सार

कला ही जीवन है। कला के बिना मानव जीवन नीरस और पशु समान हैं। मानव की उत्पत्ति के साथ ही कला की उत्पत्ति मानी गई हैं। कला का सर्वप्रथम उपयोग संवाद स्थापित करने के लिए माना जाता रहा हैं । तद्पश्चात कला को अन्य उपयोग हेतु लिया जाने लगा। हिन्दू पौराणिक ग्रन्थों और वेदो ने कला को देवत्व से जोड़ा। यहाँ पर कला को सुख और ज्ञान देने वाला बताया गया है। कला शिक्षा के द्वारा मानव उपयोगी कला और ललित कला का उपयोग कर अपने जीवन को सुचारू रूप से चला रहा है।

शिक्षा में कला का उपयोग और भूमिका महत्पूर्ण है। शिक्षा के अधिगम में यदि कला शिक्षा को जोड़ी जाए तो हर विषय सरल और सुगम हो जाएगा। हर विद्यार्थी के लिए कठिन विषयों को समझना और भी आसान हो जाएगा। बच्चे अपनी कल्पना शक्ति का उपयोग कर नया सृजन में समर्थ हो सकते हैं।

अभी तक केवल चर्चा सामान्य बच्चों की हो रही थी, यदि इसी विषय को लेकर हम आर्टिस्टिक बच्चों पर लागू करते हैं,तो उनका जीवन सामान्य बच्चों की तुलना में अधिक कठिन होता है।

इस शोध की रूपरेखा कला और ऑटिस्टिक विद्यार्थियों के शैक्षणिक जीवन को ध्यान में रखकर किया गया है। शोध कार्य पूरी तरह कार्यात्मक रखा गया तथा 4 से 14 वर्ष के आयु वर्ग की विद्यार्थियों के जीवन पर यह किया गया है।

यह शोध कार्य अन्ज़ा स्पेशल स्कूल मुंबई में किया गया। जहां 6 बच्चों का चयन कर, उन्हें शोध कार्य हेतु उचित माना गया । यहां पर शोध कार्य को पांच भागों में विभक्त किया गया है।

प्रथम अध्याय में दृश्य कला का परिचय और परिभाषा की व्याख्या की गई है, और शिक्षा में दृश्य कला के महत्व का विवरण दिया गया है। दृश्य कला शिक्षा में बहुत अधिक महत्व रखती हैं। इसके साथ ही यहां पर प्रदर्शन कला की परिभाषा और उसका शिक्षा में महत्व की व्याख्या की गई है। आज के आधुनिक युग में टेक्नोलॉजी का उपयोग अधिक हो रहा है, वहीं शिक्षा में भी काफी परिवर्तन आए हैं। इन्हीं परिवर्तनों के साथ हमें शिक्षा के साथ कला के विभिन्न रूप का उपयोग और उनका छात्र-छात्रों के जीवन आये परिवर्तनों का वर्णन किया गया है। उदाहरण के लिए कला का शिक्षा में भावनात्मक, मानसिक, सांस्कृतिक, संचार कौशल इत्यादि में महत्वपूर्ण भूमिका हैं।

द्वितीय अध्याय में दृश्य और प्रदर्शन कला का अन्य विषयों पर प्रभाव है । यहां पर इस विषय को समझने का पूर्ण प्रयास किया गया है,कि दृश्य कला और

प्रदर्शन कला का सभी विषयों पर अपना भिन्न-भिन्न प्रभाव डालती है। कला भाषा,गणित, सामाजिक अध्ययन और विज्ञान के साथ जुड़कर अध्ययन कार्य को रुचिकर और कल्पनाशील बना देती है।

तृतीय अध्याय में ऑटिज्म की परिचय ,परिभाषा और उसके प्रकारों का वर्णन किया गया है। जहां पर ऑटिज्म आजकल अधिक चर्चा का विषय है, वही लोग अभी भी इसे काफी अनभिज्ञ है। लोगों को सिर्फ इतना पता है, कि यह एक न्यूरोलॉजिकल डिसऑर्डर है। लेकिन इसके प्रकारों में भिन्नता हि इसकी विशेषता है, क्योंकि हमें यह ज्ञात होगा कि बच्चा किस स्तर पर ऑटिस्टिक है, उसके उस स्तर पर हम उसका निदान व सहयोग शिक्षा और कला के द्वारा कर सकते हैं। कभी-कभी सामान्य बच्चों और आर्टिस्टिक बच्चों को देखकर अंतर कर पाना मुश्किल होता है। ऑटिज्म का जो प्रकार है, वह काफी भिन्न होता है।

चतुर्थ अध्याय यहां पर अन्ज़ा स्पेशल स्कूल में छह बच्चों के ऊपर किए गए शोध कार्य का विवरण है । यहां पर आयु के हिसाब से तीन भागों में विभक्त किया गया जो क्रमशः4-6, 6-10, 10-14 आयु वर्ष है। यहां पर कला को मुख्य आधार मानकर विभिन्न विषयों को सम्मिलित कर उन्हें अक्षर ज्ञान, कहानी लेखन, कहानी वाचन, तार्किक समस्याओं जैसे शिक्षक अधिगम में अवगत करवाया गया ।

पंचम अध्याय- इस अध्याय में क्रियात्मक शोध कार्य की चर्चा की गई है। तथा आर्टिस्टिक बच्चों के शैक्षिक जीवन में दृश्य कला का महत्व स्पष्ट किया गया है। यहां पर जिस कार्य को बच्चे सामान्य तरीके से समझने में काफी समय ले लेते थे। और कई बार उन्हें कार्य को समझ में दिक्कत का सामना करना पड़ता हैं। वही दृश्य कला और प्रदर्शन कला के माध्यम से हर विषय उन्हें सरल और सहज लगा तथा नियमित कार्य को नियमित समय में पूर्ण किया।

भविष्य में इस विषय पर और अधिक गंभीरता से शोध की ज़रूरत है। हर बच्चा देश के विकास में अपनी भूमिका का निर्वाह करता है।

अनुक्रमणिका

अध्याय	विषय वस्तु	पृष्ठ
	शीर्षक	
	प्रमाण-पत्र	i
	घोषणा	ii
	साहित्यिक चोरी विरोधी प्रमाण पत्र	iii-v
	प्राक्कथन	vi-viii
	शोध सार	ix-x
	अनुक्रमणिका	xi-xvii
प्रथम अध्याय	दृश्य कला	1-19
द्वितीय अध्याय	दृश्य कला और प्रदर्शन कला का अन्य विषयो पर प्रभाव	20-33
तृतीय अध्याय	ऑटिज्म (आत्मकेंद्रित)	34-54
चतुर्थ अध्याय	ऑटिज़्म से पीड़ित विद्यार्थियों के शैक्षिक जीवन पर दृश्य कला का प्रभाव व महत्त्व	55-130
पंचम अध्याय	निष्कर्ष	131-138
	शोध सारांश	139-152
	संदर्भ ग्रंथ सूची	153-157
	अनुसंधान प्रकाशन संदर्भित पत्रिकाओं में	
	प्रमाण-पत्र	

चित्र सूची

चित्र संख्या	विवरण	पृष्ठ संख्या
1.1	द आर्टिस्ट इज़ प्रेज़ेंट (**2010**) के प्रदर्शन के दौरान मरीना अब्रामोविक सौजन्य: डेज़्ड	10
1.2	मरीना अब्रामोविक. ताल **0. 1974**	11
1.3	गाने और डांस के साथ हिंदी 'मात्राएं' सिखाते हुए (फोटो: खुशबू आनंद/**X**)	14
1.4	पहली क्लास के छात्र डांस के ज़रिए गणित में बड़े तथा छोटे अंको में अंतर सीखते हुए । आर्ट्स इंटीग्रेशन मिनट - **25** सितंबर, **2012**	15
2.1	भीमबेटा गुफा चित्रकला	23
2.2	परिवार का चित्र	24
2.3	कहानी चित्रण	24
2.4	ओडिशा के पुरी में स्थित कोणार्क सूर्य मंदिर	26
2.5	गणितय गोल्डन रेशों	26
2.6	पाबूजी की फड़	29
3.1	टेंपल ग्रैंडिन पशुओ के साथ (छवि: रोज़ाली विनार्ड द्वारा)	38
3.2	महारानी एलिजाबेथ द्वारा स्टीफन विल्टशायर को लिखा गया एक पत्र **20**	40
3.3	आर्टिस्ट स्टीफन विल्टशायर लंदन के सिटी हॉल में याददाश्त के आधार पर लंदन का पैनोरमा स्केच बनाते हुए, लंदन, ब्रिटेन - **12** अक्टूबर **2007** **(Stock Image 4241234l)**	41
3.4	जलवायु के लिए स्कूल हड़ताल) साइन, स्टॉकहोम, अगस्त **2018**	42
3.5	कनेडीइन अमेरिकी कॉमेडियन और एक्टर डैन एक्रोयड, **2009**।	43
3.6	प्रेस एसोसिएशन के लिए विशेष। सुसान बॉयल ने **BBC** चिल्ड्रन इन नीड अपील **2011** के दौरान **BBC** टेलीविज़न सेंटर, वुड लेन, व्हाइट सिटी, लंदन में	44

	परफ़ॉर्म किया। (छायाचित्र: इयान वेस्ट/**PA** इमेजेज वाया गेटी इमेजेज)	
3.7	एंथनी हॉपकिंस (**Anthony Hopkins) (Hendrickx, 2015)**।	45
3.8	जिया अपने माता-पिता रचना राय और मदन राय के साथ। (**Satish Bate / HT Photo)**	46
3.9	ऑटिस्टिम से सम्बन्धित प्रतीक	48
4.1	शोध कार्य करने के लिए लिखा गया प्रार्थना पत्र	57
4.2	**2** अंज़ा स्पेशल स्कूल बायकुला (एंटोनिया डिसूज़ा हाई स्कूल, बायकुला ईस्ट, मुंबई)	58
4.3	अंज़ा स्पेशल स्कूल बायकुला (विशेष विद्यालय के विभिन्न अनुभाग)	58
4.4	अंज़ा स्पेशल स्कूल बायकुला (विशेष विद्यालय के विभिन्न अनुभाग)	59
4.5	शोधकर्ता का क्लासरूम में कल्पना के साथ बच्चों से आम बातचीत	60
4.6	जय वकील फाउंडेशन द्वारा दिशा प्रोजेक्ट के अंतर्गत बनाई गई विशेष	61
4.7	दृश्य कला पर आधारित नियमित कक्षा की समय सारणी	61
4.8	दिशा प्रोजेक्ट की इंग्लिश की अभ्यास पुस्तक। **a** अल्फाबेट से लेकर **e** अल्फाबेट तक बच्चों ने स्वयं कार्य किया है, तथा शिक्षिका द्वारा जांची गई पुस्तक।	64
4.9	दिशा प्रोजेक्ट की इंग्लिश की अभ्यास पुस्तक । **f** अल्फाबेट से लेकर **k** अल्फाबेट तक बच्चों ने स्वयं कार्य किया है, तथा शिक्षिका द्वारा जांची गई पुस्तक।	65
4.10	मराठी तथा इंग्लिश में चित्र पुस्तिका जहां बच्चे अपने मन अनुसार रंगो भरते हैं, और कार्य करते हैं	65
4.11	सामाजिक विज्ञान या **E. V. S** (एनवायरनमेंटल स्टडीज़) चित्रित पुस्तक	66
4.12	अल्फाबेट चित्रित पुस्तिका	66
4.13	सचित्र और लिखित पुस्तक	67

4.14	दोपहर का भोजनावकाश	68
4.15	दोपहर का भोजनावकाश जहां कल्पना मैम श्रावणी को उसका लंचबॉक्स पैक करने में मदद करती हुई । और उसे अपनी तय जगह पर रखने का निर्देश देती हुई । (मध्य मे श्रावणी)	69
4.16	कॉलेज के छात्रों ने एक रेस कॉम्पिटिशन का आयोजन, जिसमें शिवांश ने भी हिस्सा लिया। (दाई ओर से प्रथम उत्साहित मुद्रा में शिवांश)	70
4.17	बच्चों का फर्स्ट टर्म और सेकंड टर्म का मूल्यांकन ।	71
4.18	अवधूत के द्वारा कार्यात्मक अध्ययन करते हुए ।	75
4.19	कार्य करते हुए अवधूत	76
4.20	कार्य में सहयोग करते शोधकर्ता	76
4.21	सभी बच्चों के साथ कार्य करते हुए सहयोग कर्ता	77
4.22	शोध कर्ता का सहयोग करते हुए कल्पना जी	77
4.23	बच्चों को दिशा निर्देश देते हुए शोध कर्ता	77
4.24	ए अल्फाबेट की ट्रेसिंग	78
4.25	बच्चों द्वारा ट्रेसिंग के ऊपर कागज चिपकाने का कार्य	78
4.26	बी अल्फाबेट की ट्रेसिंग	78
4.27	बच्चों द्वारा ट्रेसिंग के ऊपर कागज चिपकाने का कार्य	78
4.28	प्लेट में रखी हुई सूजी	79
4.29	बच्चों द्वारा खींची गई रेखा	79
4.30	बच्चों द्वारा बनाया गया ए अल्फाबेट	81
4.31	बच्चों द्वारा बनाया गया ओ अल्फाबेट	81
4.32	संख्या ज्ञान	82
4.33	संख्या पहचान	82
4.34	बच्चों द्वारा संख्या पहचना करके पूर्ण किया गया कार्य	82
4.35	वृत और वर्ग की पहचान	83
4.36	वृत और वर्ग का पूर्ण कार्य	83
4.37	रोटी बेलते हुए बच्चें	84
4.38	आटे से खेलते हुए	84
4.39	मटर छिलते हुए बच्चे	84
4.40	मटर खेलते हुए बच्चे	84

4.41	तार्किक समस्या	85
4.42	तार्किक समस्या	85
4.43	बॉक्स को देखते हुए बच्चे	86
4.44	बॉक्स को छूकर अनुभव करते हुए बच्चे	86
4.45	बच्चों का ध्यान आकर्षित करते हुए शोधार्थी	87
4.46	बच्चों का ध्यान आकर्षित करते हुए शोधार्थी	87
4.47	कार्य करते हुए बच्चें	88
4.48	कार्य करते हुए बच्चें	88
4.49	जानकारी प्राप्त करते हुए बच्चें	88
4.50	प्रश्न करते हुए शोध कर्ता	89
4.51	उत्तर देते हुए छात्र	89
4.52	कागज चिपकाते हुए अवधूत	90
4.53	शोध कर्ता द्वारा अवधूत की सहायता	90
4.54	हम्मार हुसैन शेख कार्य करते हुए	91
4.55	हम्मार हुसैन शेख कार्य करते हुए	91
4.56	अस्त-व्यस्थ पड़े हुये खिलौने	94
4.57	क्रम में रखे हुये खिलौने	95
4.58	कहानी चित्रण - **1**	95
4.59	कहानी चित्रण - **2**	95
4.60	रंगों की प्रयोगशाला	97
4.61	दो विभिन्न रंग	97
4.62	रंगों को मिश्रण करते हुए	98
4.63	मिश्रण के पश्चात्	98
4.64	रंगों को मिश्रित करते हुए बच्चें	99
4.65	मिश्रण के पश्चात् प्राप्त रंग	99
4.66	मिश्रण के पश्चात् प्राप्त रंग	100
4.67	अव्यवस्थित अक्षर	100
4.68	व्यवस्थित अक्षर	101
4.69	व्यवस्थित अक्षर	101
4.70	बनी हुई आकृति	102
4.71	बनी हुई आकृति मिलान करने का प्रश्न	103
4.72	बनी हुई आकृति मिलान के पश्चात् प्राप्त उत्तर	104

4.73	स्कूल द्वारा किया गया शिवांश की मेडिकल जाँच का प्रमाण-पत्र	105
4.74	माध्यमिक कक्षा	106
4.75	शिंवाश और हम्मार दायें से प्रथम	106
4.76	कक्षा में खाने के लिए अलग से रूम	107
4.77	शिंवाश द्वारा बनाया गया परिवार का चित्र	108
4.78	शिक्षिका द्वारा शीज़ान को कराया गया व्यक्तिगत कार्य	109
4.79	शॉफ्ट ब्लॉक प्रिन्टिंग	109
4.80	विद्यार्थी द्वारा किया गया विभिन्न प्रिन्टिंग कार्य	110
4.81	विद्यार्थी द्वारा किया गया विभिन्न प्रिन्टिंग कार्य	110
4.82	ब्लॉक को रंगते हुए शिवांश एवं शीज़ान	110
4.83	ब्लॉक को रंगते हुए शिवांश एवं शीज़ान	111
4.84	ब्लॉक को रंगते हुए शिवांश का महीन चित्रण	111
4.85	महीन चित्रण	111
4.86	तार्किक समस्या	112
4.87	तार्किक समस्या हल करते हुए शीज़ान	113
4.88	तार्किक समस्या हल करते हुए शिवांश	113
4.89	विषय चित्रण करते हुए शीज़ान और शिवांश	114
4.90	रंग भरते हुए शीज़ान	115
4.91	शिवांश का समुद्र चित्रण	115
4.92	शीज़ान का समुद्र चित्रण	116
4.93	अवधूत सॉफ्ट प्रिन्टिंग करते हुए	117
4.94	शोधकर्ता द्वारा अवधूत की प्रिन्टिंग में सहयोग करते हुए	117
4.95	प्रिंटिंग करते हुए हम्मार	118
4.96	सॉफ्ट प्रिटिंग करते हुए अवधूत एवं शोधार्थी द्वारा सहयोग	118
4.97	सॉफ्ट प्रिटिंग करते हुए अवधूत के साथ हम्मार एवं शोधार्थी द्वारा	119
4.98	तार्किक समस्याओं को हल करते हुए हम्मार	119
4.99	तार्किक समस्याओं को हल देखते हुए हम्मार	120

4.100	धागों को छूते हुए हम्मार	120
4.101	धागों को छूते हुए हम्मार	120
4.102	सिर पर बुक रखकर दौड़ने की तैयारी	121
4.103	सिर पर बुक रखकर दौड़ने में सहयोगी सदस्यों का दृश्य	121
4.104	हाथ में गुब्बारा लेकर दौड़ते हुए बच्चें	122
4.105	हाथ में गुब्बारा लेकर दौड़ते एवं शिक्षिका के साथ सीखते हुए बच्चें	122
4.106	बालक की 100 मीटर रैंस का दृश्य	123
4.107	बालिकाओं की **100** मीटर रैंस का दृश्य	123
4.108	खेल मैदान प्रशिक्षण देते हुए शिक्षक	124
4.109	खेल मैदान प्रशिक्षण लेते हुए विद्यार्थी	124
4.110	विजय छात्रों का चयन करते हुए पैनल	125
4.111	विजय छात्रों का चयन करते हुए पैनल	125
4.112	दौड़ते हुए विद्यार्थी	126
4.113	खेल मैदान प्रशिक्षण में देते हुए शिक्षार्थी	126
4.114	खेल मैदान प्रशिक्षण लेते हुए विद्यार्थी	127
4.115	लेमन रेस का दृश्य	127
4.116	क्रिसमस पार्टी का दृश्य	128
4.117	विजय अफ़िफा के साथ फोटों लेते हुए शोधार्थी	128
4.118	शोधार्थी का संस्थान द्वारा दिया गया प्रमाणित प्रमाण-पत्र	129

प्रथम अध्याय

दृश्य कला

प्रथम अध्याय

दृश्य कला

1.दृश्य कला

(i) परिचय

कला के जनक भगवान "शिव" को कहा जाता है, क्योंकि उनके द्वारा अनेक पुराणों की व तांडव नृत्य की रचना की गई । भगवान शिव को "प्रथम गुरु" भी कहा जाता है। दृश्य कला की मानव जीवन में काफी महत्वता है, आदिम समाज लेकर आधुनिक समय तक कला मनुष्य के जीवन का अभिन्न अंग रहा है। (NCERT, 2019)।

साहित्यसंगीतकलाविहीनः साक्षात्पशुः पुच्छविषाणहीनः ।
तृणं न खादन्नपि जीवमानस्तद्भागधेयं परमं पशूनाम् ॥

भर्तृहरि ऋषि द्वारा कहे श्लोक द्वारा यह सिद्ध भी होता है, कि कला संगीत और साहित्य के बिना मनुष्य का जीवन पूछ रहित पशु की सामान ही है। प्रकृति ने मनुष्य को प्रकृति मे निहित सभी रसो का स्वादन करने की क्षमता दी है किन्तु यह गुण पशुओ मे नहीं पाया जाता जिस कारण मानव पशु से भिन्न है।Arnheim, 1974)

(ii) दृश्य कला की परिभाषा -

दृश्य कला से तात्पर्य कला के उन रूपों से है, जिसे आँखों द्वारा महसूस किया जाए, तथा जिसके माध्यम से संदेश, अर्थ और भावना व्यक्त कर सके । दृश्य कलाओं में सजावटी, व्यावसायिक या ललित कला आदि में विभक्त किया जा सकता है, जैसे पेंटिंग, फोटोग्राफी या मूर्तिकला। (Eisner, 2002) |

दृश्य कला में सबसे महत्वपूर्ण शब्द "कला" है। प्राचीन काल से ही कला की महत्वता रही है ।आदि मानव द्वारा कला का मुख्य उपयोग संवाद स्थापित करने में किया गया इसके साक्ष्य हमें गुफा चित्रण में देखने को मिलते हैं Gombrich, 2006)।
तदुपरांत आज के समय में भी यह कार्य गतिमान है। आदि काल से ही कला मनुष्य के जीवन का अभिन्न अंग रहा हैं और उसका उपयोग संवाद स्थापित करने के साथ-साथ प्रतीक रूप में और अपना मनोरंजन करने के लिए करते थे । इन्हीं साक्ष्यों के द्वारा उनके समय स्थान और गतिविधियों का अनुमान आज भी लगाया जा सकता है(Britannica, 2023)।

प्रत्येक शिल्पकार के पास अपनी व्यक्तिगत और पारंपरिक कला को प्रदर्शित करने के लिए कला का माध्यम है जिसे हम हजारों साल पहले के इस उदाहरण के साथ अब तक महसूस कर सकते हैं।(Asher, 1992)।

दृश्य कला के अंतर्गत बनाई गई कलाकृति कलाकार के भाव को प्रकट करने के साथ-साथ दृश्य माध्यम से कई संदेश भी देती है। उदाहरण के लिए, ताज महल एक स्थापत्य कला है जिसे शाहजहाँ ने अपनी पत्नी की याद में बनवाया था। यहां मुख्य भाव प्रेम का है।ताजमहल अपनी स्थापत्य कला के कारण विश्व भर में प्रसिद्ध है | जो देखने वाले को अपनी ओर स्वतः ही आकर्षित कर लेता है |

दृश्य कला सचित्र सृजन के माध्यम से सृजन और संचार का एक सशक्त माध्यम है। ये अनोखा है सांकेतिक क्षेत्र एक ऐसा विषय है जिसकी अपनी विशिष्ट अपेक्षाएँ एवं सीख होती है। दृश्य कला बच्चों को उनके काल्पनिक जीवन और वास्तविक दुनिया और उनके विचारों के बीच स्वस्थ संबंध बनाने में मदद करती है। उसने टेढ़ी मेढ़ी रेखा खींचने के पीछे भी एक कहानी छुपी होती है| जो उनके भाव को व्यक्त करती है| भावनाओं और अनुभवों को कला के माध्यम से दृश्य रूप में व्यवस्थितऔर व्यक्त करने में मदद करता है| (Lowenfeld & Brittain, 1987)। ड्राइंग या पेंटिंग करते समय बच्चे नया ज्ञान प्राप्त करते हैं और उसे अपने अनुभवों से जोड़ते हैं।

शोधकर्ता के खुद दो बच्चे आयन और आईरा हैं, जिनकी उम्र लगभग 5 साल और 2.5 साल है। जब शोधकर्ता ने उन्हें मोम के रंगों से दीवारों पर पेंटिंग करते देखा, तो उन्होंने उनसे कुछ सवाल पूछे, जैसे वे ऐसा क्यों कर रहे हैं और क्या बना रहे हैं। जवाब मिला कि वे अपने आस-पास के वातावरण में जो कुछ भी देखते हैं, वे जो कुछ भी समझते हैं, उसे कॉपी करने की कोशिश करते हैं और उसमें अपनी इच्छानुसार बदलाव करते हैं जो उन्हें पसंद आता है और वे बिना किसी दबाव के यह काम कर पाते हैं और बहुत खुश महसूस करते हैं (Vygotsky, 1978)।

दृश्य कला किसी भी विषय को विद्यार्थी को सिखाने का एक बेहतरीन माध्यम है, लेकिन इसे क्रियात्मक रूप में करना बेहतर है क्योंकि एक बार जब आप अपने हाथों से काम करना शुरू कर देते हैं, तो आप काम करते समय इसका अनुभव कर सकते हैं।

कला में शिक्षण, खोज, सार्वभौमिकता देखी जाती है। बच्चों की रचना और सौंदर्यबोध को पुनः प्राप्त किया जा रहा है। प्रयोग आदि के माध्यम से कला के अर्थ को समझने और शिक्षण कार्य को सुगम बनाने का प्रयास किया गया है।

• **विभिन्न प्रकार की दृश्य कलाएँ-**

दृश्य कला अपने आप में एक विशाल विषय है जिसका उल्लेख प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक होता रहा है और जिसमें देश की स्थिति और समय अनुसार सामाजिक, मानसिक और सांस्कृतिक शिक्षा के क्षेत्र में रूप से नए-नए परिवर्तन आते रहते हैं।यहां मानसिक परिवर्तन का उल्लेख इसलिए किया गया है क्योंकि हर व्यक्ति का कला के प्रति अपना अनुभव और अभिव्यक्ति होती है।

दृश्य कलाओं को दो श्रेणियों में विभाजित किया जाता है, ललित कलाएँ और उपयोगी कलाएँ (NCRT) |

दृश्य कला के विभिन्न प्रकार इस प्रकार हैं:

1. चित्रकला
2. मूर्तिकला
3. फोटोग्राफी
4. प्रिंटमेकिंग
5. वास्तुकला
6. पेपर मैशी
7. डिजाइनिंग,इत्यादि|

• इनका विस्तृत वर्णन इस प्रकार है:

1. चित्रकला :

चित्रकला को सबसे प्राचीन कलाओं में से एक माना जाता है। प्राचीन काल में लोग गुफाओं में चित्रकारी करते थे, इसका समय काल 40000 वर्ष से भी अधिक माना जाता है। चित्रकला में कई माध्यम जैसे तेल, ऐक्रेलिक, जल रंग के साथ-साथ विभिन्न प्रकार के प्राकृतिक रंगों का भी प्रयोग किया जाता है। चित्रकला में कलाकार अपनी इच्छानुसार कला तकनीक और विषय का चयन करके अपनी कलाकृति का निर्माण करता है(Gombrich, 2006)।

2. मूर्तिकला :

मूर्तिकला एक त्रि-आयामी कला है| जिसे ठोस रूप में निर्मित किया जाता है| मूर्तिकला में कलाकार का माध्यम मिट्टी, प्लास्टर, मोम, लकड़ी, पत्थर आदि होता हैं|

मूर्तिकला का निर्माण या तो चुनी हुई कलाकृति को सीधे मिट्टी या पत्थर पर खरोंच कर किया जाता है, या किसी अन्य कागज, प्लास्टिक या अन्य प्रकार के वेस्ट सामग्री का उपयोग कर कलाकार अपने सुविधा के अनुसार चयन कर त्री आयामी कला का निर्माण करता है| (Asher, 1992)।

3. फोटोग्राफी :

फोटोग्राफी का आविष्कार 1889 - 1914 के मध्य में हुआ था। समकालीन कला या शिल्प कला के अलावा फोटोग्राफी को ललित कला का एक रूप माना जाता है। फोटोग्राफी के माध्यम से किसी भी प्राकृतिक अथवा अप्राकृतिक दृश्य को कैप्चर करके प्रदर्शित किया जाता है। आज के समय में यह कला का त्वरित रूप है| और यह समय समय बाधित नहीं है| कलाकार कही भी किसी भी समय फोटो क्लिक कर सकता है| क्लिक करते समय कलाकार के भाव उस फोटो में दिखाई देते हैं, किंतु कला को देखने वाले के भाव कलाकार से भिन्न हो सकते है| इसकी तकनीक रंग, ब्रश स्ट्रोक या सतह के अन्य रूपों का उपयोग करकेपेंटिंग जैसी गुणवत्ता वाली छवियों के साथ एक छवियाँ बनाती है। फोटोग्राफी में मुख्य रूप से प्रकाश को मोड़ने, बनावट बदलने और एक्सपोज़र जैसी कई अन्य तकनीकों का उपयोग करते है(Britannica, 2023)।

4. प्रिंटमेकिंग :

प्रिंटमेकिंग, मुद्रण बनाने की प्रक्रिया है, जिसमें किसी भी माध्यम जैसे कागज, चमड़ा या दीवार पर मुद्रण किया जाता है| तकनीकी रूप से, प्रिंटमेकिंग में कई अलग-अलग तरीकों का उपयोग किया जाता है, जिनमें वुडकट्स, उत्कीर्णन, स्क्रीन प्रिंटिंग, डिजिटल प्रिंटिंग, उत्कीर्णन आदि शामिल हैं। जिसका श्रेय ललित कला को जाता हैं(Eisner, 2002) |

5. वास्तुकला :

वास्तु कला भवन निर्माण के अंतर्गत आता है, यह एक उपयोगी कला है | जिसका मुख्य उद्देश्य मानव की मूलभूत आवश्यकता जैसे उनके रहने को और उनके कार्य क्षमता और सामाजिक संबंधों को स्थापित करने में अत्यधिक महत्वपूर्ण है | भवन निर्माण की कला प्राचीन काल से चली आ रही है। यह सामाजिक और प्राकृतिक परिस्थितियों के अनुसार बदलती रही है, और इसमें सदैव परिवर्तन होते रहे हैं। मनुष्य अपने रहने के स्थान को सौंदर्य की दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ बनाने का प्रयास करता हैं। जहाँ वह सौंदर्य बोध, शांति और संतुष्टि का अनुभव कर सके (NCERT, 2019)|

6. पेपर मैशी :

कागज रसायन विज्ञान की कला हैं, कागज को पानी में भिगोया जाता है और विभिन्न पदार्थों के साथ मिलाकर उसे मिट्टी जैसा बनाया जाता है। प्राप्त मिट्टी से विभिन्न प्रकार के खिलौने, विभिन्न डिजाइन बनाए जा सकते हैं, सजावटी वस्तुएं बनाई जा सकती हैं |इस कला को उपयोगी कला के रूप में इस्तेमाल किया जाता है (Lowenfeld & Brittain, 1987)।

7. डिजाइनिंग :

डिजाइनिंग के क्षेत्र में विभिन्न उपयोगी सम्मलित है, जैसे फैशन डिजाइनिंग, इंटीरियर डिजाइनिंग, ग्राफिक डिजाइनिंग, आर्किटेक्चर डिजाइनिंग, म्युनिकेटिव डिजाइनिंग आदि।(Arnheim, 1974)।

(iii) शिक्षा के क्षेत्र में दृश्य कला का महत्व

शैक्षिक जीवन में दृश्य कलाएँ केवल एक रचनात्मक क्रिया से कहीं अधिक हैं; ये भावनाओं, अवधारणाओं, विचारों और सोच को अभिव्यक्त करने का एक सशक्त माध्यम प्रदान करती हैं| जिसके माध्यम से छात्र अपने शैक्षिक अनुभवों को पूर्णतः प्राप्त कर सकते हैं। इन्हें शिक्षा में शामिल करने से न केवल रचनात्मकता बढ़ती है, बल्कि समस्या समाधान, दृश्य साक्षरता और अन्य महत्वपूर्ण कौशलों को भी बढ़ावा मिलता है(Eisner, 2002)।

दृश्य कलाएँ छात्रों को उनके शिक्षण जीवन में कई तरह से मदद करती हैं। उदाहरण के लिए, छात्र किसी भी विषय को अधिक गहराई से देख पाते हैं, उसका सूक्ष्मता से अवलोकन कर पाते हैं और एक नया दृष्टिकोण स्थापित कर पाते हैं। यह संपूर्ण रचनात्मक कार्य उन्हें नई सोच विकसित करने के लिए प्रोत्साहित करता है। शिक्षण के क्षेत्र में ये सभी कार्य और भी मूल्यवान हैं। इसके अलावा, दृश्य कलाएँ छात्रों के व्यक्तित्व का विकास करती हैं और उन्हें आत्मनिर्भर बनाती हैं। आज छात्रों को अपनी क्षमताओं को पहचानना होगा |ताकि वे भविष्य में उस क्षेत्र में पूरी तरह से काम कर सकें।

कुल मिलाकर, दृश्य कला एक अच्छी सहयोगी की तरह शिक्षण को सरल बनाने का प्रयास करती है| शिक्षा के एक महत्वपूर्ण घटक के रूप में कार्य करती है, जो छात्रों के संज्ञानात्मक और भावनात्मक विकास में महत्वपूर्ण योगदान देती है, इस

प्रकार उन्हें भविष्य की शैक्षणिक और जीवन की चुनौतियों के लिए तैयार करती है।(Winner et al., 2013)।

• छात्रों के शैक्षणिक जीवन में उनके प्रदर्शन को बढ़ाने में दृष्टि काल की भूमिका :

दृश्य कला छात्रों को अकादमिक प्रदर्शन करने के लिए प्रोत्साहित करती है। यह आवश्यक कौशल विकसित करके और उनके शैक्षणिक प्रदर्शन में सुधार करके छात्रों के शैक्षिक जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसमें विभिन्न गतिविधियाँ शामिल हैं जो किसी भी विषय को हल करने के लिए उनकी आलोचनात्मक सोच और समस्या समाधान तकनीकों को विकसित करती हैं। क्योंकि दृश्य कला के माध्यम से, छात्रों को विषय का अधिक से अधिक विश्लेषण और चर्चा करना सिखाया जाता है और उन्हें अपनी रचनात्मक सोच और योजनाओं को विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। दृश्य कला में चुनौतियों का सामना करना और उनका समाधान करना न केवल उनके बौद्धिक और राजनीतिक विकास को बढ़ावा देता है, बल्कि उनके शैक्षिक जीवन को भी बेहतर बनाता है(Eisner, 2002)।

2. प्रदर्शन कला

(i) परिचय -

मानव सभ्यता के विकास के साथ ही कला का जन्म हुआ और कला के विविध रूपों में प्रदर्शन कला (Performing Arts) का विशेष स्थान रहा है। संगीत, नृत्य, नाटक, अभिनय, लोक-नाट्य, कथा-वाचन और मूकाभिनय जैसी कलाएँ सीधे मंच या सार्वजनिक मंचन के माध्यम से दर्शकों तक अपनी संवेदनाएँ पहुँचाती हैं। प्रदर्शन कला केवल मनोरंजन भर नहीं है, बल्कि यह समाज का दर्पण है, जो मनुष्य की भावनाओं, संघर्षों, आशाओं और सांस्कृतिक विरासत को सजीव रूप में प्रस्तुत करती है। मानव जीवन में इसकी भूमिका भावनात्मक, शैक्षणिक, सामाजिक और सांस्कृतिक सभी क्षेत्रों में अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

प्रदर्शन कला का प्रारंभिक चरण 20वीं शताब्दी में शुरू हुआ। यह एक प्रयोग और प्रासंगिक कला का एक रूप है। इसका रूप हमें एक भविष्यसूचक दृष्टि प्रदान करता है। यह एक काल का वह रूप है, जिसमें कलाकार अपनी आत्म-संतुष्टि के साथ-साथ हर प्रत्यक्ष दर्शक की भाव अभिव्यक्ति से कलाकार उत्साहित और प्रसन्न होते हैं।

(ii) परिभाषा

इस शब्द की उत्पत्ति वर्ष 1960 में अमेरिका में हुई थी। इसका प्रयोग एक मंचीय कला के रूप में होता रहा है जिसमें सभी मंचीय कलाकार तात्कालिक और

वर्तमान समय में अपनी कला का प्रदर्शन करते हैं। इस कला की शुरुआत मध्यकाल में हुई थी, अगर हम इसे हिंदू पौराणिक कथाओं से जोड़कर देखें तो यह काफी प्राचीन कला है। लेकिन इसका नवीनीकरण हुआ है और कुछ नए बदलावों के साथ इस कला को भविष्य की कला के समान माना जाता है। 1970 के आसपास प्रदर्शन कला एक शैली के रूप में दुनिया के सामने उभरी। प्रदर्शन कला का अर्थ मंचीय कला से थोड़ा अलग माना जाने लगा। शुरुआत में इस कला को खरीदा या बेचा नहीं जा सकता था। लेकिन समय के साथ इस कला में अन्य तत्वों के समावेश से यह एक व्यावसायिक कला का रूप लेने लगी।

यदि प्रदर्शन कलाओं की तुलना दरबारी कला से की जाए, तो दरबारी कला की शुरुआत मौर्य काल में हुई। इस कला में चित्रकला, वास्तुकला और मूर्तिकला के साथ-साथ नृत्य और संगीत भी शामिल थे।उदाहरण के लिए, अकबर के दरबार में नवरत्नों का ज़िक्र है। यहाँ नवरत्न का अर्थ किसी पद, उपाधि या किसी महान संगीतकार से है, जैसे इतिहास में हमें महान संगीतज्ञ तानसेन, कुशल चित्रकार जसवंत और मीर सैयद अली का उल्लेख मिलता है, जिससे स्पष्ट होता है कि कला स्वयं एक विशाल सागर के समान है, जिसके मंथन से विभिन्न प्रकार के अमृत निकलते हैं, जो सदैव मानव कल्याण और संतुष्टि का कारण रहे हैं।

आजकल, फ्यूचरिस्ट और एलिमेंटल आर्ट ने पारंपरिक कला को चुनौती दी है और परफ़ॉर्मेंस का एक नया तरीका बनाया है जिसमें वे सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों को अपनी कला का मुख्य विषय बनाते हैं और सीधे आम दर्शकों को संबोधित करते हैं।

इस कला को इस तरह भी समझा जा सकता है कि भले ही परफॉर्मिंग आर्ट्स से मिलने वाला फ़ायदा फ़ाइन आर्ट्स जितना तय न हो, लेकिन परफॉर्मर के लिए कुछ हासिल करना पैसे से ज़्यादा ज़रूरी होता है।

प्रदर्शन कला में पेंटिंग या मूर्ति कला की तुलना में भौतिक वस्तुओं के त्वरित सुख पर अधिक बल दिया जाता रहा है |

1. सांस्कृतिक पहचान और परंपरा का संरक्षण

प्रदर्शन कला किसी भी समाज की सांस्कृतिक पहचान का मजबूत आधार होती है। भारत जैसे विविध संस्कृति वाले देश में कथकली, भरतनाट्यम, कथक, ओडिसी, कुचिपुड़ी जैसी शास्त्रीय नृत्य शैलियाँ और नौटंकी, भवई, यक्षगान, तमाशा जैसे लोक-

नाट्य आज भी हमारी परंपराओं को जीवंत बनाए हुए हैं। इन कलाओं के माध्यम से पौराणिक कथाएँ, ऐतिहासिक गाथाएँ और सामाजिक मूल्य पीढ़ी-दर-पीढ़ी आगे बढ़ते हैं। विश्व स्तर पर भी प्रदर्शन कलाएँ विभिन्न संस्कृतियों को जोड़ने का कार्य करती हैं। कला महोत्सव, नृत्य-संगीत विनिमय कार्यक्रम और रंगमंच उत्सव आपसी समझ और सांस्कृतिक सौहार्द को बढ़ाते हैं। इससे वैश्विक स्तर पर शांति और सहयोग की भावना विकसित होती है।(Winner et al., 2013)

2. भावनात्मक और मानसिक स्वास्थ्य में योगदान

प्रदर्शन कला का सबसे गहरा प्रभाव मनुष्य के मानसिक और भावनात्मक जीवन पर पड़ता है। संगीत सुनना या गाना तनाव कम करता है, नृत्य ऊर्जा और उत्साह प्रदान करती है, जबकि नाटक और अभिनय भावनाओं को व्यक्त करने का सशक्त माध्यम बनते हैं। अनेक लोग अपनी व्यथा, आनंद, निराशा या प्रेम को कला के माध्यम से अभिव्यक्त कर संतुष्टि का अनुभव करते है|

आधुनिक समय में म्यूजिक थेरेपी और ड्रामा थेरेपी जैसी पद्धतियाँ मानसिक रोगों, अवसाद और आत्म-विश्वास की कमी के उपचार में सफल सिद्ध हो रही हैं। पूर्व में किये शोध बताते हैं कि कला में भागीदारी आत्मविश्वास और जीवन संतुष्टि को बढ़ाती है तथा चिंता और तनाव को घटाती है (Winner et al., 2013)।

3. रचनात्मकता और कल्पनाशक्ति का विकास

प्रदर्शन कला मानव मस्तिष्क की रचनात्मक शक्ति को विकसित करती है। अभिनय करते समय नए पात्रों में ढलना, संगीत में नई धुनों की रचना करना या नृत्य में लय और भाव की खोज करना कल्पनाशक्ति को तीव्र करता है। बच्चों और युवाओं में कला का अभ्यास मौलिक सोच, समस्या-समाधान क्षमता और नवाचार को बढ़ावा देता है।

आज के प्रतिस्पर्धी युग में रचनात्मक सोच हर क्षेत्र -शिक्षा, विज्ञान, तकनीक और व्यापार में अत्यंत आवश्यक है, और इस क्षमता को सबसे अधिक आगे बढ़ाने और रचनात्मक करने का कार्य प्रदर्शन कला ही करती है।

4. संचार कौशल और सामाजिक विकास

नाटक, अभिनय और कथा-वाचन व्यक्ति के बोलने, शारीरिक मुद्रा और अभिव्यक्ति के कौशल को निखारते हैं। मंच पर प्रस्तुति आत्म-विश्वास बढ़ाती है और सार्वजनिक संवाद की क्षमता विकसित करती है।

साथ ही, प्रदर्शन कला सामूहिक गतिविधि है, जिसमें कलाकारों को एक-दूसरे के साथ तालमेल, सहयोग और समझ बनाकर कार्य करना होता है। इससे टीमवर्क, सहनशीलता और सहानुभूति का विकास होता है। ये सामाजिक गुण व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन दोनों में सहायक सिद्ध होते हैं।

5. शिक्षा क्षेत्र में प्रदर्शन कला

शिक्षा क्षेत्र में प्रदर्शन कला के प्रयोग से विद्यार्थियों की सीखने की रुचि बढ़ती है। उदाहरण के लिए बच्चे कठिन से कठिन इंग्लिश की कविता (poem) को मात्र विज़ुअली देखकर जल्दी ही सीख जाते है| गीतों के माध्यम से भाषा शिक्षण प्रभावशाली होता है, नाट्य-प्रदर्शन से इतिहास और सामाजिक अध्ययन सरल बनता है, जबकि नृत्य से शारीरिक समन्वय और लय बोध विकसित होता है। संगीत में गणितीय ताल और पैटर्न समझने की क्षमता को सुदृढ़ करता है।

Elliot Eisner (2002) के अनुसार, कला-आधारित शिक्षा छात्रों में भावनात्मक संवेदनशीलता, नैतिक चेतना और बहुआयामी बुद्धि का विकास करती है। ऐसे विद्यार्थी सामान्यतः अधिक आत्मविश्वासी, अनुशासित और रचनात्मक होते हैं।(Eisner, 2002)।

6. सामाजिक चेतना और नैतिक विकास

प्रदर्शन कला सदैव सामाजिक मुद्दों को उजागर करने का माध्यम रही है। सड़क नाटक, सामाजिक रंगमंच और लोक-प्रदर्शन बाल-विवाह, नशा, पर्यावरण संरक्षण, लैंगिक समानता दहेज और बाल शोषण जैसे विषयों पर आम लोगों के मध्य जागरूकता फैलाती हैं।

नाटक में पात्रों के संघर्ष देखकर दर्शक सहानुभूति अनुभव करते हैं और सामाजिक उत्तरदायित्व पर विचार करते हैं। यह नैतिक मूल्य-बोध को प्रोत्साहित करता है और समाज को संवेदनशील बनाता है।

7. आर्थिक और सामुदायिक योगदान

प्रदर्शन कला रोजगार के अनेक अवसर उत्पन्न करती है—कलाकार, संगीतकार, नृत्य निर्देशक, शिक्षक, मंच तकनीशियन आदि रूपों में। सांस्कृतिक पर्यटन, महोत्सव और थिएटर उद्योग स्थानीय अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाते हैं।

सामुदायिक कार्यक्रम आपसी सहयोग और एकजुटता बढ़ाते हैं। सामूहिक प्रस्तुतियाँ सामाजिक मेल-जोल को मज़बूत कर सामुदायिक जीवन को सजीव बनाती हैं।

8. आध्यात्मिक और मानवीय अनुभव

कई संस्कृतियों में प्रदर्शन कला का संबंध आध्यात्मिक साधना से जुड़ा है। भजन, कीर्तन, सूफी संगीत और शास्त्रीय नृत्य साधना के माध्यम हैं, जो आत्मिक शांति और ध्यान की अनुभूति प्रदान करते हैं।तथा संगीत सुनने मात्र से लोगो के मन मस्तिष्क को शांति का अनुभव होता है|

सामूहिक प्रदर्शन के दौरान कलाकार और दर्शक भावनात्मक रूप से एक-दूसरे से जुड़ जाते हैं, जिससे "मानवीय एकता" का अनुभव होता है।उदाहरण के लिए एक देशभक्ति गीत किसी भी वर्ग और समुदाय से जुड़े वयक्ति को एकता में बांधे रकने का प्रयास करते है|

मानव जीवन में प्रदर्शन कला का योगदान बहुआयामी है। यह सांस्कृतिक विरासत को संजोती है, भावनात्मक संतुलन प्रदान करती है, रचनात्मकता को बढ़ावा देती है, संचार कौशल सुदृढ़ करती है, शिक्षा को प्रभावशाली बनाती है तथा सामाजिक चेतना का विकास करती है। आधुनिक तकनीकी युग में भी प्रदर्शन कला मानवीय संवेदनाओं को जीवित रखकर समाज को सांस्कृतिक और भावनात्मक रूप से समृद्ध करती है। अतः, इसकी संरक्षण और संवर्धन की दिशा में निरंतर प्रयास आवश्यक हैं।
जब सभी कलाकार अपनी रचनात्मक कलाकृति के द्वारा अपनी स्वयं आध्यत्मिक मार्ग पर आगे बढ़ते रहते हैं, तो यह एक अंतरंग अनुभव बन जाता है। कला निर्माण सतकर्म करने जितना उपयोगी होता है |जहाँ उनके विचार ही उनके आत्मा की प्रेरणा का दर्पण होता है| केवल कलाकार को ही पता होता है, कि यह किस कला की उत्पत्ति किस उद्देश्य से कर रहा है| है कि यह वास्तविक है या उसकी कल्पना मात्र है।

चित्र 1.1 द आर्टिस्ट इज़ प्रेज़ेंट (2010) के प्रदर्शन के दौरान मरीना अब्रामोविक सौजन्य: डेज़्ड

मरीनाअब्रमोविक एक परफॉर्मेंस आर्टिस्ट हैं। मरीना ने परफॉर्मिंग आर्ट को सबसे ज़्यादा जिया है। उनका मानना है कि आर्टिस्ट हमेशा आज के पल में जीता है और उन्होंने अपनी इस कला का नाम रिदम 10 से 0 रखा है। उन्होंने अपनी कला की शुरुआत 1973 में की थी। उन्होंने अपने शरीर को परफॉर्मेंस आर्ट का मुख्य माध्यम बनाया। जब आप उनके काम को देखते हैं, तो उसमें उनकी भावनाएँ झलकती हैं। कुछ लोग नॉर्मल रहते हैं तो कुछ उत्तेजित होकर अपना सारा गुस्सा ज़ाहिर कर देते हैं। मरीना ने अपने पहले काम रिदम ज़ीरो (1974) में यह साबित कर दिया कि परफॉर्मेंस आर्ट के ज़रिए लोगों का तुरंत गुस्सा देखा जा सकता है (Abramović, 2010)।

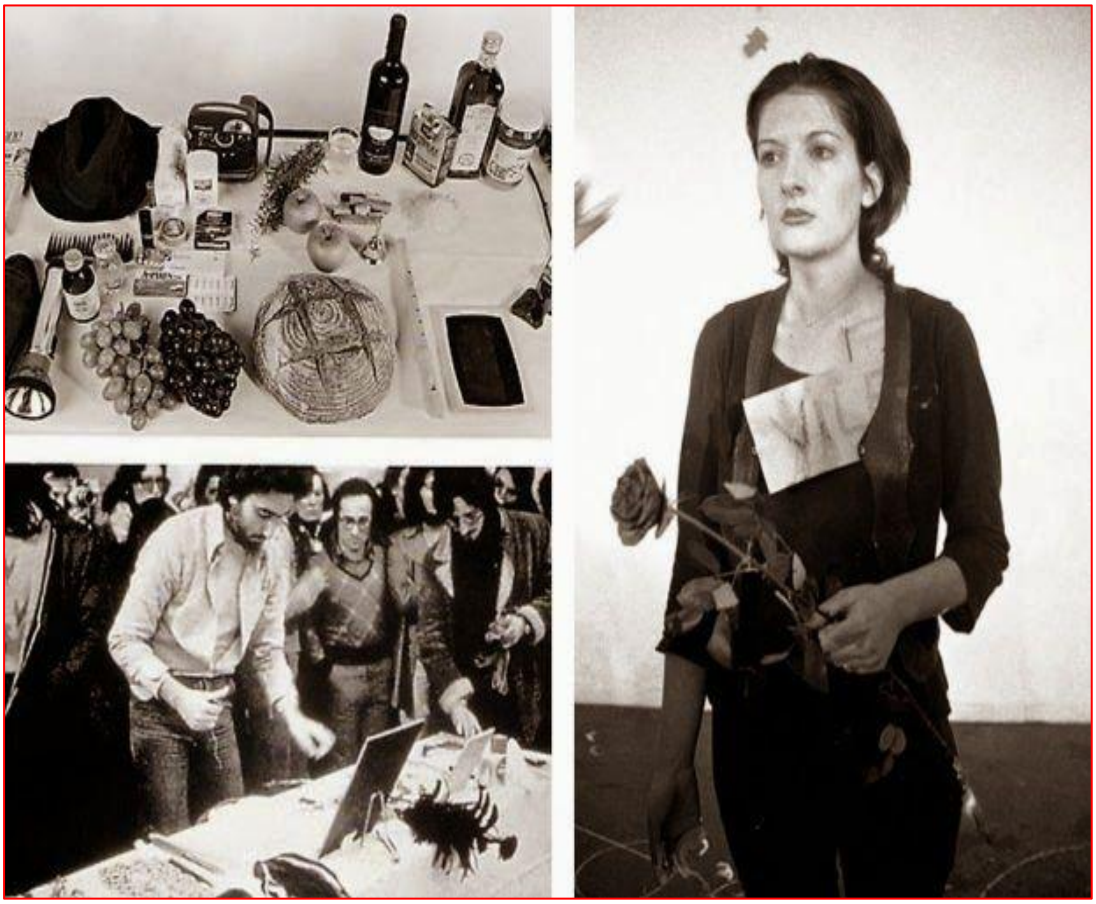

चित्र 1.2 मरीना अब्रामोविक. ताल 0. 1974

यहाँ दर्शन को प्रदर्शनी में रखी किसी भी चीज़ का इस्तेमाल करने को कहा गया था और दर्शकोंका रिएक्शन रियल टाइम में देखा गया था, जो काफ़ी परेशान करने वाला था।

• **दृश्य कला और प्रदर्शन कला के बीच मुख्य अंतर**

1. अभिव्यक्ति का माध्यम

सबसे बड़ा अंतर इस्तेमाल किए जाने वाले माध्यम में है। दृश्य कला रंग, आकार और बनावट जैसे दृश्य तत्वों पर निर्भर करती हैं। दूसरी ओर, प्रदर्शन कला अभिव्यक्ति के मुख्य साधन के रूप में गति, ध्वनि, भाषण और हाव-भाव का उपयोग करती हैं (गार्डनर, 2011)।

2. अनुभव की प्रकृति

दृश्य कला आम तौर पर स्थिर होती हैं। एक बार बनने के बाद, एक पेंटिंग या मूर्ति तब तक नहीं बदलती जब तक उसे भौतिक रूप में बदला न जाए। परफॉर्मिंग आर्ट्स गतिशील और क्षणभंगुर होती हैं; हर प्रदर्शन कला दर्शकों और माहौल के आधार पर थोड़ी अलग हो सकती है।

3. समय और टिकाऊपन

दृश्य कला कलाकृतियाँ स्थायी या लंबे समय तक चलने वाली होती हैं। संग्राहलय में संरक्षित किया जा सकता है। प्रदर्शन कला अस्थायी होती हैं, जो केवल प्रस्तुति के समय ही मौजूद रहती हैं, हालाँकि उन्हें डॉक्यूमेंटेशन के लिए रिकॉर्ड किया जा सकता है (विनर, गोल्डस्टीन, और विंसेंट-लैंक्रिन, 2013)।

4. दर्शकों की प्रतिक्रिया

दृश्य कला में, बातचीत अक्सर अप्रत्यक्ष होती है। दर्शक कलाकृति को व्यक्तिगत रूप से देखते और समझते हैं। परफॉर्मिंग आर्ट्स में, दर्शकों की प्रतिक्रिया—जैसे ताली, चुप्पी, या भावनात्मक प्रतिक्रिया—कलाकार और पूरे प्रदर्शन को प्रभावित कर सकती है।

5. कौशल और प्रशिक्षण

दृश्य कला अवलोकन, डिज़ाइन, फाइन मोटर क्रिया और स्थानिक सोच जैसे कौशलों पर ज़ोर देती हैं। प्रदर्शन कला के लिए शारीरिक समन्वय, आवाज़ पर नियंत्रण, समय, सहयोग और भावनात्मक अभिव्यक्ति जैसे कौशल की आवश्यकता होती है ((Hetland et al., 2007)।

(iii)शिक्षा की क्षेत्र में प्रदर्शन कला का महत्त्व

भूमिका

शिक्षा का उद्देश्य केवल तथ्यों का संचय कराना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास को बढ़ावा देना है। प्रदर्शन कला जैसे नृत्य, संगीत, नाटक, लोककला,

माइम, और कठपुतली शिक्षा को अनुभवात्मक, सृजनात्मक और आनंदमय बनाती हैं। आधुनिक शिक्षा पद्धति में प्रदर्शन कला को एक सहगामी विषय के रूप में शामिल किया जा रहा है, क्योंकि इससे संज्ञानात्मक, भावनात्मक, सामाजिक और शारीरिक विकास एक साथ संभव होता है।

भारत की सांस्कृतिक परंपरा में गुरुकुल व्यवस्था से ही नृत्य, संगीत और रंगमंच को शिक्षा के अनिवार्य अंग के रूप में देखा गया है। आज, बदलते सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश में प्रदर्शन कला न केवल कला कौशल का विकास करती है, बल्कि विद्यार्थियों को विषयगत ज्ञान प्राप्त करने में भी सहायता करती है।

1. बौद्धिक विकास पर प्रभाव

प्रदर्शन कला विद्यार्थियों के बौद्धिक कौशल को सुदृढ़ करती हैं। नाटक के माध्यम से संवाद बोलना, कथा निर्माण करना और पात्रों का विश्लेषण करना समीक्षात्मक सोच (Critical Thinking) को प्रोत्साहित करता है। संगीत में ताल और लय का अभ्यास ध्यान एवं स्मरण शक्ति को बढ़ाता है।

अध्ययनों से यह सिद्ध हुआ है कि जो विद्यार्थी नियमित रूप से संगीत या नाट्य गतिविधियों में भाग लेते हैं, उनकी एकाग्रता क्षमता दूसरों की तुलना में अधिक होती है। नृत्य में क्रमबद्ध आंदोलनों से समस्या समाधान क्षमता विकसित होती है, क्योंकि विद्यार्थी लय, समय-समन्वय और प्रस्तुति की योजना बनाना सीखते हैं।

2. भाषा शिक्षा में योगदान

दृश्य और प्रदर्शन कला भाषा अधिगम को प्रभावी बनाती हैं। नाटक और रोल-प्ले गतिविधियाँ विद्यार्थियों में सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने के कौशल को विकसित करती हैं। कहानी-चित्रण और दृश्य प्रस्तुति से शब्दावली बढ़ती है और अभिव्यक्ति में स्पष्टता आती है।

खुशबू कुमारी, बिहार के बांका ज़िले की एक टीचर हैं। वह हिंदी बहुत ही अलग तरीके से पढ़ाती हैं। विद्यार्थियों को उनका पढ़ाने का तरीका बहुत पसंद आता है और वे इसका आंनद लेते हैं। खुशबू अपने विद्यार्थियों को नृत्य के माध्यम से हिंदी भाषा मात्रा सिखाई जिसकी रील वायरल हो गई तथा उसकी सभी ने सरहना की |

लोककथाओं और नाट्य रूपांतरण के माध्यम से पाठ्य-पुस्तक का विषय जीवंत बन जाता है। इससे भाषा केवल पढ़ने-लिखने का विषय न रहकर जीवन अनुभव में परिवर्तित हो जाती है।

चित्र 1.3 गाने और डांस के साथ हिंदी 'मात्राएं' सिखाते हुए (फोटो: खुशबू आनंद/X)

नाटक के माध्यम से विद्यार्थी संवाद-लेखन, भाव-प्रदर्शन और कथावाचन में दक्ष होते हैं। चित्रों के आधार पर कहानी लिखना रचनात्मक लेखन को प्रोत्साहित करता है (Eisner, 2002)। संगीत और कविता से भाषा की लय, उच्चारण और भावनात्मक समझ विकसित होती है।नाटक और अभिनय भाषा विकास के अत्यंत प्रभावशाली साधन हैं। संवादों के अभ्यास से उच्चारण सुधार, शब्दावली वृद्धि तथा आत्म-अभिव्यक्ति क्षमता विकसित होती है। भूमिका-निर्वहन (Role Play) से विद्यार्थी भावों और विचारों को स्पष्ट रूप में व्यक्त करना सीखते हैं।

3. गणित और विज्ञान में सहायता

गणित को अक्सर कठिन विषय माना जाता है, किंतु कला के माध्यम से इसे रोचक और सरल बनाया जा सकता है। चित्रकला में आकृति, अनुपात, सममिति और मापन जैसे गणितीय सिद्धांत स्वाभाविक रूप से शामिल होते हैं। संगीत में ताल, लय और मात्रा गणितीय अवधारणाओं को स्पष्ट करती हैं।

नृत्य में पैटर्न, क्रम और समय-निर्धारण से गणितीय सोच विकसित होती है। शोध दर्शाते हैं कि कला-संयोजन से गणितीय समस्या-समाधान क्षमता में सुधार होता है (Winner et al., 2013) ।

गणित में डांस के द्वारा छोटे और बड़े अंको में अंतर आसानी से सिखाया जा सकता हैं | पूर्व में किय गए शोध परीक्षण के अनुसार | बच्चो के दो-दो के जोड़े बनाए गए | जिसमे बच्चो को संगीत के साथ थिरकना रहता हैं | संगीत बंद होने के बाद उनके सामने कुछ अंक रखे जाते है | जिसके अनुसार उनको खड़ा रहना पड़ता है | खड़े रहने का क्रम अंको के अनुसार रहता हैं| यदि अंक छोटे रहते है, तो बच्चो को थोड़ा झुक कर खड़े रहना होता है और यदि अंक बड़े रहते है, तो सीधे खड़े होना | इससे बच्चों को बड़े और छोटे अंक में अंतर आसानी से समझ आ जाता हैं|

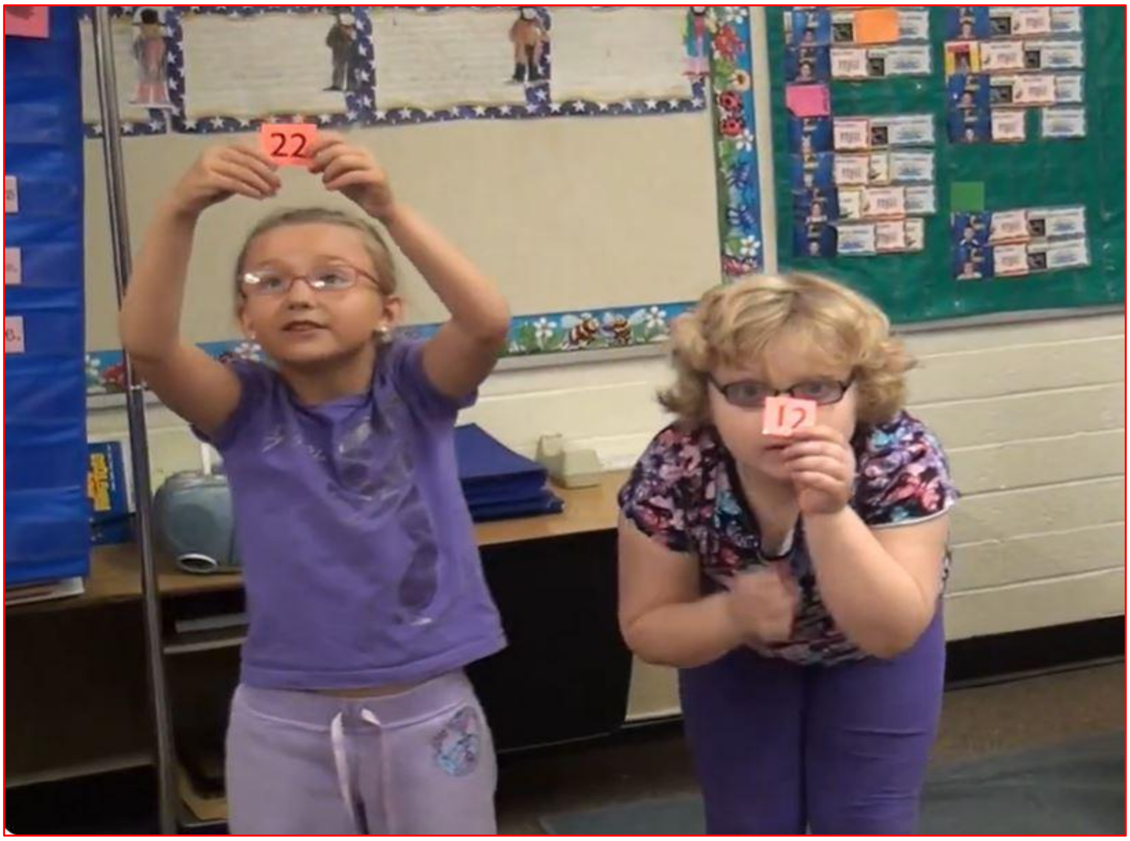

चित्र 1.4 पहली क्लास के छात्र डांस के ज़रिए गणित में बड़े तथा छोटे अंको में अंतर सीखते हुए । आर्ट्स इंटीग्रेशन मिनट - 25 सितंबर, 2012

यद्यपि गणित और विज्ञान को तार्किक विषय माना जाता है, प्रदर्शन कला इन विषयों को भी सरल और रोचक बना सकती हैं। संगीत में ताल-चक्र, मात्रा और गति गणितीय अनुपात व गणना कौशल को मज़बूत करते हैं। नृत्य में पैटर्न एवं क्रम गणितीय अवधारणाओं को मूर्त रूप देते हैं।

नाटक और माइम के माध्यम से वैज्ञानिक सिद्धांत—जैसे जल चक्र, गुरुत्वाकर्षण, प्रकाश का परावर्तन इत्यादि—को अभिनय द्वारा समझाना सरल हो जाता है। इससे अवधारणा स्पष्टता (Conceptual Clarity) बढ़ती है।

4. सामाजिक अध्ययन में भूमिका

प्रदर्शन कला इतिहास, भूगोल, संस्कृति एवं नागरिक शास्त्र जैसे विषयों को सजीव बना देती है। ऐतिहासिक नाटकों से विद्यार्थी स्वतंत्रता संग्राम, सामाजिक आंदोलनों और सांस्कृतिक परिवर्तनों को न केवल पढ़ते हैं, बल्कि मंच पर जीते हैं।

लोक नाट्य और नृत्य के अभ्यास से क्षेत्रीय संस्कृति, परंपराएँ और सामाजिक मूल्य समझ में आते हैं। इससे राष्ट्रीय एकता और सांस्कृतिक सम्मान की भावना सुदृढ़ होती है।

5. भावनात्मक एवं सामाजिक विकास

प्रदर्शन कला आत्म-विश्वास को बढ़ाती हैं। मंच पर प्रस्तुति देना भय और झिझक को कम करता है। समूह नृत्य और नाटक सहयोग की भावना सिखाते हैं। विद्यार्थी परस्पर संवाद, सहनशीलता और नेतृत्व कौशल सीखते हैं।

भावनात्मक अभिव्यक्ति के माध्यम से तनाव कम होता है और आत्म-संतुलन विकसित होता है। संगीत और नृत्य को थैरेपी (Art Therapy) के रूप में भी अपनाया जाता है।शिक्षा में हम बच्चों के भावनात्मक विकास या रचनात्मक विचारों को नजरअंदाज नहीं कर सकते। क्योंकि यह उनके विकास का महत्वपूर्ण हिस्सा है। पिछली रिसर्च से पता चला है कि जो बच्चे परफॉर्मिंग आर्ट्स में हिस्सा लेते हैं, वे सामाजिक तौर पर खुद को बेहतर तरीके से एक्सप्रेस कर पाते हैं और ज़्यादा आत्मविश्वासी होते हैं।

कला शिक्षा के माध्यम से बच्चों में एकाग्रता को अधिक से अधिक विकसित किया जा सकता है तथा उन्हें तनाव से लड़ने की रणनीति बनाने में अधिक से अधिक सहायता मिलती है| कला शिक्षा के माध्यम से बच्चों में एकाग्रता को अधिक से अधिक विकसित किया जा सकता है तथा उन्हें तनाव से लड़ने की रणनीति बनाने में अधिक से अधिक सहायता मिलती है| भविष्य में आने वाले किसी भी समस्या का समाधान वह पूर्व में ही अपने मस्तिष्क में हल करने की पूर्ण कोशिश करते हैं|

6. शारीरिक स्वास्थ्य में योगदान

नृत्य और रंगमंचीय अभ्यास शरीर को चुस्त-दुरुस्त रखते हैं। लचीलापन, संतुलन और गतिशीलता में सुधार होता है। नियमित मंच अभ्यास बच्चों में मोटापे की समस्या को कम करने में सहायक सिद्ध होता है।

7. सृजनात्मकता और नवाचार

प्रदर्शन कला कल्पनाशीलता को प्रोत्साहित करती हैं। विद्यार्थी अपने विचारों को नए रूप में प्रस्तुत करना सीखते हैं। कहानी लेखन, संवाद रचना और कोरियोग्राफी से रचनात्मक सोच विकसित होती है जो भविष्य में नवाचार और समस्या समाधान में उपयोगी होती है।

8. आधुनिक शिक्षा में प्रदर्शन कला

नई शिक्षा नीति (NEP 2020) में कला-आधारित शिक्षा पर विशेष बल दिया गया है। समग्र विकास हेतु विषयों को कला गतिविधियों से जोड़ने की सिफारिश की गई है। डिजिटल माध्यमों ने भी नाटक और संगीत को वैश्विक मंच प्रदान किया है।

आधुनिक कक्षाओं में बच्चो को स्मार्ट बोर्ड से पढ़ाया जाता हैं | कहानी और संगीत के माध्यम से कक्षा का वातावरण हल्का तथा शांत बनने में काफी सहायता मिलती हैं | कक्षा में किये हुए कार्य को सिस्टम में सेव किया जा सकता है | जिससे जो बच्चे कार्य करने में पीछे रह जाते हैं, उनके लिए ब्लैकबोर्ड के कार्य को आसानी से स्क्रोल कर सकते है |

निष्कर्ष

प्रदर्शन कला शिक्षा को आनंदमय, संवेदनशील और प्रभावी बनाती हैं। ये न केवल भाषा, गणित, विज्ञान और सामाजिक अध्ययन में सहायक हैं, बल्कि विद्यार्थियों के आत्मविश्वास, रचनात्मकता और भावनात्मक संतुलन का विकास भी करती हैं।

आज आवश्यकता है कि विद्यालयों में प्रदर्शन कला को केवल सह-पाठ्य गतिविधि न मानकर, मुख्य धारा की शिक्षा प्रक्रिया का अभिन्न अंग बनाया जाए, जिससे शिक्षा सही मायनों में समग्र और जीवनोपयोगी बन सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. Arnheim, R. (1974). Art and visual perception: A psychology of the creative eye. University of California Press.
2. Asher, C. B. (1992). Architecture of Mughal India. Cambridge University Press.
3. Bhartrihari. (2014). Nītiśatakam (English trans.). Motilal Banarsidass.
4. Britannica. (2023). Visual arts. Encyclopaedia Britannica.
5. Dewey, J. (1934). Art as experience. Perigee Books.
6. Eisner, E. W. (2002). The arts and the creation of mind. Yale University Press.
7. Gardiner, M. F., Fox, A., Knowles, F., & Jeffrey, D. (1996). Learning improved by arts training. Nature, 381(6580), 284.
8. Gardner, H. (2011). Frames of mind: The theory of multiple intelligences. Basic Books.
9. Gombrich, E. H. (2006). The story of art. Phaidon Press.
10. Hetland, L., Winner, E., Veenema, S., & Sheridan, K. (2007). Studio thinking: The real benefits of visual arts education. Teachers College Press.
11. https://www.aajtak.in/education/news/story/bihar-teacher-khushboo-again-famous-on-social-media-with-her-unique-teaching-style-video-2007341-2024-08-11
12. https://www.indiatoday.in/trending-news/story/bihar-teacher-hindi-matra-song-and-dance-teaching-method-viral-video-2581385-2024-08-13
13. https://www.oakridge.in/blogs/how-performing-arts-develop-childs-personal-development/
14. https://www.youtube.com/watch?v=-jwG5NaieWE
15. https://www.matttommeymentoring.com/blog/considering-art-as-spiritual-experience-hobby-and-vocation/
16. Levy, F. J. (2005). Dance movement therapy: A healing art. American Alliance for Health, Physical Education, Recreation and Dance.
17. Lowenfeld, V., & Brittain, W. L. (1987). Creative and mental growth. Macmillan.
18. McCarthy, K. F., Ondaatje, E. H., Zakaras, L., & Brooks, A. (2004). Gifts of the muse: Reframing the debate about the benefits of the arts. RAND Corporation.
19. National Education Policy. (2020). Ministry of Education, Government of India.
20. NCERT. (2019). Art education: Upper primary stage. National Council of Educational Research and Training.
21. NCERT. (2020). Visual and performing arts curriculum. NCERT.

22. Rabkin, N., & Redmond, R. (2006). The arts make a difference. Educational Leadership, 63(5), 60–64.
23. UNESCO. (2006). Road map for arts education. UNESCO.
24. Vygotsky, L. S. (1978). Mind in society: The development of higher psychological processes. Harvard University Press.
25. Winner, E., Goldstein, T. R., & Vincent-Lancrin, S. (2013). Art for art's sake? OECD Publishing.

द्वितीय अध्याय

दृश्य और प्रदर्शन कला का अन्य विषयो पर प्रभाव

द्वितीय अध्याय

दृश्य और प्रदर्शन कला का अन्य विषयो पर प्रभाव

1. प्रस्तावना

सीखना दिल और हाथों के सामंजस्य से शुरू होता है, जब दिमाग परफॉर्मर के साथ जुड़ता है। और यह जन्म से ही होता है। जब बच्चा देखना शुरू करता है और अपने आस-पास की हर चीज़ को कॉपी करने की कोशिश करता है तो वह माहौल से सीखता है। कोई भी उनको मातृभाषा नहीं सिखाता, वे खुद ही सीखते हैं। लेकिन समय के साथ शिक्षा कठिन होती जा रही है। छोटे बच्चों के लिए पढ़ाई मुश्किल हो जाती है, तो यह समय है कि पढ़ाई के साथ हर तरह की क्रिएटिव चीज़ें मिलाई जाएं ताकि वे आसानी से किसी भी तथ्य को समझ सकते हैं और साथ हीअपने शारीरिक और मानसिक विकास कर सकें। दृश्य कला और परफ़ॉर्मिंग आर्ट्स का हर सब्जेक्ट पर अलग-अलग असर होता है। सामाजिक विज्ञान के लिए, इतिहास को आसान बनाने के लिए यह एक वन-एक्ट प्ले हो सकता है। दृश्य कला और प्रदर्शन कला का हर सब्जेक्ट पर अलग-अलग असर होता है (NCERT, 2005)।

दृश्य कला और प्रदर्शन कलाएँ: भाषा, गणित, सामाजिक अध्ययन और विज्ञान में उनका महत्व

दृश्य कला (Visual Arts) और प्रदर्शन कलाएँ (Performing Arts) मानव संस्कृति, रचनात्मकता और अभिव्यक्ति के मूल में स्थित हैं। सामान्यतः इन्हें केवल कलात्मक अभिव्यक्ति के साधन के रूप में देखा जाता है, परंतु शिक्षा के संदर्भ में इनका महत्व इससे कहीं अधिक व्यापक है।

पूर्व में किये अनुसंधान दर्शाता है कि कला गतिविधियाँ न केवल विद्यार्थियों की रचनात्मक क्षमता को बढ़ाती हैं, बल्कि भाषा, गणित, सामाजिक अध्ययन और विज्ञान जैसे शैक्षणिक विषयों में भी सीखने की प्रक्रिया को समृद्ध करती हैं। दृश्य कला और प्रदर्शन कलाएँ इन विषयों में प्रभावशाली भूमिका निभाती हैं।(Eisner, 2002; Hetland et al., 2007)।

पूर्व में किय शोध के आधार पर साफ प्रदर्शित होता हैं, कि इंद्रियां ज्ञान हमारे के दरवाज़े हैं, और ज्ञान इंद्रियों के ज़रिए ही मिलता है। जब कोई नई तरह की जानकारी सीखते समय जितनी ज़्यादा इंद्रियों का इस्तेमाल किया जाता है, वह जानकारी उतनी ही पक्की हो जाती है (Bamford, 2006)।

चीनी (Chinese) कहावत के अनुसार,

"जो बात मैं सुनता हूँ, उसे मैं भूल सकता हूँ; जो बात मैं देखता हूँ, उसे मैं याद रख सकता हूँ; जो काम मैं करता हूँ, उसे मैं भूल नहीं सकता।"

" The thing which I hear, I may forget the thing which I see, I may remember; the thing which I do, I can not forget."

1. "दृश्य श्रव्य सामग्री ऐसी सामग्री है, जो कक्षा कक्ष में या अन्य शिक्षण परिस्थितियोंमें लिखित या बोली जाने वाली पाठ्य-सामग्री को समझाने में लाभ पहुँचाती है।"

(Audio-visual aids means that complete material, which helps to understand the writtin or oral subject matterin class-room or in other teaching situations.)

डैण्ट, ई०सी० (Daint, E.C.)

2 "दृश्य श्रव्य सामग्री, वह संवेदीय पदार्थ या काल्पनिक वस्तुएँ हैं, जो अधिगम को प्रारम्भ एवं प्रेरित करती हैं तथा उसे पुनर्बलन प्रदान करती हैं।"

(Audio visual aids are those sensory objectsor images which initiate, stimulate and reinforce leatning.) - **बार्टन (Burton)**

3. "दृश्य श्रव्य सामग्री वे युक्तियाँ हैं जिनके प्रयोग से विभिन्न प्रकार के शिक्षणों व प्रशिक्षणों, स्थितियों में व्यक्तियों एवं समूहों को विचारों के संचार में सहायता मिलती है। इन्हें बहु-संवेदनशीलसामग्री के रूप में जाना जाता है।"

(Audio-visual Aids are those devices by the use of which communication ides between persons and groups in various teaching and training situations is helped. There are also termed al multi-sensory materials.) **- एडगल डेल (Edger Dale)**

I. भाषा- शिक्षण में दृश्य एवं प्रदर्शन कलाओं का महत्व

भाषा का ज्ञान जन्म से पूर्व मां के गर्भ से शुरू हो जाता है तथा जन्म के पश्चात जब वह अपनी दृष्टि से वातावरण का आकलन करता है और अपनी ज्ञानेंद्रिय के आधार पर व भाषा का ज्ञान स्वतः ही प्राप्त कर लेता है यहां वह आगे चलकर भाषा की विषमताओं को अपनी गुणवत्ता के आधार पर सरल करता है इसे अधिक सुगम बनाने का कार्य कला करती है।

भाषा शिक्षण में कला अत्यंत सहायक भूमिका निभाती है। चित्रकला, पोस्टर निर्माण, कहानी चित्रण, नाटक व कविता-पाठ जैसे क्रियाकलाप शब्दावली वृद्धि तथा अभिव्यक्ति कौशल को सशक्त बनाते हैं (Eisner, 2002)।

दृश्य कला बच्चों को दृश्य संकेतों के माध्यम से शब्दों का अर्थ समझने में मदद करती है। जैसे, किसी कहानी को चित्रों के माध्यम से प्रस्तुत करने से छात्रों की कल्पनाशीलता एवं वर्णन क्षमता बढ़ती है।अपनी कल्पनाओं को शब्द स्वरूप देकर वह अपने विचारों को अभिव्यक्त करते हैं, छोटी आयु में बच्चे अधिक से अधिक जटिल भाषा को भी बड़ी सरलता से ग्रहण कर लेते हैं। नाटक और मंचन संवाद लेखन, उच्चारण, भावाभिव्यक्ति तथा शारीरिक भाषा (body language) को विकसित करते हैं (Winner et al., 2013)।

90 के दशक में बच्चों को कॉमिक बुक पढ़ना आसानी से चित्रों के माध्यम से नए शब्दों से अवगत हो जाते हैं और आज के समय में बच्चे मोबाइल फोन आदि के माध्यम से विजुलाइज होकर नए शब्दों को उन्हें भाषाओं के ज्ञान बड़ी आसानी से सीख जाते है। संगीत के माध्यम से कविता पाठ, लयबद्ध मंत्र या गीत बच्चों की स्मरण शक्ति बढ़ाते हैं।

विदेशी भाषा शिक्षण में भी गीत, नाटक और रोल-प्ले विधियाँ अत्यंत सफल सिद्ध हुई हैं। कला भाषा को केवल पाठ्यपुस्तक तक सीमित न रखकर एक जीवंत संवाद प्रक्रिया बना देती है (Bamford, 2006)।

भाषा केवल शब्दों का संग्रह नहीं, बल्कि भावनाओं, विचारों और अनुभवों की अभिव्यक्ति है। कला, विशेषकर नाटक, चित्रकला, कहानी-चित्र (storyboards), काव्य-नृत्य और संगीत, भाषा सीखने के स्वाभाविक माध्यम बन जाते हैं प्रारंभिक शिक्षा में भी बच्चों को चित्र आधारित किताबें उपलब्ध करवाई जाती है, जिससे वह अधिक से अधिक आकर्षित होकर शब्द ज्ञान हासिल कर सकें (Bailey, 1993)।

पूर्व में किय शोध के आधार पर साफ प्रदर्शित होता हैं, कि इंद्रियां ज्ञान के दरवाज़े हैं, और ज्ञान इंद्रियों के ज़रिए ही मिलता है। जब कोई नई तरह की जानकारी सीखते समय जितनी ज़्यादा इंद्रियों का इस्तेमाल किया जाता है, वह जानकारी उतनी ही पक्की हो जाती हैं (Eisner, 2002)।

बच्चे पहली बार जब बात करना शुरू करते तो, नई नई चीज़ो की देखकर बहुत सारे प्रश्न पूछते है। जहां से उनकी नज़र जाती बच्चे बेझिझक पूछ पड़ते यह क्या है। जब घर के बड़े लोग उसे विस्तार में समझते तो बात करने का तरीका और

लहजा को ठीक उसी तरह अनुसरण करने का प्रयत्न करते। यहाँ द्रश्य कला भाषा सीखने में सहभागी का काम करता है।

पुरापाषाण काल में भी संवाद स्थापित करने का माध्यम चित्रकला (द्रश्य कला) का ही था। उम्मीद की जाती रही हैं। आजे चलकर यही चित्रण भाषा विकास का माध्यम रहा होगा।

चित्र 2.1 भीमबेटा गुफा चित्रकला

पूर्व पाषाण कल में चित्रकला संवाद साधने का एक मात्र माध्य्म था। आज भी A,B,C हो या अन्य अ,आ,इ,ई बच्चो चित्र माध्यम से बच्चो को सिखाई जाती है। अपने विचारों को कला के माध्यम से शब्दों में पिरोना सीख लेते हैं।

1. अभिव्यक्ति और संप्रेषण कौशल

नाटक और भूमिका-निर्वाह विद्यार्थियों को भाषा का प्रयोग व्यवहारिक संदर्भों में करने का अवसर देते हैं। संवाद बोलने, स्वरापात, उच्चारण और आत्मविश्वास में वृद्धि होती है। दृश्य कलाएँ–जैसे पोस्टर, कार्टून या चित्र–विचारों को शब्दों में बदलने में सहायता करती हैं, जिससे वर्णनात्मक और रचनात्मक लेखन बेहतर होता है।

2. चित्रों के माध्यम से शब्दावली विस्तार

कला गतिविधियों से भाषा-समझ (Comprehension) मजबूत होती है। उदाहरण के लिए, एक चित्र का वर्णन करते समय विद्यार्थी नए शब्दों का प्रयोग करते हैं और अपनी व्याख्या क्षमता को विकसित करते हैं। कहानी के आधार पर चित्र

बनाने या चित्र देखकर कहानी बनाने से कल्पनाशक्ति और शब्दों का चयन दोनों बेहतर होते हैं।

चित्र 2.2 परिवार का चित्र **चित्र 2.3 कहानी चित्रण**

उदाहरण के लिए उक्त चित्र 2.2 में एक परिवार को प्रदर्शित किया गया हैं, उसके अनुसार विद्यार्थियों को निर्देश दिया जा सकता है, की एक सकारात्मक कहानी लिखे और एक नकारात्मक कहानी लिखे। सकारात्मक कहानी कुछ इस तरह भी हो सकती है, की एक परिवार में तीन बच्चे खुशी- ख़ुशी रहते थे। उनके माता-पिता उनकी अच्छे से देखभाल करता है। नकारात्मक कहानी में चित्र अनुसार यह दर्शाया जा सकता है की एक परिवार में तीन बच्चे थे उनमें से एक गोद ली हुई थी । माँ जितना प्यार करती थी, उतना पिता नहीं करते थे। इस तरह से विद्यार्थियों को मन की बात लिखना आ जाता है।

चित्र 2.3 मे दर्शाए हुए चित्र के अनुसार बच्चों को कई बार अपने मन अनुसार किंतु क्रम अनुसार कहानी लिखने को कहा जाता है जिससे वह अपनी कल्पना के आधार पर कहानी की रचना करते हैं, यहां पर कला की महत्ता को देखा जा सकता हैं।

3. बहुभाषिक दक्षता

संगीत और कविता की लय बच्चों को भाषा की ध्वन्यात्मक संरचना (Phonological Awareness) समझने में मदद करती है, जो पढ़ने-लिखने की

क्षमता की नींव है। इसी कारण प्रारंभिक शिक्षा में कविता, तुकांत और संगीत प्रमुख भूमिका निभाते हैं।

II. गणित-शिक्षण में दृश्य एवं प्रदर्शन कलाओं का योगदान

गणित को अक्सर कठिन और उबाऊ विषय माना जाता है, किंतु कला इसके प्रति दृष्टिकोण को सकारात्मक बनाती है। चित्रकला में आकृतियाँ, सममिति (symmetry), पैटर्न, माप और अनुपात जैसे गणितीय विचार सहज रूप से समाहित होते हैं।

गांव की अनपढ़ महिलाएं ज्यामिति कलाकृतियों जिनका धार्मिक महत्व काफी है वह काफी सरलता से अपने घर व आंगन में उनका निर्माण कर लेती है, इसी प्रकार बच्चे भी प्रारंभिक चित्रकला में गणितीय कलाकृति को सम्मिलित कर कुछ रेखाओं के माध्यम से मानव आकृति का निर्माण करते हैं। गणित कला और कला संगम शुरू से ही रहा है।

नृत्य में तालबद्धता, गिनती, समय मापन और क्रम-बोध विकसित होता है। संगीत में लय और मात्रा बच्चों को संख्याओं की समझ सरल रूप से कराती है। रंगों और आकृतियों के प्रयोग से भिन्न, प्रतिशत एवं ज्यामितीय अवधारणाएँ दृश्यात्मक रूप में समझी जा सकती हैं।

हस्तकला गतिविधियों में मापन, लंबाई-चौड़ाई का अनुमान, तथा आकृतियों की रचना छात्रों के व्यावहारिक गणित कौशल को प्रोत्साहित करती है। इस प्रकार कला गणित को अमूर्त न रहकर अनुभवजन्य और प्रयोगात्मक बनाती है।

बहुतों को गणित अमूर्त और कठिन विषय लगता है। कला इसे सहज, अनुभवात्मक और आनंदपूर्ण बना सकती है।

1. ज्यामिति और पैटर्न

दृश्य कला–जैसे डिज़ाइन, मंडला, कोलाज, ओरिगामी–गणितीय अवधारणाओं को प्रत्यक्ष रूप में प्रस्तुत करती है। आकार (Shapes), सममिति (Symmetry), संतुलन (Balance), अनुपात (Proportion) और पैटर्न को (Patterns विद्यार्थी अभ्यास के माध्यम से समझते हैं।) उदाहरण: एक मंडला में वृत्त, त्रिभुज और सममिति गणितीय रूप से विश्लेषित किए जा सकते हैं।

चित्र 2.4 ओडिशा के पुरी में स्थित कोणार्क सूर्य मंदिर

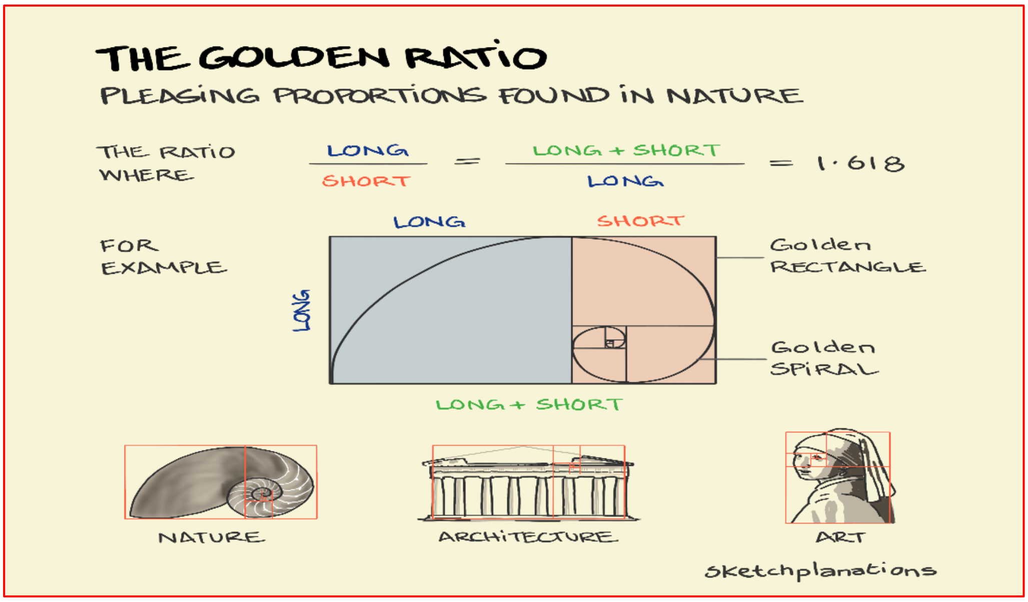

चित्र 2.5 गणितय गोल्डन रेशों

चित्र 2.4 ओडिशा के पुरी में स्थित कोणार्क के अनुसार सूर्य मंदिर यह मंदिर एक गणितीय अनुपात का एक उत्कृष्ट नमूना है जिसमें हम रात के 24 पहिए देखते हैं जो वर्ष के 12 महीना को प्रदर्शित करता हैं तथा प्रत्येक पहिया में घड़ी से सामान तीलियां बनी हुई हैं। जो समय की हर पहर को प्रदर्शित करती है।

चित्र 2.5 के अनुसार कला को परखने का गणितय गोल्डन रेशों प्राचीन समय से ही काम में लिया जाता रहा है। गोल्डन रेशों का उपयोग किसी भी वस्तु या व्यक्ति विशेष की सुंदरता परख़ने के लिए किया जाता रहा है।

किसी भी नई कला की उत्पत्ति या रचना हेतु सर्वप्रथम गोल्डन रेशों के नियमों का ही पालन किया जाता है । चित्र का तथा वैज्ञानिक लिओनार्दो दा विंची ने भी इस गोल्डन रेशों का भरपूर उपयोग अपनी कलात्मक प्रयोगशाला में किया तथा मानव शरीर की संरचना प्राकृतिक वस्तुएं आदि की सरंचना इसी के अंतर्गत की।

300 ईसा पूर्व से गणित और ज्यामितीय यूनानी ग्रन्थ "एलीमेट्स" में इसका उल्लेख किया गया। इसके बाद 1509 में, इतालवी गणितज्ञ लूका पैसिओली ने ' दी डिवाइन प्रोपोर्शन' नामक पुस्तक नामक पुस्तक में भी लिओनार्दो दी विंची का उल्लेख किया गया।

2. नृत्य और गणना

म्यूज़िक और डांस में बहुत से लोगों मास्टर्स होते हैं, अपने टैलेंट के साथ अपनी गणितीय स्किल्स को भी जोड़ते है । और वे इसका इस्तेमाल म्यूज़िक में बीट्स और काउंट्स के ज़रिए एक्शन को मार्क करने के लिए करते हैं, लेकिन हम डांस और म्यूज़िक के ज़रिए गहरे गणितीय तरीके को शायद ही समझ पाएं, लेकिन जो लोग इसमें मास्टर्स करते हैं, वे दोनों को मिला सकते हैं और उससे कमाल की आर्ट क्रिएशन बनाते हैं।

नृत्य (Dance) में ताल, लय (Rhythm), क्रम (Sequence) और गिनती शामिल होती है। यह विद्यार्थियों को संख्याओं के पैटर्न, गुणनखंडों तथा बीट्स की गणना समझने में सहायता करता है। नृत्य की संरचना एक प्रकार का एल्गोरिदम (Algorithm) भी होती है, जिसमें चरणों का क्रम तय रहता है।

प्राइमरी कक्षा में बच्चों को नए तरीके से गणित में गणना सीखने में संगीत काफी मदद करता है, कविता के माध्यम जिसमें पैटर्न को याद रखने से दिमाग की क्षमता तेज होती है, याददाश्त बढ़ती है । और दिए गए समय में सवाल को हल करने से उनका टाइम मैनेजमेंट बढ़ाता है। यदि यही कार्य संगीत की मधुरता के साथ होता है। तो बच्चों बिना तनाव के प्रसंन्नता के साथ वह काम कर करते है ।

3. समस्या-समाधान क्षमता

कला-आधारित गणितीय गतिविधियाँ रचनात्मक समस्या-समाधान (Creative Problem Solving) को बढ़ावा देती हैं। जब बच्चे कोई मॉडल बनाते हैं या कला-प्रोजेक्ट तैयार करते हैं, तो उन्हें सटीक माप, अनुमान और योजनाबद्ध सोच की आवश्यकता होती है, जो गणित के लिए महत्वपूर्ण कौशल हैं।

III सामाजिक अध्ययन में कला की भूमिका

कला समाज की भावनाओं, विचारों, कामों और मूल्यों को व्यक्त करती है, साथ ही दुनिया की भलाई का भी लक्ष्य रखती है। कला समाज की वजह से ही मौजूद है। जैसे-जैसे सामाजिक विकास की स्थितियाँ बदली हैं, वैसे-वैसे प्रचलित सामाजिक विचारधाराएँ भी उसी हिसाब से बदली हैं, और कला सामाजिक विकास और सामाजिक आंदोलनों के हर चरण से जुड़ी रही है।

कला समाज का प्रतिबिंब है। विकास और पतन सभी कुछ उस देश की कला विकास के साथ प्रदर्शित होता है। उस देश के स्थापत्य कला से वहां के वैभव का ज्ञान और विभिन्न कलाकृति के विभिन्न समय काल को प्रदर्शित करती है। सामाजिक अध्ययन में इतिहास, भूगोल, संस्कृति व नागरिक शास्त्र शामिल हैं। कला इन विषयों को जीवंत एवं भावनात्मक रूप से प्रभावशाली बनाती है।

नाटक के माध्यम से ऐतिहासिक घटनाओं का सजीव मंचन छात्रों को केवल तिथियाँ याद न कराकर ऐतिहासिक व्यक्तित्वों की भावना एवं संघर्ष को अनुभव कराता है। लोकनृत्य और लोकगीत क्षेत्रीय संस्कृति, परंपरा और जीवनशैली का गहन परिचय देते हैं।

मानचित्र-चित्रण, पोस्टर निर्माण, मॉडल मेकिंग जैसे कला कार्य भूगोल की अवधारणाओं को सरल करते हैं। विभिन्न पर्व-त्योहारों पर आधारित नृत्य, वेशभूषा अथवा शिल्प कार्य सामाजिक समरसता और सांस्कृतिक विविधता के प्रति सम्मान सिखाते हैं।

कला सामाजिक अध्ययन को पुस्तकीय ज्ञान से आगे बढ़ाकर अनुभवपरक शिक्षा में बदल देती है।सामाजिक अध्ययन (Social Studies) मानव समाज, इतिहास, संस्कृति और भूगोल का अध्ययन है। दृश्य और प्रदर्शन कलाएँ इन विषयों को जीवंत बना देती हैं।

1. सांस्कृतिक समझ

लोकनृत्य, लोकगीत, पारंपरिक कला, मूर्तिकला और चित्रकला किसी समाज की पहचान और इतिहास को प्रतिबिंबित करती हैं। जब विद्यार्थी इन कलाओं का अध्ययन और अभ्यास करते हैं, तो वे विभिन्न संस्कृतियों और समुदायों को बेहतर समझते हैं। यह सहिष्णुता, विविधता और सामाजिक समावेशन को बढ़ावा देता है।

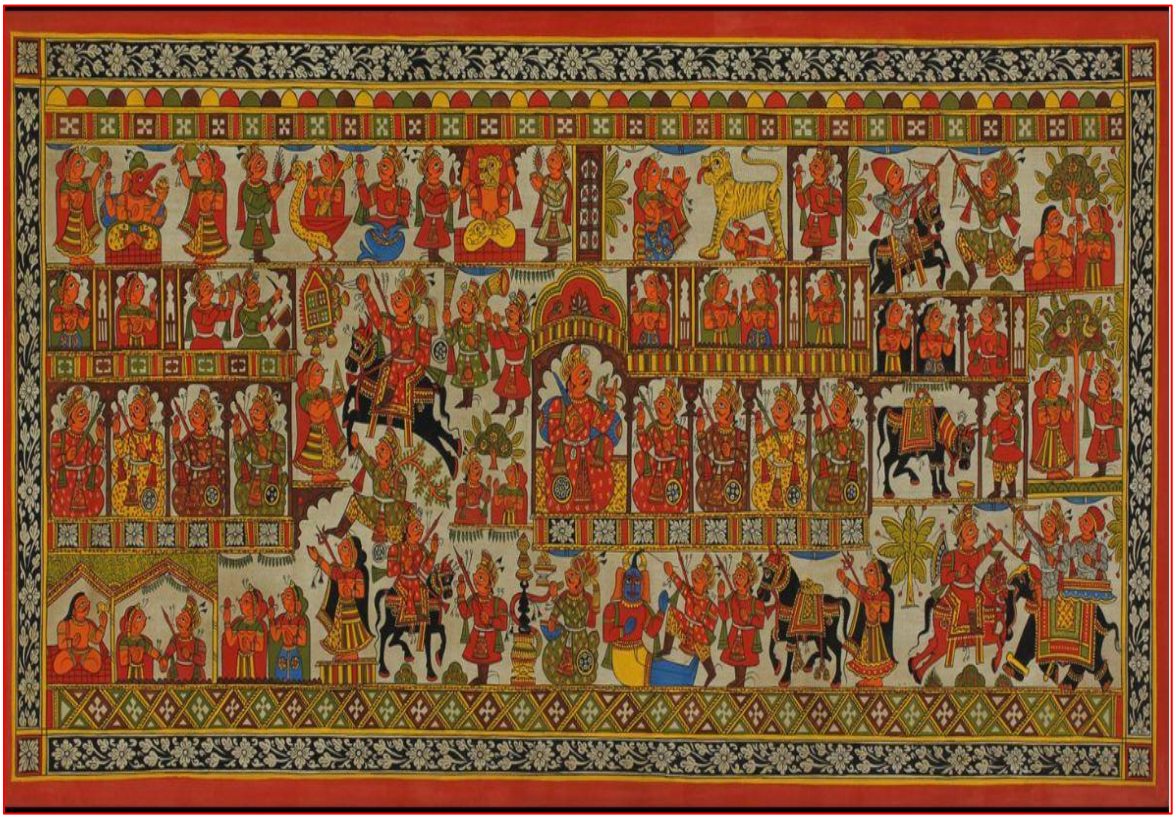

चित्र 2.6 पाबूजी की फड़

उक्त चित्र पाबूजी की फड़ से संबंधित है, यह राजस्थान की एक लोक कला है। यह एक लोक कला और कथा वाचन सामाजिक परंपरा है। इसे कपड़े पर बनाया जाता है। यह लोक देवता पाबूजी की वीरता का गुणगान करती है। पाबूजी के चित्रों का गायन भोपा और भोपी करते है। यह आस्था का प्रतीक है। रावणहत्था जैसे पारम्परिक वाध यंत्रों के साथ इसे गया जाता है।

2. ऐतिहासिक पुनर्निर्माण

नाटक और नाट्य-प्रदर्शन में ऐतिहासिक घटनाओं का मंचन विद्यार्थियों को इतिहास को केवल पढ़ने के बजाय जीने का अनुभव कराता है। उदाहरण के लिए, स्वतंत्रता आंदोलन, सभ्यता-आधारित नाटकों या ऐतिहासिक पात्रों की भूमिका निभाने से उनका ऐतिहासिक दृष्टिकोण मजबूत होता है।

3. दृश्य सामग्री से सीखना

नक्शे, प्रतीक, पोस्टर, समय-रेखा (Timeline), इन्फोग्राफिक्स आदि दृश्य कला के माध्यम से सामाजिक अध्ययन की अवधारणाएँ अधिक स्पष्ट और यादगार बन जाती हैं। दृश्य शिक्षण सामग्री विश्लेषण, तुलना और व्याख्या जैसी सामाजिक विज्ञान की क्षमताओं को विकसित करती है।

IV. विज्ञान-शिक्षण में कला का महत्व

विज्ञान अवलोकन, प्रयोग और कल्पना पर आधारित विषय है। दृश्य कला बच्चों को प्रयोगों, जीवों की संरचना, ग्रहों, प्राकृतिक चक्रों आदि को चित्रात्मक रूप में समझने में सहायता करती है।

पौधों, जानवरों या मानव शरीर के चित्रण से विज्ञान की जटिल अवधारणाएँ सरल हो जाती हैं। नाटक या रोल-प्ले के माध्यम से जल-चक्र, खाद्य-श्रृंखला या पर्यावरणीय समस्याओं को प्रस्तुत करने से बच्चे विषय से गहराई से जुड़ते हैं।

मॉडल निर्माण, विज्ञान प्रदर्शनियाँ तथा चार्ट तैयार करना छात्रों में रचनात्मकता और समस्या-समाधान क्षमता को बढ़ाते हैं। इस प्रकार कला विज्ञान में रचनात्मक सोच एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण को विकसित करती है। विज्ञान अवलोकन, विश्लेषण और प्रयोग का विषय है। दृश्य कला और प्रदर्शन कलाएँ वैज्ञानिक सोच और समझ के विकास में अत्यंत उपयोगी हैं।

हम दृश्य कला के स्वर्ण युग में जी रहे हैं जहाँ दृश्य कला एक डाटा के रूप में सूचना के माध्यम से एक व्यक्ति को एक दूसरे को जोड़ता है । मल्टीमीडिया और सोशल मीडिया अपने दर्शकों तक पहुँचाने के लिए मुख्य आधार दृश्य कला है।

वैज्ञानिक दृष्टि से यदि अगर बात की जाए तो दृश्य कला विज्ञान का एक महत्वपूर्ण अंग है। वैज्ञानिक चित्रकार किसी भी चित्र को एक योजना के अनुसार प्रस्तुत करता है। तथा उसे चित्र में चित्र से संबंधित संपूर्ण जानकारी का समावेश रहता है, जिससे वह साधारण चित्र न रहकर एक शोध का तथा एक सूचना का माध्यम बन जाता है।

विज्ञान में चित्र का मुख्य उद्देश्य किसी विषय को कला के माध्यम से समझना है, ताकि जो छात्र है, वह प्रासंगिक रूप में उसकी जानकारी प्राप्त कर सके।विज्ञान में चित्रण को प्राकृतिकरूप या वास्तविक रूप में समझने की जाती है, लेकिन ये दोनों अलग हैं। इस कला का मूल उद्देश्य विज्ञान संचार है, इसलिए सटीकता और वस्तुनिष्ठता इसके सबसे महत्वपूर्ण हैं। चित्रण विषय का सटीक निरूपण होने पर ही सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त की जा सकती है, जानवरों और पौधों से लेकर पदार्थों, प्रक्रियाओं या घटनाओं तक, विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला हो सकती है।

विभिन्न विषयों के लिए अलग-अलग तकनीकों और उपकरणों की आवश्यकता होती है। चित्रण में किसी भी कलात्मक तकनीक का उपयोग किया जा सकता है,

जैसे पेंसिल, जलरंग या स्याही। डिजिटल युग ने विज्ञान चित्रण और संचार को बदल दिया है, जिससे विज्ञान में काफी बदलाव आया है।

1. मॉडल-निर्माण और दृश्यांकन

विज्ञान के कई सिद्धांत और प्रक्रियाएँ अमूर्त होती हैं। चित्र, मॉडल, आरेख (Diagrams), स्केच और 3D संरचनाएँ इन्हें समझना आसान बनाती हैं। उदाहरण: मानव हृदय का मॉडल, सौर मंडल की संरचना।

2. अवलोकन कौशल

चित्रकला और स्केचिंग विद्यार्थियों में सूक्ष्म अवलोकन की क्षमता विकसित करती है। वैज्ञानिक प्रयोगों में अवलोकन अत्यंत आवश्यक कौशल है–कला इस कौशल को स्वाभाविक रूप से मजबूत करती है।

3. नाटक और विज्ञान संचार

जब विद्यार्थी वैज्ञानिक विषयों पर नाटक, प्रस्तुति या कविता तैयार करते हैं, जैसे जल संरक्षण, पर्यावरण सुरक्षा, ऊर्जा के स्रोत, तो यह विज्ञान संचार (Science Communication) को बढ़ावा देता है। इससे वैज्ञानिक अवधारणाएँ सामाजिक संदर्भों से जुड़ती हैं और बच्चों में जिम्मेदारी पैदा होती है।

बेली (बेली, 1993) का मानना है कि ड्रामा ग्रुप वर्क का इस्तेमाल करके स्टूडेंट्स की समझ को बढ़ा सकता है और उनकी लर्निंग को बेहतर बना सकता है। यह स्टूडेंट्स की पॉजिटिव सेल्फ-इमेज को भी मज़बूत करता है, क्योंकि ड्रामा के बेसिक कॉन्सेप्ट में खुद को एक्सप्रेस करना शामिल है; इसलिए, स्टूडेंट्स इसका इस्तेमाल अपने पर्सनल अनुभवों को क्लासरूम में लाने के लिए कर सकते हैं।

इसके अलावा, मैककैसलिन (मैककैसलिन, 1996) ने कहा कि क्लासरूम में टीचिंग स्ट्रेटेजी के तौर पर ड्रामा का इस्तेमाल करने से टीचर्स को अलग-अलग लर्निंग स्टाइल या स्पेशल ज़रूरतों वाले स्टूडेंट्स की ज़रूरतों को पूरा करने में मदद मिल सकती है, क्योंकि ड्रामा स्टूडेंट्स को बिना किसी शर्म या डर के हिस्सा लेने में मदद करता है। ड्रामा हिस्सा लेने वालों में सेल्फ-डिसिप्लिन भी पैदा करता है और हर व्यक्ति के अधिकारों को सपोर्ट करने, बढ़ावा देने और उनकी रक्षा करने में मदद करता है। दूसरे शब्दों में, स्टूडेंट्स को ग्रुप के नियमों का पालन करना चाहिए। एक बार जब सेल्फ-डिसिप्लिन हासिल हो जाता है, तो ग्रुप के हर सदस्य को दूसरों के

अधिकारों का सम्मान करते हुए अपने लक्ष्यों और रुचियों को पूरा करने का अधिकार होता है।

5. निष्कर्ष

दृश्य कला और प्रदर्शन कलाएँ शिक्षा का एक महत्वपूर्ण अंग हैं। वे न केवल रचनात्मकता बढ़ाती हैं, बल्कि भाषा, गणित, सामाजिक अध्ययन और विज्ञान जैसे शैक्षणिक विषयों को समझने में भी गहराई प्रदान करती हैं। कला विद्यार्थियों को सीखने का बहु-संवेदी अनुभव देती है।जिससे वे अवधारणाओं को बेहतर ढंग से ग्रहण, अभिव्यक्त और लागू कर पाते हैं। आधुनिक शिक्षा में कला का समावेश संपूर्ण व्यक्तित्व विकास, सांस्कृतिक समझ, तार्किक सोच और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को विकसित करने का सशक्त माध्यम है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. Bailey, D. (1993). *Wings to Fly: Bringing Theatre Arts to Students with Special Needs*. Rockville, MD: Woodbine House
2. Bamford, A. (2006). The wow factor: Global research compendium on the impact of the arts in education. Waxmann Publishing.
3. Belcastro, sarah & Schaffer, Karl. (2011). Dancing Mathematics and the Mathematics of Dance. Math Horizons. 18. 16-20. 10.4169/194762111X12954578042939.
4. Eisner, E. W. (2002). The arts and the creation of mind. Yale University Press.
5. Garvis, S., & Pendergast, D. (2011). An investigation of early childhood teacher self-efficacy beliefs in the teaching of arts education. International Journal of Education & the Arts, 12(9),1–15.
6. Hetland, L., Winner, E., Veenema, S., & Sheridan, K. (2007). Studio thinking: The real benefits of visual arts education. Teachers College Press.
7. https://courses.mapacademy.io/courses/sculpture-archeology-and-architecture-from-the-indian-subcontinent/
8. https://sketchplanations.com/the-golden-ratio
9. Marshall, J. (2014). Transdisciplinarity and art integration: Toward a new understanding of art-based learning across the curriculum. Studies in Art Education, 55(2), 104–127.
10. National Council of Educational Research and Training (NCERT). (2005). National Curriculum Framework 2005. New Delhi: NCERT.
11. Winner, E., Goldstein, T. R., & Vincent-Lancrin, S. (2013). Art for art’s sake? The impact of arts education. OECD Publishing.
12. नागरिकशास्त्र शिक्षण में सहायक सामग्री [Teaching Aids in Civics Teaching] (2021), Dr.shyama Prasad Mukherjee University
13. https://www.adobe.com/creativecloud/design/discover/golden-ratio.html

तृतीय अध्याय

ऑटिज्म (आत्मकेंद्रित)

तृतीय अध्याय

ऑटिज्म (आत्मकेंद्रित)

3.1 ऑटिज्म का परिचय

विश्व में लगभग 100 में से 1 बच्चा ऑटिज्म से पीड़ित है। यह आंकड़े वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गेनाइजेशन WHO द्वारा जारी किए गए हैं। वही भारत में 2 अप्रैल 2023 इकनॉमिक टाइम्स द्वारा जारी किए गई। सूचना में ऑटिस्टिक जनसंख्या 1.8 करोड़ से भी अधिक है। दूसरा यह सबसे आम विकासात्मक विकार के रूप में गिना जाता हैं। यह आंकड़े सभी का ध्यान आकर्षित करने के लिए काफी है (WHO, 2023; Autism Speaks, 2024)।

भारत में ऑटिज्म के राष्ट्रीय स्तर पर कोई पूर्ण रजिस्ट्री उपलब्ध नहीं है, लेकिन पूर्व में किये विभिन्न शोध अध्ययनों में इसकी दर बढ़ती हुई दिखाई देती है। कुछ शोधों के अनुसार भारत में बच्चों में ऑटिज्म की दर लगभग 1 प्रति 36 तक रिपोर्ट की गई है (International Journal of Autism, 2026)।

ऑटिज्म का नाम सभी ने कहीं ना कहीं सुना होगा किंतु पूर्ण रूप से शायद ही अभी तक कोई समझ पाया है । उसमें एक न्यूरोलॉजिकल समस्या है जिसे आम भाषा में मानसिक रोग भी कहा जाता है । ऑटिज्म की रोकथाम के लिए टीकों और दवाओं पर अभी भी काफी शोध चल रहा है, और वर्तमान शोध के आधार पर, इस रोग को दवा या टीकों के माध्यम से पूरी तरह से ठीक नहीं किया जा सकता है(WHO; Global Vaccine Safety Reviews)।

• ऑटिस्म का इतिहास

ग्रुन्या एफिमोव्ना सुखारेवा (Grunya Efimovna Sukhareva), पहली मनोचिकित्सक थी। जिन्होंने 1926 रिसर्च पेपर में सर्वप्रथम ऑटिज्म के बारे में लिखा। इनका जन्म 11 नवंबर 1891 को कीव, रूसी साम्राज्य में हुआ। इन्होंने मेडिकल की डिग्री हासिल की। उन्होंने 1917 तक मेडिकल संस्था की महामारी विज्ञान की इकाई में शुरू कर दिया जिसके बाद उन्होंने 1921 तक लाइसेंस प्राप्त मनोचिकित्सक रूप में काम शुरू किया Historical autism research literature)।

वहीं से उन्हें मानसिक रोग संस्थान में दोष विज्ञान विभाग के प्रमुख के रूप में कार्य किया। 1921 में मास्को चली गई जहां साइकोन्यूरोलॉजिस्ट विभाग में कार्य

करने के बाद उन्होंने स्कूल की स्थापना की जिसका नाम इंस्टीट्यूट ऑफ फिजिक्स ट्रेनिंग मेडिकल पेडोलॉजी और साइको न्यूरोलॉजिस्ट एंड पेडागोजी सेनेटोरियम स्कूल रखा गया। इसी स्कूल में उन्होंने कुछ विद्यार्थियों के ऊपर अपना शोध कार्य पूर्ण किया (International Journal of Autism, 2026) ।

1938 में न्यूयॉर्क के वैज्ञानिक जे. लुईस डेस्पर्ट (J. Louise despert), ने बच्चों में 29 मामलों का विवरण दिया जिसमें से कुछ लक्षण ऑटिज़्म के सिद्धांतों से संबंधित हैं।

इतिहास में इसे सर्वप्रथम गंभीर रूप में अध्ययन विषय रूप में मनोवैज्ञानिक केनर (Kanner)द्वारा लिया गया । उन्होंने इसके अध्ययन में और शोध कार्यों में यह पाया यदि माता-पिता द्वारा बच्चों के साथ उचित व्यवहार न किया जाए तो उनके प्रभाव उत्पन्न हो जाता है ।

केनर (Kanner) ने 1943 में अपने शोध में उल्लेख किया, कि मातृत्व की कमी के कारण से ऑटिज्म होता है । जिसे "रेफ्रिजरेटर मदर" (Refrigerator mother) से संबोधित किया गया। शोध कार्य 11 बच्चों के ऊपर किया गया था । उन्होंने अपने रिसर्च पेपर "ऑटिस्टिक में भावनात्मक संबंध की गड़बड़ियां" (autistict disturbance of affective contact) में इस विषय की चर्चा की कि ऐसे बच्चे जो ऑटिज्म से ग्रसित हैं, वह बहुत अधिक बुद्धिमान होते हैं लेकिन उन्हें अकेले में समय बिताना अधिक पसंद होता है और केनर (Kanner) यह भी कहा गया कि इनके व्यवहार में किसी भी कार्य को लगातार दोहराने की प्रकृति होती है, जो इनकी एकाग्रता को बढ़ाती है । केनर (Kanner) ने शिशु संबंधी ऑटिस्टिक समस्याओं को "शिशु ऑटिज्म" (Infantile Autism) कहा गया (Kanner, 1943)।

जीन पियागेट (Jean Piaget) और केनर (Kanner) जैसे मनोवैज्ञानिकों ने सिस्कोफिनिया (schizophrenia) का विस्तृत अध्ययन करने के बाद पाया कि इन बच्चों में एक मुख्य लक्षण यह है, कि जब वे अपनी भावनाओं को व्यक्त करने या किसी को समझने वाले तरीके से या रोजमर्रा की जिंदगी में कुछ कहने की कोशिश करते हैं, तो वे एक ही तरह से बोलते हैं, एक ही शब्दों का उपयोग बार-बार करते हैं, या अपने हाथों को बार-बार एक ही दिशा में हिलाते हैं।

लियो कनेर का कार्य काफी सीमित रहा उनका मानना था की यह मानसिक रोग काफी दुर्लभ श्रेणी में आता है। लियो कनेर का शोध कार्य भी सीमित सिद्धांतो पर आधारित रहा। उन्होंने केवल 150 सत्यापित् मामलो का ही अध्ययन किया। जिसका

संदर्भ काफी दूर साउथ अफ्रीका से लिया गया। उन्होंने माना कि जिन्हें मानसिक दौरे पड़ते हैं उनमें मूल रूप से ऑटिज्म पाया जाता है, जबकि यह बात बहुत आम है कि मिर्गी जैसे दौरे ऑटिज्म में देखे जाते रहे ।

कई शोधकर्ताओं ने कनेर के शोध में कमी का अहसास था । जिसमें प्रमुख रूप से ब्रिटेन मूल की लोर्ना विंग्स थी । लोर्ना संज्ञात्मक मनोवैज्ञानिक के रूप में लंदन में कार्य करती थी। ऑटिज़्म के बारे में वह ज्यादा जानने की उत्सुक इसलिए भी हुए क्योंकि उनकी बेटी को भी ऑटिज़्म था और उनको पर्याप्त कोई उपचार या उपलब्ध नहीं हो पा रही थी । उस समय समाज में ऑटिज़्म को लेकर इतनी जागरूकता नहीं थी, न यह पता था की इसका उपचार किस प्रकार किया जाए। कई परिवार इस समस्या से जूझ रहे थे।

उन्होंने ऑटिज़्म पर अध्ययन करते हुए उनको जर्मनी भाषा में डॉ अस्पेर्गेस का शोध पत्र मिला । सौभाग्य से उनके पति जर्मन भाषा के जानकार थे। जिनकी मदद से लोर्ना ने शोध पत्र को अनुवाद किया और पाया की ऑटिज़्म के लक्षण और अस्पेर्गेस सिंड्रोम के लक्षण में काफी समानता पाई गई । यह शोध पत्र कनेर की शोध को चुनौती देता प्रतीत हुआ।

1970 में लोर्ना विंग्स ने ऑटिज़्म के विकारो की अवधारणा को प्रस्तुत करते हुए ऑटिज़्म के प्रकारो की व्याख्या की। लोर्ना ने ऑटिज़्म के मुख्य रूप में (Traid of impairment) क्षीणता होने की मुख्य तीन रूप बताए गए हैं। जिसमे सामाजिक संपर्क, संचार और कल्पना करना। लोर्ना विंग्स ने ऑटिज्म के इतिहास में सभी टूटी हुई कड़ियो को जोड़ने का महत्पूर्ण कार्य किया। सम्पूर्ण शोध कार्य के समय उनकी बेटी उनकी प्रेरणा स्रोत रही। लोर्ना के अथक प्रयासों की वजह से आज सभी ऑटिज़्म के बारे में खोये हुई इतिहास को जान पाय है (Autism Spectrum Concept Research Literature)।

1950 जोहान फ्रेडरिक कार्ल एस्पेरेगस एक ऑट्रिलियन चिकित्सक थे। जिन्होंने 1938 में विशिष्ट मनोवैज्ञानिक स्थिति वाली बच्चो के समूह पर अटीपिकल न्यूरोलॉजी पर अध्ययन कर ऑटिज़्म स्पेक्टरम विकार को अस्पेरगस सिंड्रोम से संबोधित किया।

उन्होंने मानसिक विकारो पर 300 से भी ज्यादा शोध पत्र लिखे। जिन बच्चो पर शोध कार्य किया उन बच्चो को वह अक्सर लिटिल प्रोफेसर कहकर संबोधित करते

थे। हंस एस्परगर अपनी कक्षा की शुरुआत संगीत से करते थे। जिससे बच्चे कक्षा में सहज महसूस कर सके।

उन्होंने पाया कि बच्चे जिस विषय में रुचि रखते थे, उसके बारे में अधिक विस्तार से बात करते थे। जबकि उनको दोस्त बनने व सामाजिक सामजस्य रखने में दिक्कत का सामना करना पड़ता था । हंस एस्परगर का स्वयं का स्वभाव काफी ठंडा और एकांत प्रिय था। आपने अपनी निजी पुस्तकालय में लगभग 10,000 पुस्तक संग्रहीत थी। उन्होंने अपनी "प्रगतिशील आध्यात्मिक परिपक्वता" का श्रेय अपने पढ़ने को दिया। वह अक्सर शास्त्रीय लेखकों, कवियों या बाइबिल को पढ़ा करते थे। किंतु उनके शोध कार्य इतिहास के पन्नों में डूबा रह गया था, केवल लोर्ना विंग के अथक प्रयास से ऑटिज्म के बारे में कई शोध कर्ता विस्तृत रूप मे ऑटिस्म के इतिहास का अध्ययन कर पाने में सक्षम हुए।

संयुक्त राष्ट्र अमेरिका द्वारा मानसिक रोगों से बचाव लक्षण और सांख्यिकी मैनुअल (DSM) एक पुस्तक जारी की जाती है । जिसमें सभी प्रकार के मानसिक रोगों से संबंधित विचार विमर्श, शोधकर्ताओं के मुख्य शोध कार्य के रूप में पूर्ण जानकारी संक्षिप्त रूप में मिलती है ।इस पुस्तिका का उपयोग मनोवैज्ञानिक व शोधकर्ताओं के मार्गदर्शन के रूप में किया जाता है,अभी तक 5 संस्करण जारी किए जा चुके हैं । अभी हाल ही में मार्च 2022 में इसका पांचवा संस्करण जारी किया गया जिसमें के बारे में चर्चा की गई थी (Autism Spectrum Concept Research Literature)।

• मशहूर ऑटिस्टिक लोग जिन्होंने अपने काम से दुनिया को प्रेरित किया

ऑटिज़्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर (Autism Spectrum Disorder – ASD) कोई बीमारी नहीं, बल्कि मस्तिष्क की कार्यप्रणाली का एक अलग स्वरूप है। ऑटिस्टिक व्यक्ति दुनिया को देखने, समझने और महसूस करने का एक विशिष्ट तरीका रखते हैं। लंबे समय तक समाज में ऑटिज़्म को केवल एक सीमा (limitation) के रूप में देखा गया, लेकिन आज अनेक ऐसे ऑटिस्टिक व्यक्ति सामने आए हैं, जिन्होंने अपनी प्रतिभा, मेहनत और आत्मविश्वास से यह सिद्ध कर दिया कि अलग होना कमजोरी नहीं, बल्कि शक्ति भी हो सकता है। कला, विज्ञान, पर्यावरण, मनोरंजन और सामाजिक जागरूकता जैसे क्षेत्रों में इन व्यक्तियों ने असाधारण योगदान देकर पूरी दुनिया को प्रेरित किया है।

1. टेंपल ग्रैंडिन (Temple Grandin)   टेंपल ग्रैंडिन एक प्रसिद्ध अमेरिकी पशु वैज्ञानिक, लेखिका और ऑटिज़्म अधिकारों की प्रमुख समर्थक हैं। उन्हें बचपन में ऑटिज़्म का

निदान हुआ था, ऐसे समय में जब इस विषय पर जागरूकता बहुत कम थी। उन्होंने पशु विज्ञान के क्षेत्र में मानवीय पशु-प्रबंधन प्रणालियों (Humane Livestock Handling Systems) को विकसित किया, जो आज विश्वभर में उपयोग की जाती हैं। ग्रैंडिन मानना है,की ऑटिस्टक बच्चे आम बच्चो से कहीं ज्यादा अलग होते है। बस ज़रूरत है तो उनको समाज से अधिक से अधिक रूबरू करवानी की होती है।

उनका कहना है,"कि यदि हम बच्चो को समाज की कठौरता का अनुभव नहीं कराएंगे तो हम उन्हें प्रोत्साहित कैसे कर सकते हैं, हमें उन्हें समाज की कठोरता का अनुभव करवाना हैं। जिससे वह आने वाले समय में उन्हें इस तरह तैयार करना है जैसे सामान्य बच्चों को करते हैं । उन्हें अलग-थलग करके हम उनसे यह उम्मीद नहीं कर सकते की वह सामान्य बच्चो की तरह जीवन जी सके ।" (Grandin, 2006)। टेंपल ग्रैंडिन का मानना है कि वे "चित्रों में सोचती हैं", जिससे उन्हें पशुओं के व्यवहार को समझने में टेम्पल ग्रैंडिन को खेतों में जानवरों के साथ काम करते समय बहुत आलोचना का सामना करना पड़ा क्योंकि सभी को लगता था कि यह काम सिर्फ पुरुषों का है। उन्हें इस कार्य के लिए किसी भी तरह कि सहायता नहीं मिली । उन्हें कई तरह कि अपशब्द भाषा और तिरस्कार का सामना करना पड़ा। उन्होंने बिना किसी का विरोध किये अपना कार्य लगातार करती रही।

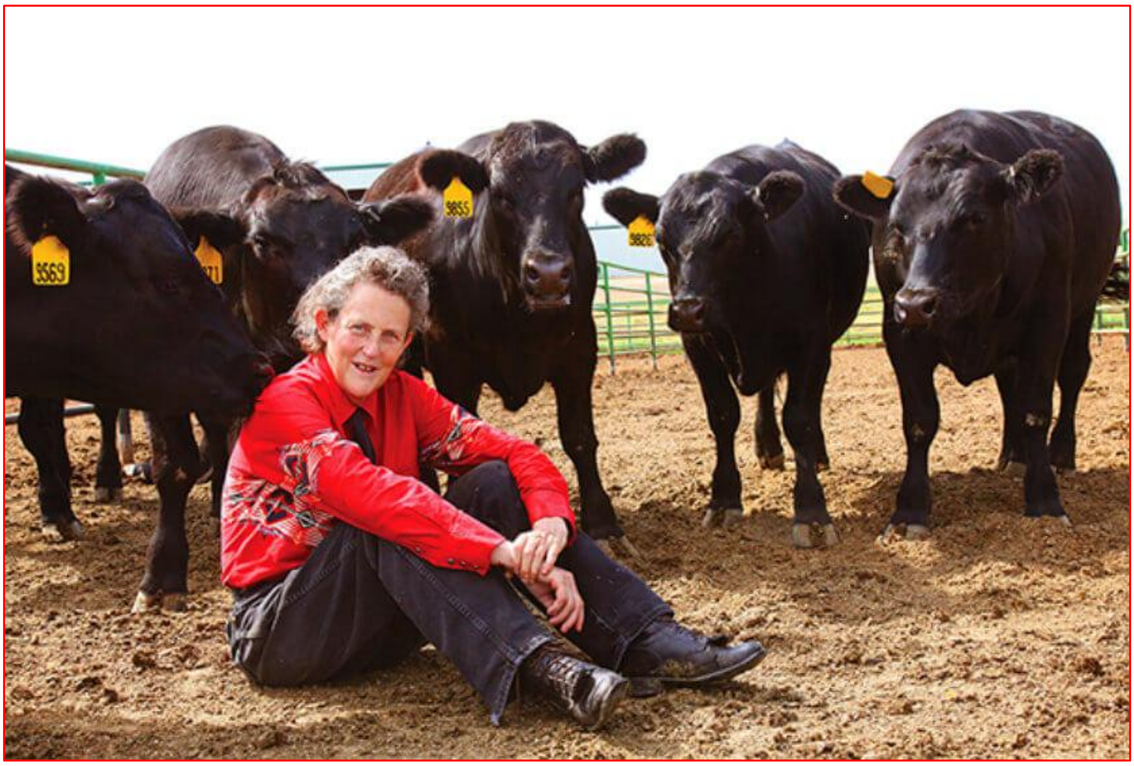

चित्र 3.1 टेंपल ग्रैंडिन पशुओ के साथ (छवि: रोज़ाली विनार्ड द्वारा)

उन्होंने यह साबित किया कि ऑटिज़्म किसी व्यक्ति की बौद्धिक क्षमता को सीमित नहीं करता, बल्कि सही दिशा मिलने पर वह समाज के लिए वरदान बन सकता है। (Grandin, 2006)

2. स्टीफन विल्टशायर (Stephen Wiltshire)

स्टीफन विल्टशायर एक ब्रिटिश कलाकार हैं, जो अपनी असाधारण स्मृति और ड्राइंग क्षमता के लिए विश्व-प्रसिद्ध हैं। वे किसी शहर को केवल एक बार देखकर उसका विस्तृत चित्र स्मृति से बना सकते हैं। स्टीफन बचपन में बोल नहीं पाते थे और उन्हें गंभीर ऑटिज़्म था, लेकिन कला उनके लिए अभिव्यक्ति का माध्यम बनी (Wiltshire, 2006) I

यह असल ज़िंदगी की कहानीयों में से शोधकर्ता की पसंदीदा कहानियों में से एक है। स्टीफन विल्टशायर 8 साल की उम्र तक कुछ ही शब्द बोलना सीख पाय थे ।किंतु उनकी शिक्षिका द्वारा उनकी अंदर के प्रतिभा को पहचाना और उनको प्रोत्साहित किया। स्टीफन विल्टशायर की सबसे बड़ी विशेषता उनकी फोटोग्राफिक मेमोरी मानी जाती है। वे किसी शहर को हेलीकॉप्टर या ऊँची इमारत से केवल एक बार देखकर पूरे शहर का विस्तृत चित्रमाला-संबंधी (पैनोरमिक चित्र) स्मृति से बना सकते हैं। उनके चित्रों में खिड़कियों की संख्या, इमारतों की ऊँचाई, पुलों की संरचना और सड़कों की दिशा तक सटीक होती है।

यह क्षमता उन्हें "ऑटिस्टिक सवांट" (Autistic Savant) की श्रेणी में रखती है, जहाँ कुछ ऑटिस्टिक व्यक्तियों में विशिष्ट क्षेत्रों में असाधारण प्रतिभा पाई जाती है (Hendrickx, 2015)। स्टीफन की कला यह दर्शाती है कि ऑटिज़्म के साथ आने वाली एकाग्रता और विवरण पर ध्यान देने की क्षमता कैसे अद्वितीय रचनात्मकता में बदल सकती है।स्टीफन विल्टशायर ने लंदन के क्वीन मैरीज़ हॉस्पिटल स्कूल में पढ़ाई की और बाद में सिटी एंड गिल्ड्स ऑफ़ लंदन आर्ट स्कूल में। उनके टीचर्स ने उनकी प्रतिभा को पहचाना और उन्हें कला के ज़रिए सीखने के मौके दिए। यह सपोर्ट उनकी ज़िंदगी में बहुत ज़रूरी साबित हुआ।उन्होंने न्यूयॉर्क, टोक्यो, रोम, दुबई और लंदन जैसे शहरों के मशहूर जगहों की बड़ी-बड़ी चित्रमाला-संबंधी (पैनोरमिक ड्रॉइंग) बनाईं, जो आज भी देखने वालों को हैरान करती हैं (विल्टशायर, 2006)।

स्टीफन विल्टशायर की कला को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिली। उनकी प्रदर्शनियाँ (exhibitions) दुनिया के कई देशों में आयोजित की गईं। वर्ष 2006 में उन्हें ब्रिटेन सरकार द्वारा Member of the Order of the British Empire (MBE) की उपाधि से

सम्मानित किया गया। यह सम्मान कला के क्षेत्र में उनके असाधारण योगदान के लिए दिया गया।

उन्होंने “Stephen Wiltshire Gallery” की स्थापना भी की, जहाँ उनकी कला आम जनता के लिए उपलब्ध है। यह उपलब्धि किसी भी कलाकार के लिए गर्व की बात होती है, विशेषकर उस कलाकार के लिए जिसने जीवन की शुरुआत में संवाद करने में भी कठिनाई झेली हो।स्टीफन विल्टशायर की कहानी ऑटिज़्म को लेकर समाज की पारंपरिक सोच को चुनौती देती है। अक्सर ऑटिज़्म को केवल कठिनाइयों से जोड़कर देखा जाता है, लेकिन स्टीफन का जीवन यह दिखाता है कि सही मार्गदर्शन, धैर्य और समर्थन मिलने पर ऑटिस्टिक व्यक्ति असाधारण ऊँचाइयों तक पहुँच सकते हैं (Silberman, 2015)।

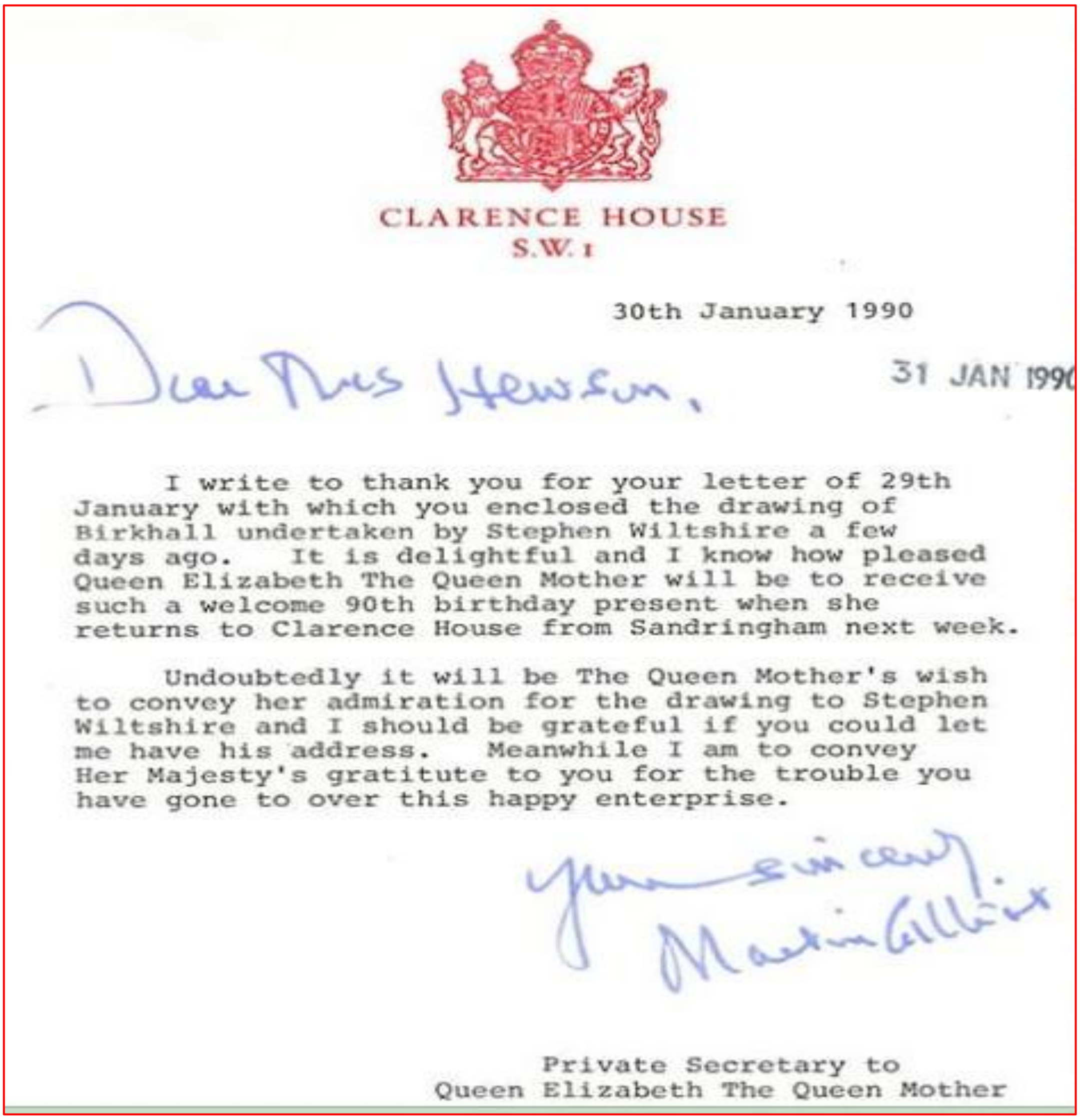
CLARENCE HOUSE
S.W.1

30th January 1990

31 JAN 199

Dear Mrs Hewson,

I write to thank you for your letter of 29th January with which you enclosed the drawing of Birkhall undertaken by Stephen Wiltshire a few days ago. It is delightful and I know how pleased Queen Elizabeth The Queen Mother will be to receive such a welcome 90th birthday present when she returns to Clarence House from Sandringham next week.

Undoubtedly it will be The Queen Mother's wish to convey her admiration for the drawing to Stephen Wiltshire and I should be grateful if you could let me have his address. Meanwhile I am to convey Her Majesty's gratitute to you for the trouble you have gone to over this happy enterprise.

Yours sincerely,
Martin Gilliat

Private Secretary to
Queen Elizabeth The Queen Mother

चित्र 3.2 महारानी एलिजाबेथ द्वारा स्टीफन विल्टशायर को लिखा गया एक पत्र 20

चित्र 3.3 आर्टिस्ट स्टीफन विल्टशायर लंदन के सिटी हॉल में याददाश्त के आधार पर लंदन का पैनोरमा स्केच बनाते हुए, लंदन, ब्रिटेन - 12 अक्टूबर 2007 (Stock Image 4241234l)

ऊपर दिखे हुए चित्र में वह चित्रमाला-संबंधी कलाकृति का निर्माण कर रहे है। चित्र बनाते समय उनको ज्यादा बात करना पसंद नहीं आता । उनके चित्रों में रंगो का आभाव देखा गया। खासियत यह थी, कि वह जब भी चित्रमाला-संबंधी कार्य शुरू करते हेड फ़ोन लगा कर अपने मन पसंदीदा गाने सुनते और यही से वह लगातार बैठे हुए काम करते रहते । चित्र बनाते समय केवल काले रंग के पेन का उपयोग करते जो सतह के अनुसार अपनी प्रतिक्रिया दे।

3. ग्रेटा थुनबर्ग (Greta Thunberg)

ग्रेटा थुनबर्ग एक स्वीडिश पर्यावरण कार्यकर्ता हैं, जिन्हें एस्परगर सिंड्रोम (ऑटिज़्म स्पेक्ट्रम का एक रूप) है। उन्होंने जलवायु परिवर्तन के विरुद्ध "School Strike for Climate" आंदोलन की शुरुआत की, जिसने विश्वभर के युवाओं को प्रभावित किया (Thunberg, 2019)।

चित्र 3.4 जलवायु के लिए स्कूल हड़ताल) साइन, स्टॉकहोम, अगस्त 2018

एस्पर्जर सिंड्रोम वाले लोग एक ही आइडिया या इंटरेस्ट पर बहुत ज़्यादा फोकस करते जिसकी वजह से ग्रेटा पर्यावरण की ओर ज्यादा से ज्यादा केंद्रित कर ध्यान पाई । ग्रेटा स्वयं अपने ऑटिज़्म को अपनी "सुपरपावर" कहती हैं, क्योंकि यह उन्हें तथ्यों पर गहराई से ध्यान केंद्रित करने और स्पष्ट रूप से सच बोलने की क्षमता देता है। उनका कार्य यह दिखाता है, कि ऑटिज़्म नेतृत्व और सामाजिक परिवर्तन में बाधा नहीं है (Thunberg, 2019)। उनकी उपलब्धियाँ यह दर्शाती हैं कि ऑटिस्टिक व्यक्ति शब्दों के बिना भी दुनिया से संवाद कर सकते हैं और कला के माध्यम से वैश्विक पहचान बना सकते हैं।

यदि आपके मन में इच्छा और कर्म शक्ति हो तो अब किसी भी विपरीत परिस्थिति में भी सामाजिक हित कर सकते हैं।

4. डैन आयक्रॉयड (Dan Aykroyd)

डैन आयक्रॉयड एक प्रसिद्ध हॉलीवुड अभिनेता, लेखक और हास्य कलाकार हैं। उन्हें एस्परगर सिंड्रोम का निदान हुआ था। Ghostbusters जैसी लोकप्रिय फिल्मों में उनकी भूमिका ने उन्हें अंतरराष्ट्रीय ख्याति दिलाई।

उनका जीवन कठिनाइयों से भरा हुआ था मात्र 2 की वर्ष की आयु में वह ASD से ग्रसित पाय गए। प्रारम्भिक शिक्षा में भी उनको काफ़ी कठिनाइयों से दो चार होना पड़ा । उन्हें दो स्कूल से भी इसी कारणवश निकल दिया गया था।

चित्र 3.5 कनेडीइन अमेरिकी कॉमेडियन और एक्टर डैन एक्रोयड, 2009

1980 में एस्पर्जर सिंड्रोम के बारे में जागरूकता बढ़ी थी, तभी उनकी पत्नी ने उन्हें मनोचिकित्सक के पास जाने की सलाह दी जिससे उन्हें काफी फायदा पहुँचा।

डैन आयक्रॉयड की विशेष रुचियाँ और विषयों पर अत्यधिक फोकस करने की क्षमता उनकी रचनात्मकता का आधार बनी। वे यह उदाहरण प्रस्तुत करते हैं कि ऑटिस्टिक व्यक्ति मनोरंजन और मीडिया जैसे प्रतिस्पर्धी क्षेत्रों में भी उत्कृष्ट सफलता प्राप्त कर सकते हैं (Hendrickx, 2015) ।

5. सूज़न बॉयल (Susan Boyle)

सूज़न बॉयल एक प्रसिद्ध ब्रिटिश गायिका हैं, जो Britain's Got Talent से दुनिया भर में प्रसिद्ध हुईं। बाद में उन्होंने सार्वजनिक रूप से बताया कि उन्हें एस्परगर सिंड्रोम है। उनके जीवन की कहानी यह दर्शाती है, कि प्रतिभा उम्र, सामाजिक स्थिति या न्यूरोलॉजिकल अवस्था की मोहताज नहीं होती (Silberman, 2015)।

सुसान बॉयल ने लम्बे समय तक अपनी माँ की देखभाल की जिस वजह से उन्हें अपना स्वयं का ध्यान रखने का समय नहीं मिलता था।

चित्र 3.6 प्रेस एसोसिएशन के लिए विशेष। सुसान बॉयल ने BBC चिल्ड्रन इन नीड अपील 2011 के दौरान BBC टेलीविज़न सेंटर, वुड लेन, व्हाइट सिटी, लंदन में परफ़ॉर्म किया। (छायाचित्र: इयान वेस्ट/PA इमेजेज वाया गेटी इमेजेज)

उन्हें काफी देर बाद पता चला की उनको एस्परगर सिंड्रोम है और उनका निदान भी जीवन में काफी बाद हुआ। सूज़न बॉयल ने लाखों लोगों को यह आशा दी कि जीवन में देर से भी सफलता और आत्म-स्वीकृति संभव है।

6. एंथनी हॉपकिंस (Anthony Hopkins)

एंथनी हॉपकिंस एक ऑस्कर पुरस्कार विजेता अभिनेता हैं, जिन्होंने अपने जीवन के बाद के चरण में बताया कि वे ऑटिज़्म स्पेक्ट्रम पर हैं। उनकी गहरी एकाग्रता और चरित्र विश्लेषण की क्षमता ने उन्हें अभिनय के शिखर तक पहुँचाया।

चित्र 3.7 एंथनी हॉपकिंस (Anthony Hopkins) (Hendrickx, 2015)।

एंथनी ने ऑटिज़्म से पीड़ित लोगों के हित में काम किया तथा अपनी लोकप्रियता का इस्तेमाल करके इसके बारे में समाज को ज़्यादा से ज़्यादा जागरूक करके किया और ज़रूरतमंद लोगों को उन्होंने हर तरह से सपोर्ट किया।

मीडिया से बातचीत की। पब्लिक इवेंट्स में उन्होंने अपने निजी अनुभव पर खुलकर बात की है। ऑटिज़्म से पीड़ित लोगों को दैनिक ज़िंदगी में किन मुश्किलों से या किन असुविधाओं का सामना करना पड़ता है।उन्होंने इस बात को दुनिया के सामने अवगत करवाया।

उनका जीवन यह सिद्ध करता है कि ऑटिज़्म के साथ भी कोई व्यक्ति कला और सिनेमा के क्षेत्र में सर्वोच्च उपलब्धियाँ हासिल कर सकता है

7. जिया राय (Jiya Rai)

जिया राय एक भारतीय पैरा-स्विमर हैं, जो ऑटिज़्म से प्रभावित हैं। उन्होंने इंग्लिश चैनल जैसी कठिन समुद्री तैराकी पार कर इतिहास रचा। उनकी उपलब्धि

भारत ही नहीं, बल्कि वैश्विक स्तर पर ऑटिज़्म के प्रति जागरूकता बढ़ाने में सहायक बनी।

जिया के पिता मदन राय नौसेना में कार्यतर हैं । जिया के माता-पिता को जिया का ऑटिस्टिक होना, तब ज्ञात हुआ जब वह 2 वर्ष की थी । वह प्रतिदिन पार्क घूमने जाती थी, तभी उसकी रूचि तैराकी में हुई ।

चित्र 3.8 जिया अपने माता-पिता रचना राय और मदन राय के साथ।

(Satish Bate / HT Photo)

जिया को बोलने में कठिनाई का सामना करना पड़ता था । लेकिन उसके माता-पिता ने उसे वीडियो के माध्यम से उसे प्रोत्साहित किया । उसने तैराकी में कई पुरस्कार जीते । जिया राय यह संदेश देती हैं कि शारीरिक और मानसिक चुनौतियों के बावजूद दृढ़ संकल्प और समर्थन से असंभव को भी संभव बनाया जा सकता है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 'मन की बात' कार्यक्रम में उनकी सराहना की। जिया राय की सर्वोच्च उपलब्धियो में से लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड्स और इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स। इसके अंतर्गत उन्होंने Fastest Female Swimmer with Autism के खिताब से सम्मानित किया गया है (amarujala)।

3.2 ऑटिज़्म की परिभाषा

ऑटिज्म शब्द " ग्रीक" भाषा के शब्द से "ऑटोस'' (Autos) लिया गया है जिसका अर्थ है, स्वयं । अर्थात ऑटिज्म शब्द का अर्थ हुआ आत्म केंद्रित, जो पूरी तरह अपने में केंद्रित रहता हो ।

ऑटिज्म का शब्द चलन 60 से 70 वर्षों में अधिक प्रयोग में आया है। इसका प्रथम प्रयोग साल 1798 में फ्रांसीसी चिकित्सक जीन मार्क गैसपार्ड (Jean marc Gaspard) द्वारा किया गया था । इसके बाद लगभग एक शताब्दी बाद साल 1910 में पॉल यूजेन ब्लूलर (Paul eugen bleuler) द्वारा अपने विद्यार्थियों को मानसिक रोगों के बारे में वर्णन करते हुए किया गया । पॉल यूजेन ब्लूलर एक मनोचिकित्सक के रूप में विख्यात है, इसके उपरांत कई बार इस शब्द का प्रयोग तथा इसे परिभाषित किया गया ।

ऑटिज्म की मूल रूप से कोई परिभाषा यदि दी जाए तो वह यह होगी कि यह एक ऐसा मानसिक रोग है, जो रोगी के व्यवहार में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।ऐसे रोगी की शारीरिक बनावट बिल्कुल सामान्य होती है लेकिन उन्हें सामाजिक तालमेल बिठाने में दूसरे लोगों से बातचीत करने में और एक ही कार्य को बार-बार करने की प्रकृति रहती है ।1990 में अमेरिका कांग्रेस (American Psychiatric Association) ने संघीय विषय में सुधार किया और उनको एक विकासात्मक विकलांगता की श्रेणी में माना गया इसे अब विकलांग सुधार अधिनियम 2004 या आई जी (IG 2004) कहां गया इसके अनुसार एक विकासात्मक विकलांगता है जिसका प्रभाव मौखिक रूप में सामाजिक तालमेल में असहजता के रूप में माना गया उनकी गतिविधि में बाधा डालते हैं (APA, 2013)।

इसके अलावा ऑटिस्टिक बच्चों में अधिकतर कार्य दोहराने वाली दैनिक कार्य में लगातार परिवर्तन किसी भी वस्तु या व्यक्ति दूसरों के प्रति अत्यधिक संवेदनशीलता दिखता है । 2 से 3 वर्ष की आयु में प्रत्यक्ष रूप से में लक्षण दिखाई देने लगते हैं।

इसके विपरीत जिन बच्चों में ऑटिज्म के शुरुआती लक्षण पाए गए ऐसे बच्चों के साथ यदि प्रतिकूल व्यवहार किया जाए तो यह बच्चे आगे चलकर किसी न किसी क्षेत्र में अवश्य सफल होते हैं, ऑटिज्म से पीड़ित किसी भी व्यक्ति को सामाजिक तालमेल में वार्तालाप, पढ़ने-लिखने इत्यादि में अनेक विभिन्न कठिनाइयों का सामना

करना पड़ता है। प्रत्येक व्यक्ति में यह समस्या कम या ज्यादा हो सकती है।इसके लक्षण भी प्रति व्यक्ति अनुसार भिन्न भिन्न हो सकते हैं।

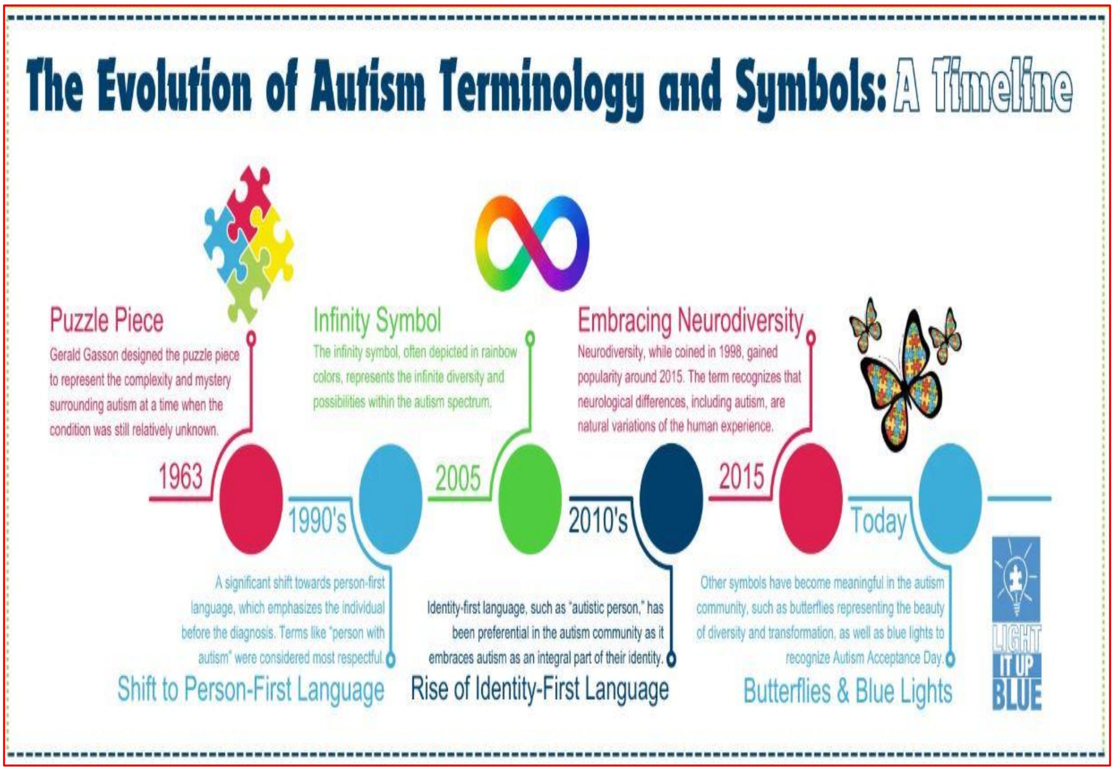

चित्र 3.9 ऑटिस्टिम से सम्बन्धित प्रतीक

गेराल्ड गैस एक ऑटिस्टिक बच्चे के पिता थे उन्होंने सबसे ऑटिस्टिम से सम्बन्धित प्रतीक को प्रस्तावित किया । ऑटिज़्म और एप्लाइड बिहेवियर एनालिसिस (ABA) के क्षेत्र मे गत दशकों में मेथोडोलॉजी में, बल्कि शब्दावली और प्रतीकों में क्रांतिकारी बदलाव आये है ।

हम ऑटिज़्म को विश्व में किस तरह पहचानेगे ,इसका ऐतिहासिक विकास, जिसमें ऑटिज़्म के लिए विभिन्न प्रतीकों का विकास भी सम्मलित है, इस डिसऑर्डर की गहरी समझ, ज़्यादा सम्मानजनक और व्यक्ति-केंद्रित भाषा की ओर बदलाव, और ऑटिज़्म के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करना, तथा लगातार प्रयास को दिखाता है।

पज़ल का टुकड़ा: जटिलता और रहस्य का प्रतीक पज़ल का टुकड़ा ऑटिज़्म के लिए सबसे ज़्यादा पहचाने जाने वाले प्रतीकों में से एक है। इसी क्रम में इत्यादि प्रतीक प्रचलित हुई ।

यह पज़्ज़ल एक यूनिट का हिस्सा है। ऑटिस्म के अंतर्गत सभी अपनी कुछ कमियाँ और काबिलियत समेटे हुए हैं। हर पहेली को उसकी सही जगह रखने पर एक

यूनिट बनाते हैं। एकता के साथ वह एक बनते हैं। जो इस बात का भी प्रतीक है, कि जो कमियाँ हैं वही उनकी खासियत भी हैं ।

3.3 ऑटिज़्म के प्रकार

ऑटिज़्म के मुख्य प्रकारों को लेकर विभिन्न वैज्ञानिकों में मतभेद हैं। Loana critina, और Elena stefanachi ऑटिज़्म के पाँच मुख्य प्रकार बताए गए हैं।

1. AS (ASPERGER SYNDROM) -

ऑटिज़्म का सबसे आम रूप एस्परैगस है, जो बच्चों में सबसे ज़्यादा देखा जाता है। इस सिंड्रोम में बच्चों को सामाजिक रूप से ढलने में परेशानी होती है। इन बच्चों को सामान्य काम करने में भी मुश्किल होती है। अगर उनकी दिनचर्या में किसी भी तरह का बदलाव किया जाए, तो वे मानसिक रूप से अशांत महसूस करते हैं, जैसे उनका पेंसिल बॉक्स मेज के बाईं ओर रखा है, अगर आप उसे दाईं ओर कर दें, तो उस चीज़ को देखकर उन्हें काफ़ी असहजता की अनुभूति होती है।

कई समस्याओं के बावजूद, ऐसे बच्चों में कई शारीरिक क्षमताएँ होती हैं जो काफ़ी अद्भुत होती हैं। कई बार देखा गया है कि ऐसे बच्चे बात करने में तो खुद को असमर्थ पाते हैं, लेकिन पूरी लगन और समर्पण के साथ किसी भी काम में लग जाते हैं और उसे पूरा कर पाने में सक्षम हैं।

एस्पेरेगस सिंड्रोम इस बीमारी से प्रभावित बच्चों का आईक्यू लेवल सामान्य बच्चों की तुलना में काफ़ी ज़्यादा होता है। ऐसे बच्चे किसी न किसी क्षेत्र में अद्भुत काम करते हैं। उन्हें सही माहौल की ज़रूरत होती है, लेकिन कभी-कभी वे अपने काम में निराशा या असफलता के डर से तनाव और अवसाद से भी ग्रस्त हो जाते हैं। लेकिन अगर उन्हें सकारात्मक माहौल दिया जाए, तो यह उनके समग्र विकास में मदद कर सकता है।

2. PDD (PERVASIVE DEVELOPMENT DISORDER)

पीडीडी-एनओएस, व्यापक विकासात्मक विकार (परवेसिव डेवलपमेंटल डिसऑर्डर-नॉट अदर स्पेसिफाइड) का संक्षिप्त रूप है। इसे ऑटिज्म के अंतर्गत माना जाता था । किंतु वर्ष 2000 में प्रकाशित मानसिकरोगों के नैदानिक और सांख्यिक मैन्युअल के चौथे संस्करण डीएम 4 टी आर में संशोधन के अंतर्गत इसे अब ऑटिज्म की श्रेणी में नहीं लिया जाता, क्योंकि इस सिंड्रोम की परिस्थितियों तथा लक्षण के जो मापदंड है, वह ऑटिज्म से भिन्न है ।

PDD लक्षण क्लासिकल ऑटिज्म और एस्परैगस सिंड्रोम के सामान्य लक्षणों से मेल नहीं खाते हैं, जहां व्यक्ति सामान्य परिस्थितियों में कुछ हद तक सामान्य जीवन जी सकता है, लेकिन कुछ असामान्य ऑटिस्टिक लक्षण प्रदर्शित करता है। इसका मुख्य अंतर केवल यही है ,किऑटिज्म में व्यक्ति पूर्ण रूप से न्यूरोलॉजिकल डिसऑर्डर्स से पीड़ित रहता है, तथा इससे कम पीड़ित व्यक्ति को काम में सहायता की आवश्यकता होती हैं, वही इसके लक्षण ऑटिज्म से कुछ भिन्न हैं, या मापदंडों को पूर्ण नहीं करते हैं, इस परिस्थिति में इसे ऑटिज्म की श्रेणी से लगभग अलग कर दिया गया था ।

Autism Spectrum Disorder

1.	**AS**	**ASPERGER SYNDROM**
2.	**PDD**	**PERVASIVE DEVELOPMENT DISORDER**
3.	**AD**	**AUTISTIC DISORDER**
4.	**CDD**	**CHILDREN DISTINGRTIVE DISORDER**
5.	**RS**	**RETT SYNDROM**

3. AD (AUTISTIC DISORDER OR Classic Autism)

क्लासिकल आटिस्म (AD) एस्परगर या पी.डी.डी.-एन.ओ.एस. की तुलना में लक्षणों का अधिक गंभीर स्तर पर रहता है। क्लासिकल ऑटिज्म में बच्चे आंखों के द्वारा संपर्क स्थापित नहीं कर पाते हैं तथा बात करते समय नज़रे चुराते हैं।
क्लासिकल ऑटिज्म में शारीरिक व चेहरे के विभिन्न मुद्राओं और भावों के द्वारा उनको सरल सी बात समझने में भी काफी कठिनाई का अनुभव करते है ।इन्हें मित्र बनाने में भी कई परेशानियों का सामना करना पड़ता है ।

डॉक्टर कनेर द्वारा पूर्व में किए गए शोध के कारण इस कनेर ऑटिज्म भी कहा जाता है ।इसको सबसे अधिक पहचाने जाने वाले रोगों की संख्या में रखा गया

है जिसे संक्षिप्त रूप में ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर (ASD) कहा जाता है । इसके लक्षण सामान्यतः 3 वर्ष की आयु में बच्चों में लक्षित होना शुरू हो जाता है ।

मुख्य लक्षण बच्चों में सामाजिक तालमेल रखने में तथा बातचीत करने में अन्य मोटर गतिविधियां करने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा ऑटिस्टिक बच्चे केवल अपने परिवार के सदस्यों के सामने ही सहज हो पाते हैं, और बच्चों में कई बार काफी देर से बोलने के भी लक्षण पाए जाते हैं । बच्चें कई बार 8 वर्ष के बाद थोड़ा बहुत बोलना शुरू करते हैं   बच्चों में से संबंधित रोग भी दिखाई देते हैं । जिसमें वह एक ही शब्द या वाक्य को बार-बार दोहराते हैं ।

4. CDD (Childhood Disintegrative)

इस सिंड्रोम को हेलर सिंड्रोम के नाम से भी जाना जाता है। इसके लक्षण तो मिलते-जुलते हैं लेकिन समयाअवधि में काफी अंतर होता है। ऑटिस्टिक बच्चों में इसके लक्षण जहां 2 से 3 साल की उम्र में दिखने लगते हैं, वहीं सामान्य बच्चों में ये लक्षण 8 से 10 साल की उम्र में ही दिखने लगते हैं।

1908 में थॉमस हेलर, जो एक ऑस्ट्रेलियाई शिक्षक थे, ने इसे एक दुर्लभ विकार बताया था। उन्होंने पाया कि इससे प्रभावित बच्चे धीरे-धीरे अपने कौशल और सामान्य जीवन जीने की क्षमता खो देते हैं, इसके साथ ही कभी-कभी उनमें दोहराव वाले पैटर्न और स्पष्ट भाषा की कमी और अपनी भावनाओं को दूसरों तक पहुंचाने की क्षमता का अभाव होता है। CDD में बिल्कुल ऑटिज्म जैसे लक्षण होने के कारण इसे ऑटिज्म की श्रेणी में रखा गया है।Heller, T. (1908) ।

5. (Rett syndrome)

रेट सिंड्रोम एक दुर्लभ और गंभीर न्यूरोलॉजिकल और जेनेटिक विकार है। यह लड़कों की तुलना में लड़कियों को अधिक प्रभावित करता है। सामान्य ऑटिज़्म की तरह, इसके लक्षण बच्चों में 2 वर्ष की आयु में दिखाई देने लगते हैं। इसकी गंभीरता का पता इस प्रकार लगाया जा सकता है कि रोगी का शरीर के किसी भी अंग पर पूर्ण नियंत्रण नहीं रह जाता या शरीर का कोई भी संवेदी अंग पूरी तरह से कार्य नहीं कर पाता।

रेट सिंड्रोम : लड़कियों में अधिक होने का मुख्य कारण यह है कि महिलाओं में दो जोड़ी X गुणसूत्र होते हैं और पुरुषों में एक Y गुणसूत्र और एक X गुणसूत्र होता है। इसलिए, MECP2 जीन की सामान्य और एक परिवर्तित गुणसूत्र के साथ पैदा होने वाली महिलाओं में आमतौर पर आरएडी सिंड्रोम के लक्षण विकसित होते हैं।

आरएडी सिंड्रोम के साथ पैदा होने वाले बच्चे आमतौर पर एक बिना जटिलता वाली गर्भावस्था और प्रसव के बाद पैदा होते हैं। आरएडी सिंड्रोम से ग्रस्त अधिकांश बच्चे पहले 6 महीनों तक अपेक्षा के अनुरूप सामान्य रूप से बढ़ते और व्यवहार करते हैं। धीरे-धीरे, उनके व्यवहार और वृद्धि में अंतर दिखाई देने लगते हैं। इसका सबसे स्पष्ट परिवर्तन 12 से 18 महीने की आयु के बीच होता है। लक्षण और उनकी गंभीरता हर बच्चे में अलग-अलग होती है। रेट सिंड्रोम के लक्षण और संकेत इस प्रकार हैं ।

शारीरिक कौशल में कमी, संचार अंगों का पूरी तरह से काम न करना और कौशल का ह्रास, हाथों का बार-बार हिलना, झटके आना आदि इसके प्रमुख लक्षण हैं। लेकिन इसके साथ ही, कई बार रोगी को सांस रुकने या अनियमित सांस लेने का एहसास होता है।

ऐसे बच्चों मानसिक विकास के कारण सामाजिक कार्यों में कम उपस्थिति दिखाते हैं और उनकी बौद्धिक क्षमता भी बहुत कम होती है। ऐसे बच्चों को मिर्गी के दौरे भी पड़ते हैं और कई बार उनकी नींद पूरी नहीं होती, जिसके कारण वे चिड़चिड़े रहते हैं और बीमार पड़ जाते हैं। वे चिंताओं से घिरे रहते हैं।

निष्कर्ष

ऑटिस्म के कई प्रकार हैं, तहा यह एक ऐसी बीमारी जिसका पूर्ण निदान अभी तक नहीं हो पाया है। किन्तु ऑस्टिम के कुछ लक्षणों को कुछ हद तक ही सीमित रहते है।जिस कारण यदि उनको सही मार्गदर्शन दिया जाए तो वह अद्भुद कार्यक्षमता वाले लोग सिद्ध होते है।

ऑटिस्म की मुख्य ख़ोज भी एक माँ, शिक्षक की के द्वारा ही कि गई, जिससे यह सन्देश भी मिलता है,कि उनकी बच्चों के जीवन में कितनी महत्ता है, और उनके सहयोग और सामर्थ से नामुमकिन काम भी मुमकिन हो जाते है।

इन सभी प्रसिद्ध ऑटिस्टिक व्यक्तियों की जीवन-कथाएँ यह स्पष्ट करती हैं कि ऑटिज़्म किसी व्यक्ति की क्षमता को सीमित नहीं करता, बल्कि उसे एक अलग और शक्तिशाली दृष्टिकोण प्रदान करता है। यदि समाज ऑटिस्टिक व्यक्तियों को अवसर, समावेशन और सम्मान दे, तो वे शिक्षा, कला, विज्ञान, खेल और सामाजिक परिवर्तन के क्षेत्र में असाधारण योगदान दे सकते हैं (Silberman, 2015) । इनकी उपलब्धियाँ हमें यह सिखाती हैं कि विविधता ही मानव समाज की सबसे बड़ी शक्ति है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. (2018). Hans Asperger, national socialism, and “race hygiene” in Nazi-era Vienna. Molecular autism, 9(1), 1-43.

2.(2018). The truth about Hans Asperger’s Nazi collusion. https://doi.org/10.1038/d41586-018-05112-1

3.Grandin, T. (2006). Thinking in pictures: My life with autism. New York, NY: Vintage Books.

4. A History and Timeline of Autism (verywellhealth.com)

5. American Psychiatric Association. (2013). Diagnostic and statistical manual of mental disorders (5th ed.). Washington, DC: Author.

6.American Psychiatric Association. (2013). Diagnostic and statistical manual

7.American Psychiatric Association. (2013). Diagnostic and statistical manual of mental disorders (5th ed.). Washington, DC: Author.

8.Bender, L. (1982), In Memoriam Leo Kanner, MD June 13, 1894–April 4, 1981, J.Am.Acad.Child.Psychiatry21(1):88-89.

9.Bleuler, P. E. (1911). Dementia praecox or the group of schizophrenias. New York: International Universities Press.

10.Factfile, A., Training, A., Times, T., Legal, U. K., Kanner, L., & W-Wide, A. L. Hans Asperger–Definition.

11.Grandin, T. (2006). Thinking in pictures: My life with autism. New York, NY: Vintage Books.

12.Hendrickx, S. (2015). Neurodiversity, autism and mental health. London: Jessica Kingsley Publishers.

13.https://en.wikipedia.org/wiki/Greta_Thunberg#cite_note-YouTube-Thunberg(2018-11-24)-11

14. https://www.autismspeaks.org/pervasive-developmental-disorder-pdd-nos

15.https://www.britannica.com/biography/Dan-Aykroyd

16.https://www.gettyimages.in/search/2/image?page=9&phrase=susan%20boyle%20pictures&sort=mostpopular&license=rf%2Crm

17.https://www.hindustantimes.com/lifestyle/art-culture/strait-shooter-a-wknd-interview-with-the-parents-of-autistic-record-setting-swimmer-jiya-rai-101650617403158.html

18.https://www.pib.gov.in/PressReleaseIframePage.aspx?PRID=2038861&reg=3&lang=2

19.https://www.shutterstock.com/editorial/image-editorial/stephen-wiltshire-4241234l?trackingId=tFdQtHIxTpJaC_pEfwh-6A

20.https://www.stephenwiltshire.co.uk/biography

21.Itard, J. M. G. (1801). The wild boy of Aveyron. Paris: Goujon.

22.Kanner, L. & Eisenberg, L. (1956), Early Infantile Autism 1943-1955, American Journal of Orthopsychiatry, 26, pp.55-65.

23.Kanner, L. (1943). Autistic disturbances of affective contact. Nervous child, 2(3), 217-250. Czech, H.

24.Kanner, L. (1946), Irrelevant and Metaphorical Language in Early Infantile Autism, American Journal of Psychiatry, 103, pp.242-246.

25.Kotowicz, Z. (2011). Children, Insanity and Child Psychiatry c. 1800-1935. Kairos Revista de Filosofia Ciencia, 7-37.

26.Silberman, S. (2015). NeuroTribes: The legacy of autism and the future of neurodiversity. New York, NY: Avery.

27.Thunberg, G. (2019). No one is too small to make a difference. London: Penguin Books.

28.Wiltshire, S. (2006). Drawings. London: Michael Joseph.

29.https://www.amarujala.com/shakti/13-year-old-para-swimmer-jiya-rai-swims-from-sri-lanka-to-india-a-story-of-true-inspiration-2025-06-18

30.https://www.secondcity.com/people/dan-aykroyd

31.https://www.levelaheadaba.com/blog/dan-aykroyd-autism#:~:text=Dan%20Aykroyd%2C%20known%20for%20his,like%20in%20Aykroyd's%20case%E2%80%94comedy.

32. https://the-art-of-autism.com/the-autism-puzzle-piece-a-symbol-of-what/

33. https://the-art-of-autism.com/the-autism-puzzle-piece-a-symbol-of-what/

चतुर्थ अध्याय

ऑटिज्म से पीड़ित विद्यार्थियों के शैक्षणिक जीवन पर दृश्य और प्रदर्शन कला का प्रभाव व महत्त्व

चतुर्थ अध्याय

ऑटिज्म से पीड़ित विद्यार्थियों के शैक्षणिक जीवन पर दृश्य और प्रदर्शन कला का प्रभाव व महत्त्व

यह शोध मानसिक रूप से विकलांग छात्रों पर किया गया है। शोध कार्य में व्यवहार और शिक्षा पर कार्यात्मक अध्ययन किया गया है। ऑटिज़्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर वाले लोग अक्सर दूसरों के सामने अपनी भावनाओं और इच्छाओं को ज़ाहिर करने में असमर्थ महसूस करते हैं। क्योंकि कई मामलों में यह देखा गया है कि बच्चे एक निश्चित उम्र तक बोलना शुरू नहीं करते हैं। वे सामान्य बच्चों की तरह आसान वाक्य भी नहीं बना पाते।

पूर्व में किए गए शोध के आधार पर यह कहा जा सकता है, कि दृश्य कला और मंचीय कला को यदि सम्मिलित करके बच्चों को शिक्षा दी जाए तो उन्हें काफी कुछ सिखाया जा सकता हैं। वह उनके व्यवहार में एक हद तक सकारात्मक परिवर्तन लाया जा सकता है। इस रिसर्च स्टडी में छः बच्चे शामिल थे। जिनकी उम्र लगभग 5 से 14 साल के बीच थी। यह बच्चे ऑटिज्म के साथ-साथ बौद्धिक अशक्तता से ग्रसित होने के कारण कई बार व्यावहारिक और सामाजिक दैनिक जीवन से जुड़े गतिविधियों में अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

इन बच्चों के माता-पिता और शिक्षक-गण इतनी आशा रखते हैं, कि किसी न किसी तरह यह बच्चे केवल सामान्य जीवन जीने में समर्थ बन सके और अपनी निजी कार्यो को बिना किसी की मदद के स्वतंत्र रूप से कर सके तथा आगे चल कर अपना जीविकोपार्जन कर सके। इन बच्चों को कई बार अनेक सामाजिक व पारिवारिक तिरस्कार और अपमान सहने पड़ते हैं। इस स्थिति में, बच्चे अक्सर मानसिक अवसाद और चिंता का अनुभव करते हैं।

इस रिसर्च में परिवार को यह समझाने की भी कोशिश की गई कि बच्चा एक बहुत ही अनोखी स्थिति से गुज़र रहा था, जिसमें बस उन्हें बच्चे की बात सुननी थी और उसे अपनी भावनाएं ज़ाहिर करने देना था। बच्चे सिर्फ़ अपने माता-पिता और भाई-बहनों के साथ ही सुरक्षित महसूस कर सकते हैं। बाहरी दुनिया में उन्हें ज़्यादा सहज महसूस कराने के लिए बस इतना ही काफ़ी है। कोई भी जानवर सज़ा और प्यार दोनों को बहुत अच्छे से समझता है, तो यह तो एक इंसान का बच्चा है।

रिसर्चर को अपने पास मौजूद अंजा स्पेशल स्कूल इस रिसर्च प्रोजेक्ट के लिए सबसे सही जगह लगी। कार्य करने की अनुमति अन्ज़ा स्पेशल स्कूल ब्यकुला मुंबई (Anza special school byculla Mumbai) की प्रधानाध्यपक द्वारा दी गई। यह स्कूल लगभग ब्रिटिश काल का लगभग 200 साल पुराना स्कूल है। जिसका पूरा नाम एंटोनियो डी सूजा हाई स्कूल (ANZA) हैं। इसके अधीन स्पेशल स्कूल की स्थापना हुई 1980 में हुई थी और इसे प्राइवेट एडेड द्वारा मैनेज किया जाता है। यह शहरी इलाके में स्थित है। यह महाराष्ट्र के मुंबई (सबअर्बन) जिले के URC-12 (बायकुला) ब्लॉक में स्थित है।

स्कूल की बिल्डिंग प्राइवेट है। इसमें पढ़ाने के लिए 10 क्लासरूम हैं। सभी क्लासरूम अच्छी हालत में हैं। नॉन-टीचिंग एक्टिविटीज़ के लिए 2 एक्स्ट्रा कमरे हैं। स्कूल में प्रधानाचार्य के लिए एक अलग कमरा है। स्कूल में एक पक्की बाउंड्री वॉल है। स्कूल में पीने के पानी का (BMC) नल का पानी है। स्कूल में 4 लड़कों के टॉय। स्कूल में एक खेल का मैदान है। स्कूल में एक लाइब्रेरी है, और उसकी लाइब्रेरी में 550 किताबें हैं। स्कूल में 3 कंप्यूटर हैं, और छोटे बच्चों को सीखने के लिए भी इलेक्ट्रिक पैड का उपयोग किया जाता है।

यहां, शिक्षक नेशनल इंस्टीट्यूट फॉर द एम्पावरमेंट ऑफ पर्सन्स विद इंटेलेक्चुअल डिसेबिलिटीज (National Institute for the Empowerment of the Persons with Intellectual Disabilities, Divyangjan) (NIEPID) द्वारा आयोजित ट्रेनिंग प्रोग्राम में समय-समय पर भाग लेते हैं। सतत पुनर्वास शिक्षा कैलेंडर, (Continuing Rehabilitation Education Calendar) जिसे संक्षिप्त रूप में CRE Calendar कहा जाता हैं। यह प्रोग्राम ऑनलाइन तथा ऑफलाइन माध्यम में किया जाता है तथा इसकी निर्धारित शुल्क भी रहता है , जो कभी कम या ज्यादा हो सकता है। यह प्रोग्राम संपूर्ण भारत में अलग-अलग समय पर करवाया जाता है तथा इसकी समय सारणी ऑनलाइन उपलब्ध रहता है। हालांकि, यह स्पेशल एजुकेशन टीचर्स के लिए बहुत ज़रूरी है क्योंकि यहाँ पॉइंट्स प्राप्त होते हैं। जो बाद में उनके करियर में उनके काम आएंगे। दूसरे नज़रिए से, इन मीटिंग्स और सेमिनार में शामिल होने से उन्हें मौजूदा गतिविधियों और नई सरकारी नीतियों के बारे में जानकारी मिलती रहती है।

सरकार अक्सर शिक्षा नीति में नए बदलाव करती रहती है, जिनका सही इस्तेमाल तभी किया जा सकता है जब उन्हें पूरी तरह से समझा जाए। अन्ज़ा पब्लिक स्कूल के वातावरण से अवगत होने के बाद तय शोध परिकल्पना की चर्चा

वहां के शिक्षकों से विचार विमर्श किया गया कि किस प्रकार वहां शोध कर्ता अपने कार्य को पूर्ण कर सकती हैं।

शोध कार्य करने की अनुमति प्रधानाचार्य से एक प्रार्थना पत्र द्वारा की गई जिसमें वह एक इसमें बताया गया था कि रिसर्च का काम लगभग एक से डेढ़ महीने तक चलेगा, यह नियमित रहेगा, और इसका मुख्य फोकस ऑटिस्टिक बच्चों पर होगा।

प्रधान अध्यापिका ने जानकारी दी अभी दिवाली की छुट्टियां लगने वाली है, उसके पश्चात शोध कार्य उचित रहेगा । प्रधानअध्यापिका के परामर्श के अनुसार शोध करता ने कार्य का समय निर्धारित किया तथा लगभग एक से डेढ़ घंटा प्रतिदिन समय सीमा निर्धारित की गई शोध-कार्य प्रतिदिन किया जाना तय हुआ।

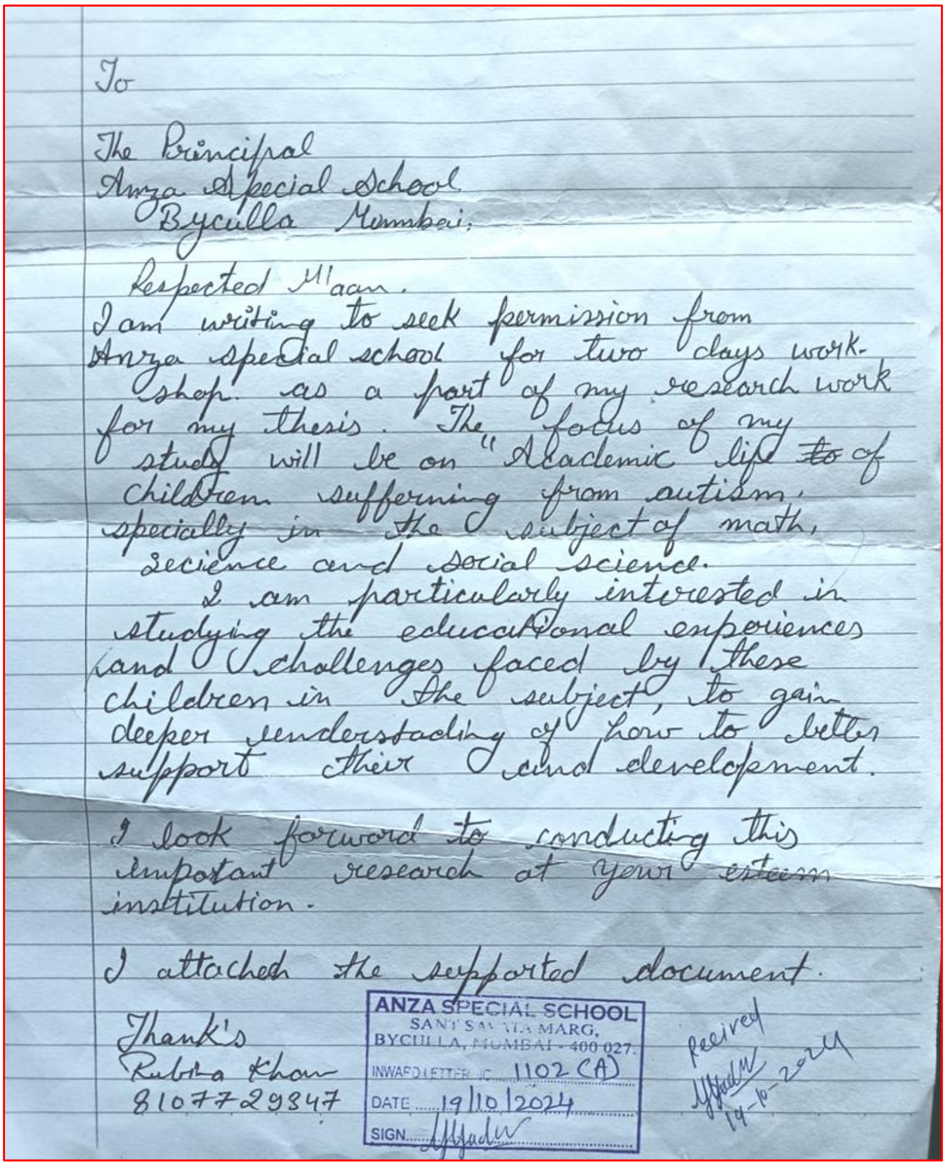

To

The Principal
Anza Special School
Byculla Mumbai.

Respected M'aam,
I am writing to seek permission from Anza special school for two days work-shop as a part of my research work for my thesis. The focus of my study will be on "Academic life ~~to~~ of children suffering from autism, specially in the subject of math, science and social science.
I am particularly interested in studying the educational experiences and challenges faced by these children in the subject, to gain deeper understading of how to better support their and development.

I look forward to conducting this important research at your esteem institution.

I attached the supported document.

Thank's
Rubina Khan
8107729347

ANZA SPECIAL SCHOOL
SANT SAVATA MARG,
BYCULLA, MUMBAI - 400 027.
INWARD LETTER NO. 1102 (A)
DATE 19/10/2024
SIGN

Received
19-10-2024

चित्र 4.1 शोध कार्य करने के लिए लिखा गया प्रार्थना पत्र

चित्र 4.2 अंज़ा स्पेशल स्कूल बायकुला (एंटोनिया डिसूज़ा हाई स्कूल, बायकुला ईस्ट, मुंबई)

चित्र 4.3 अंज़ा स्पेशल स्कूल बायकुला (विशेष विद्यालय के विभिन्न अनुभाग)

चित्र 4.4 अंज़ा स्पेशल स्कूल बायकुला (विशेष विद्यालय के विभिन्न अनुभाग)

यह स्कूल मुंबई के बीचों-बीच स्थित है। यह अनोखा स्कूल पहली से आठवीं क्लास तक की पढ़ाई करवाता है। क्लास सुबह 8:00 बजे से शाम 4:00 बजे तक चलती हैं। ये क्लास रेगुलर लगती हैं। इन क्लास को ठीक से चलाने के लिए, हर क्लास में एक मुख्य टीचर और दो असिस्टेंट होते हैं।

इस शोध कार्य में शोधकर्ता का मुख्य सहयोग वहां की शिक्षिका कल्पना सुधाकर गिरीश जी ने व उनके कक्षा सहयोगी ने पूरा किया। शुरुआती दिनों में, बच्चों को समझना काफी मुश्किल काम था क्योंकि वे आम बच्चों जैसे नहीं थे। कुछ बच्चों को सेंसरी दिक्कतें थीं, जबकि कुछ बच्चे आई कॉन्टैक्ट नहीं कर पाते थे। हालांकि, कल्पना जी के पूरे सहयोग से, बच्चों ने सहज व्यवहार जल्दी शुरू कर दिया।

बच्चों के प्रारंभिक कक्षा में फोटो नहीं लिए गए, क्योंकि वह फोन की मौजूदगी में ज्यादा भ्रमित महसूस करते थे वह अधिकतर हाथ से छीन कर खेलना शुरू करते थे। जिन बच्चों को सेंसरी दिक्कतें थीं, वे फ़ोन की फ़्लैशलाइट से आसानी से भ्रमित और परेशान हो जाते थे।

चित्र 4.5 शोधकर्ता का क्लासरूम में कल्पना के साथ बच्चों से आम बातचीत

यह बच्चे ऑटिस्टिक होने के साथ-साथ इंटेलेक्चुअल डिसेबिलिटी से प्रभावित है । यह विद्यालय सभी तरह के मानसिक अक्षमता वाले विद्यार्थियों को शिक्षा देता है तथा आगे चलकर व्यावसायिक रूप से अपना रोजगार चलाने में भी मदद करता है, इन विद्यार्थियों का पाठ्यक्रम सामान्य विद्यार्थियों की तुलना में अधिक सरल व सुगम रहता है। (चित्र 4.6) यहां पर जय वकील फाउंडेशन द्वारा दिशा प्रोजेक्ट के अंतर्गत बनाई गई विशेष प्रकार की पुस्तकों से ही बच्चों को पढ़ाया जाता हैं।

यहाँ पर हर शिक्षक अपनी तरफ से बच्चों की शिक्षा में मदद करने की पूरी कोशिश करते रहते हैं। यहाँ पर काम करनी वाली हर शिक्षक व शिक्षिका का उद्देश्य धन अर्जित करना नहीं हैं। वह निश्छल भाव से कार्य करते रहते हैं । कक्षा में पढ़ाते समय कोई निश्चित नियम नहीं है। वह केवल बच्चों की स्थिति के अनुसार उनका कार्य में सहयोग और मार्गदर्शन करती है।

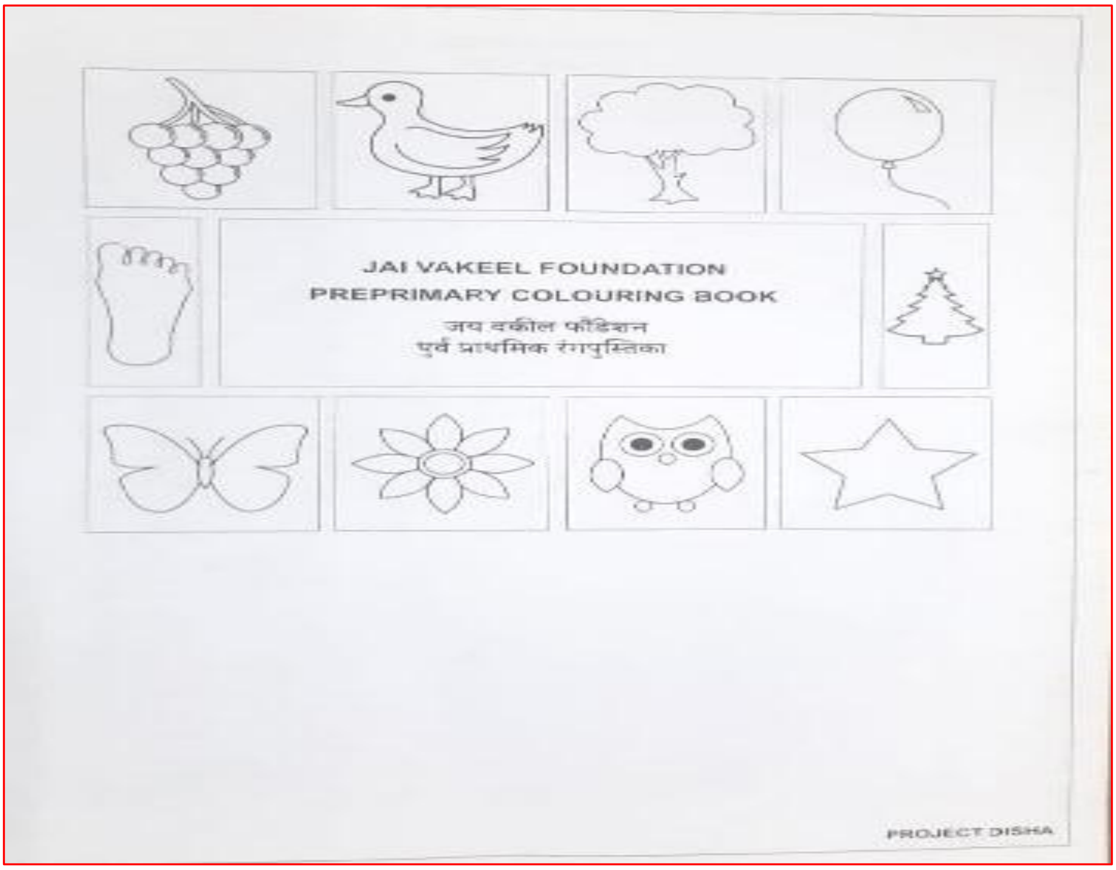

चित्र 4.6 जय वकील फाउंडेशन द्वारा दिशा प्रोजेक्ट के अंतर्गत बनाई गई विशेष

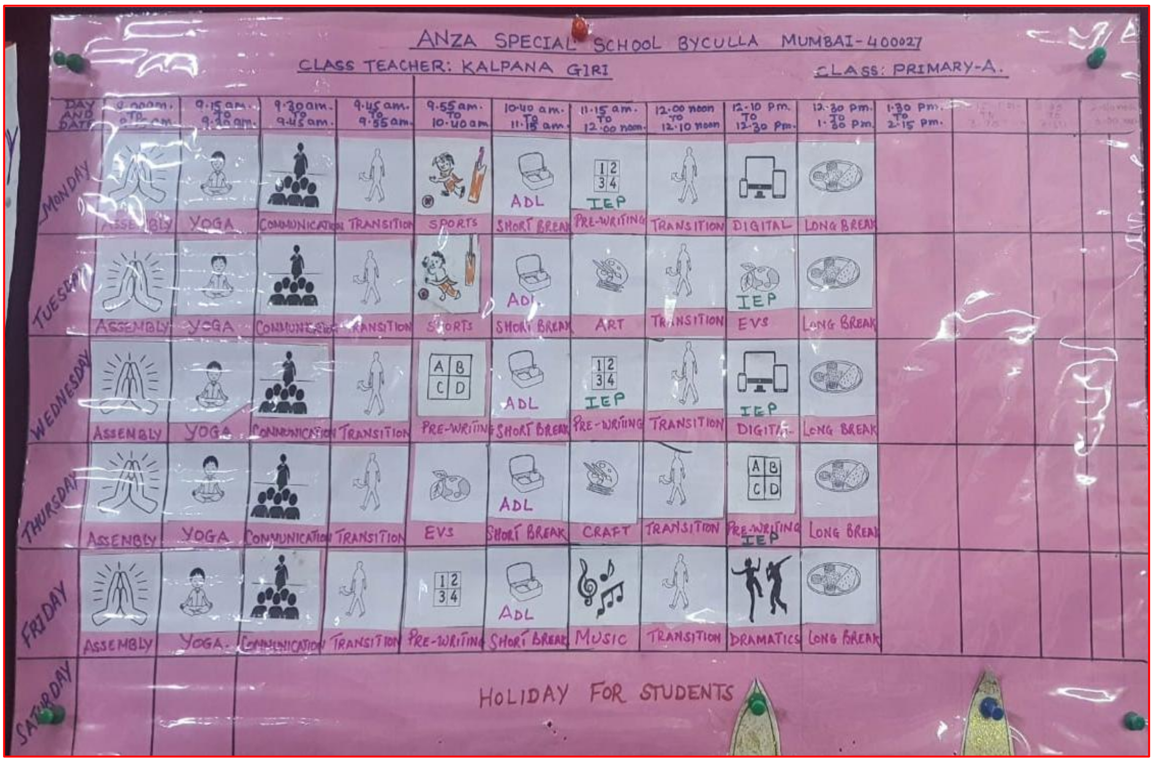

चित्र 4.7 दृश्य कला पर आधारित नियमित कक्षा की समय सारणी

यहां पर न केवल विद्‌यार्थियों को प्राथमिक रूप से शिक्षित किया जाता है, बल्कि उनके खेलकूद का भी भरपूर ध्यान दिया जाता है, ताकि वह शारीरिक रूप से भी वृद्धि कर सकें और अपना स्वयं का जीवन ज्ञापन सुचारू रूप से कर सके। सभी बच्चों से मिलने के पश्चात शोध की रूप रेखा तैयार की गई तथा सभी बच्चों में से लगभग छः बच्चों का चयन किया गया जो ऑटिस्टिक होने के साथ-साथ इंटेलेक्चुअल डिसएबल (ID) भी थे।

जैसा कि चित्र 4.7 में दिखाया गया है। कक्षा में समय सारणी बच्चों की सुविधा की अनुसार लिखित रूप में न हो कर चित्रित रूप मे होती हैं। ताकि बच्चे इसी आसानी सी समझ सके।

कक्षा की शुरुआत सामान्य कक्षाओं की तरह प्रार्थना से होती है। यहां प्रार्थना कक्षा में ही होती है तथा इसके बाद बच्चों को योग करवाया जाता है जिससे बच्चों को मानसिक व शारीरिक रूप से स्वस्थ बन सके तथा शांत रूप से कक्षा का संचालन करने में काफी मदद मिलती हैं। इसके पश्चात कक्षा की शुरुआत सामान्य बातचीत से होती है तथा शिक्षिका उनकी दिनचर्या के बारे में पूछता है। जैसे आज नाश्ते में क्या खाया, कौन तुम्हें स्कूल लेकर आया और किसने तुम्हें तैयार किया, आदि प्रश्न पूछे जाते हैं। जिसका कभी बच्चे उत्तर दे पाते हैं, कभी नहीं दे पाते हैं।

बच्चों की शुरुआती पढ़ाई-लिखाई, गणित, भाषा आदि सिखाया जाता हैं। कक्षा में शॉर्ट ब्रेक होता है जहां पर बच्चों को हल्का-फुल्का नाश्ता दिया जाता है तथा खाने के बाद बच्चों को वापस से लिखने की वह पढ़ने का अभ्यास करवाया जाता हैं।

कक्षा में कई बार बच्चे पढ़ने में रुचि दिखाते हैं तो कई बार नहीं तो कक्षा में ही बच्चों के खेलने के लिए एक छोटा सा कॉर्नर बनाया जाता है जहां पर स्लाइडिंग झूले और कुछ बॉल्स रखी जाती है। अधिकतर ऑटिस्टिक बच्चे कई बार किसी भी विषय को ज्यादा देर तक नहीं पढ़ पाते, क्योंकि वह विषय उनको रूचिकर नहीं लगता। जिसकी वजह से वह जल्दी विचलित हो जाते हैं और पढ़ाई के बीच में खेलना शुरू कर देते है । बीच में ट्रांजिशन रखा जाता है । जिसके विषय बदलते समय बच्चों को असुविधा का अनुभव नहीं होता हैं।

कक्षा में कई बार संगीत नृत्य आदि की सुविधा की जाती है। इससे बच्चों का मनोरंजन हो सके बच्चों को गेम खेलना व पजल सॉल्व करना सिखाया जाता है जिससे बच्चे तकनीक के रूप से भी आगे बढ़ सके। कई बार बच्चों को अपने माता-पिता को फोन लगाने के लिए भी कहा जाता है तथा फोन पर संवाद स्थापित करना

भी सिखाया जाता है। बाद में एक लॉन्ग ब्रेक होता हैं जिसमे बच्चे खाना खाते हे या फिर खिलते है। खेलने की लिए कई बार बच्चो से कक्षा बाहर भी ले जाया जाता है।

प्राइमरी और सेकेंडरी क्लास की कक्षाओं के समय में अंतर है। प्राइमरी की कक्षा 9 से1:00 बजे तक होती है, व सेकेंडरी क्लास की कक्षाएं 9:00 से शाम 4:00 बजे तक रहती है स्कूल की तरफ से बस की सुविधा उपलब्ध है। अधिकतर माता-पिता ही बच्चों को छोड़ने तथा लेने आते हैं।

कई बार बच्चों की मेडिकल काउंसलिंग भी की जाती है तथा मेडिकल चेकअप भी किया जाता है। यदि उन्हें किसी दवा या मेडिटेशन की जरूरत होती है तो उन्हें दी जाती है। जिससे की वह शांत व्यवहार रख सके किंतु यह देखा गया है, कि मेडिकेशन के अनुकूल परिणाम प्राप्त नहीं होते। किंतु एक उम्र विशेष तक कॉउन्सिलिंग और थेरेपी ही काम आती हैं, जिससे बच्चे को बोलने लिख़ने में मदद मिल सके।

जय वकील फाउंडेशन व दिशा प्रोजेक्ट के द्वारा बनाई गई पुस्तक से ही पढ़ाया जाता हैं, जो प्रिंटेड, तथा सरल होती हैं । कौनसी किताब से किस बच्चे को पढ़ाया जाये ।यह बच्चे के मानसिक स्तर पर निर्भर करता हैं ।एडमिशन की शुरुआत में बच्चो से कुछ प्रश्न पूछे जाते हैं। बॉडी लैंग्वेज (शारीरिक मुद्रा) देखी जाती हैं ।तथा माता-पिता से बच्चे की सामान्य दिनचर्या के बारे में जानकारी ली जाती है ।जिसकी आधार पर बच्चे का पाठ्यक्रम निर्धारित किया जाता है ।पाठ्यक्रम की शुरुआत शून्य से शुरू होती है तथा उनके मानसिक स्तर के अनुसार उन्हें आगे बढ़ाया जाता है उदाहरण के लिए 0, 1, 2 इत्यादि पाठ्यक्रम में गणित भाषा सामाजिक, विज्ञान, इत्यादि विषय पढ़ाए जाते हैं ।किंतु उनका स्तर काफी सरल होता है।

पुस्तक अधिकतर दो भाषाओं में प्रचलित है।एक क्षेत्रीय भाषा और इंग्लिश यहां पर पुस्तक इंग्लिश में और मराठी में पढ़ाई जाती है ।क्षेत्रीय भाषा में पढ़ने का मुख्यकारण यह है, कि वो किसी भी चीज को जल्दी से ग्रहण कर लेते हैं ।बच्चों को पढ़ने के लिए जो सार्वजनिक नियम है, उनका नियमों का पालन यहां पर भी किया जाता है जैसे किसी की बच्चों को लिखने में अगर और असुविधा का अनुभव होता है तो शिक्षिका उनका हाथ पकड़ कर वह बार-बार इस शब्द को दोहराकर उन्हें याद करने की कोशिश करती है ।लेकिन उन पर कोई जोर जबरदस्ती नहीं की जाती।

उन्हें प्रेम पूर्वक व मित्रता के साथ सिखाया जाता है तो खेल-खेल में बीच-बीच में प्रश्न पूछे जाते हैं कि यह चित्र किससे संबंध है।किसका है वह उसे चित्र के बारे में कितना बोल सकते हैं यह देखा जाता है जो छात्रनॉन वर्बल होते हैं।वह अधिकतर इशारों में बात करते हैं, या फिर थोड़ा बहुत लिख देते हैं। जब माता-पिता अपने बच्चों को स्कूल से लेने आए, तो उन्हें यह भी सलाह दी गई कि क्लासरूम में जो पढ़ाया गया है, उसे घर पर भी दोहराएँ।

हर बच्चे का अपना अलग व्यवहार और पर्सनैलिटी होती है, और उनकी थेरेपी उसी हिसाब से होनी चाहिए। उदाहरण के लिए, अगर किसी बच्चे को बोलने में दिक्कत होती है, तो उसे स्पीच थेरेपी मिलनी चाहिए। फिर जो बच्चे आई कांटेक्ट नहीं कर पाते हैं। उन्हें आई कांटेक्ट करने के लिए प्रैक्टिस करवाना तथा सेंसरी टॉयज बच्चों को खेलने के लिए देना, इससे बच्चों में सेंसरी समस्याओं को कुछ हद तक कम करने में मदद मिलेगी।

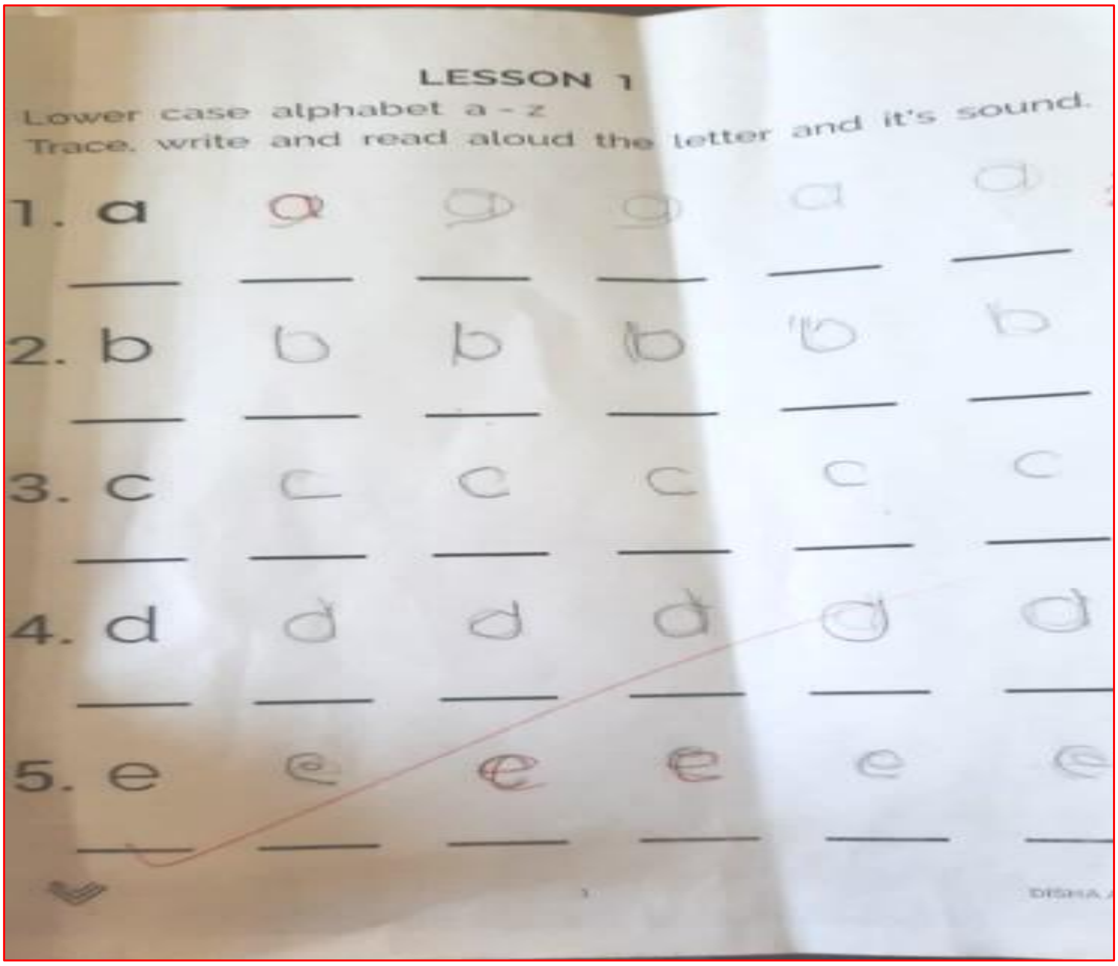

चित्र 4 .8 दिशा प्रोजेक्ट की इंग्लिश की अभ्यास पुस्तक। aअल्फाबेट से लेकर e अल्फाबेट तक बच्चों ने स्वयं कार्य किया है, तथा शिक्षिका द्वारा जांची गई पुस्तक

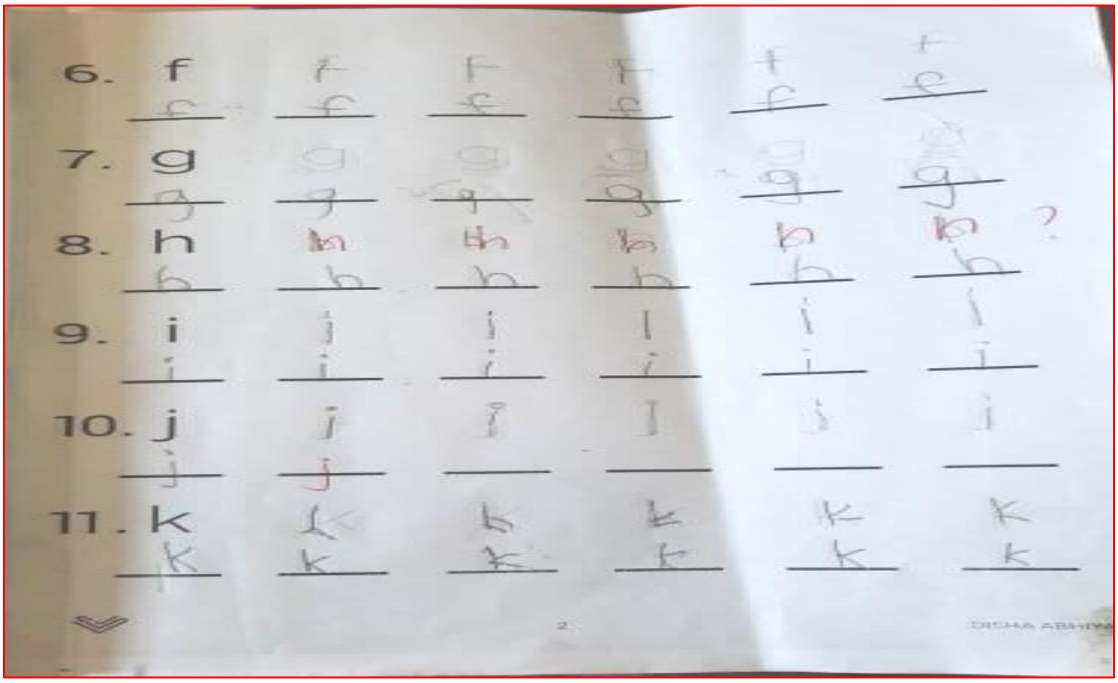

चित्र 4.9 दिशा प्रोजेक्ट की इंग्लिश की अभ्यास पुस्तक । f अल्फाबेट से लेकर k अल्फाबेट तक बच्चों ने स्वयं कार्य किया है, तथा शिक्षिका द्वारा जांची गई पुस्तक

f अल्फाबेट से लेकर k अल्फाबेट तक किया गया कार्य तथा इस पृष्ठ पर विद्यार्थी की त्रुटियो का सुधार कार्य शिक्षिका द्वारा किया गया है कभी-कभी बच्चों कोमदद की आवश्यकता होती है तो शिक्षणगण उनकी मदद की लिए सदैव तत्पर रहते हैं।

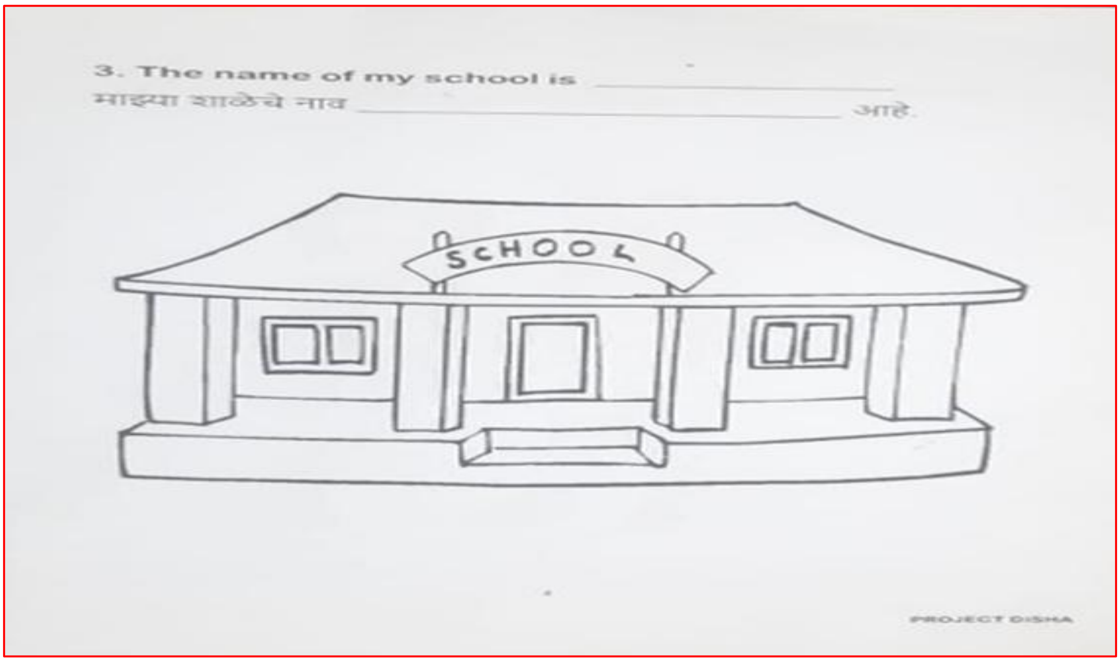

चित्र 4.10 मराठी तथा इंग्लिश में चित्र पुस्तिका जहां बच्चे अपने मन अनुसार रंगो भरते हैं, और कार्य करते हैं

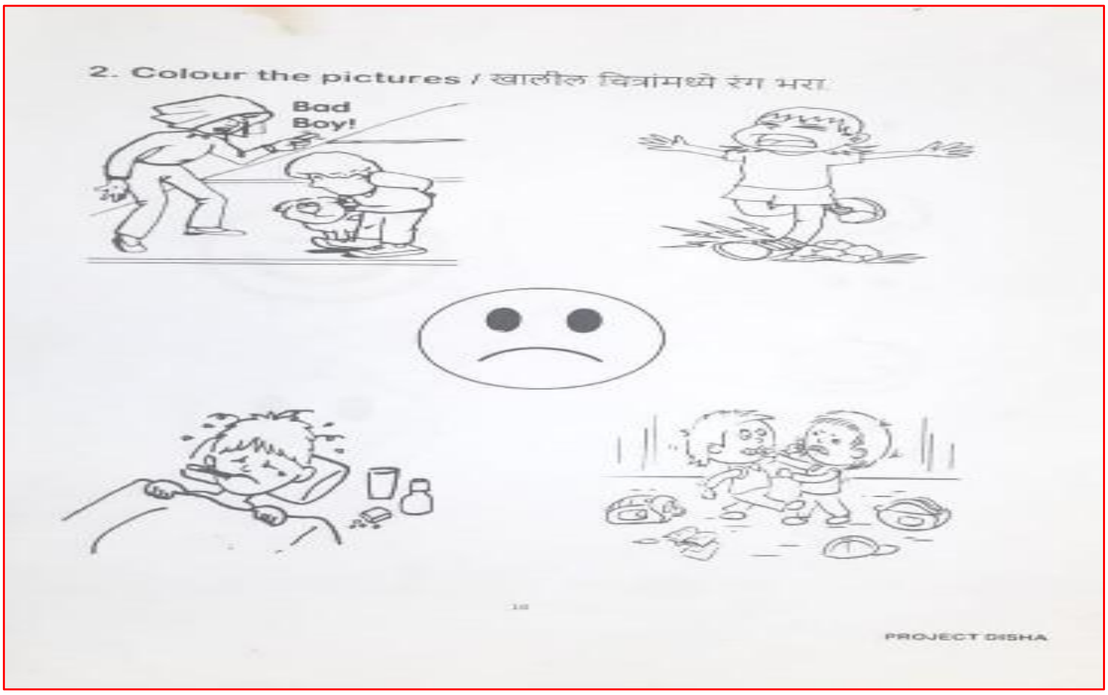

चित्र 4.11 सामाजिक विज्ञान या E. V. S (एनवायरनमेंटल स्टडीज़) चित्रित पुस्तक

सामाजिक विज्ञान या E. V. S (एनवायरनमेंटल स्टडीज़) एक ऐसा विषय है जहाँ बच्चों को खुशी और दुख जैसे अलग-अलग हालात के बीच का फर्क समझना सिखाया जाता है।

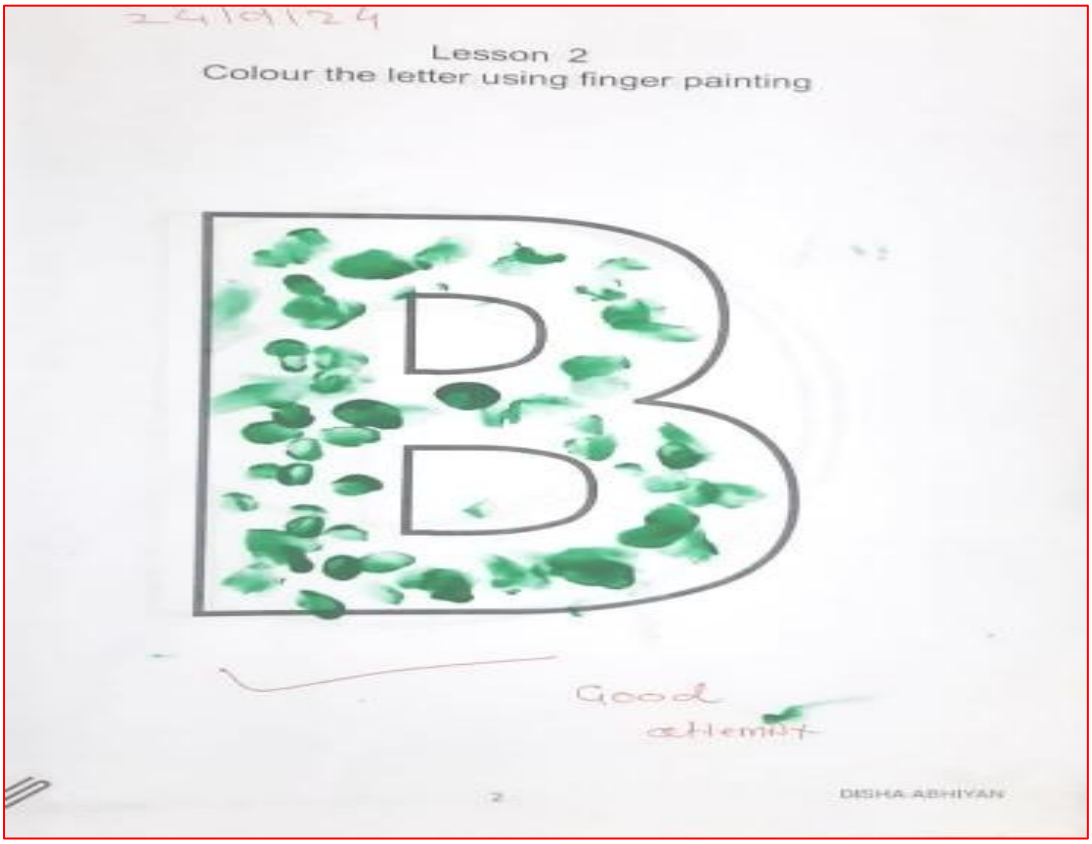

चित्र 4.12 अल्फाबेट चित्रित पुस्तिका

यह अल्फाबेट चित्रित पुस्तिका है, जिसमें बच्चों को फिंगर पेंटिंग करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, जिसे सेंसरी समस्याओं वाले बच्चों के लिए बहुत ही सही एक्टिविटी माना जाता है।

बच्चे अपनी पसंद के अनुसार रंग चुनते हैं, और टीचर और सहायक टीचर उनके हाथों पर रंग लगाते हैं। एक्टिविटी के बाद, उनसे मौखिक रूप से रंग और जिस अक्षर को उन्होंने रंगा है, उसका नाम बताने के लिए कहा जाता है, और ज़रूरत पड़ने पर मदद भी दी जाती है। इस एक्टिविटी के बाद, किसी भी इन्फेक्शन से बचने और साफ़-सफ़ाई बनाए रखने के लिए बच्चों के हाथ अच्छी तरह से धोए जाते हैं।

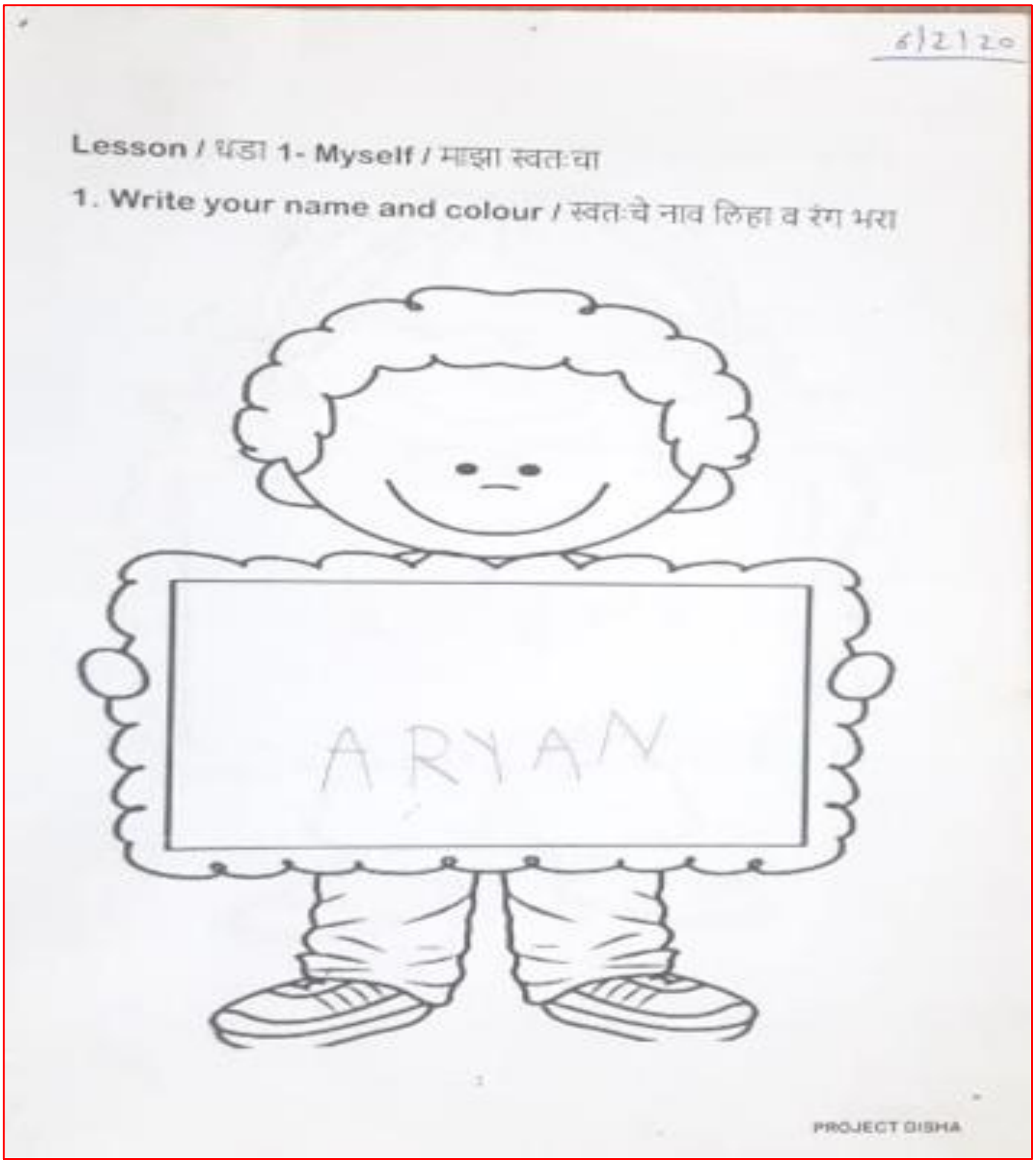

चित्र 4.13 सचित्र और लिखित पुस्तक

यह एक सचित्र और लिखित पुस्तक है।जिसमें बच्चों को रंग भरने और कुछ वाक्य लिखने का अभ्यास करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। इस वर्कबुक में, बच्चे एक शब्द लिख सकते हैं, जैसे कि अपना नाम, अपने माता-पिता का नाम, या बस "मम्मी" और "पापा"।

इस शिक्षण गतिविधि के द्वारा बच्चे अपने आपको प्रोत्साहित महसूस करते हैं। जहाँ माता-पिता से सम्बन्धित कार्य करने की बात आती है, तो प्रश्न पूछे जाने पर वह कल्पनाओ में गोते लगाना शुरू कर देते हैं। जब शिक्षिका उनसे कुछ निजी प्रश्न पूछती हैं जिससे वह उसी प्रश्न से जुड़े उत्तर का सोच समझ कर भिन्न-भिन्न प्रतिक्रिया देते है। कभी चित्रों के माध्यम से अपनी कल्पनों को काजग पर उकेर देते।

चित्र 4.14 दोपहर का भोजनावकाश

चित्र 4.15 दोपहर का भोजनावकाश जहां कल्पना मैम श्रावणी को उसका लंचबॉक्स पैक करने में मदद करती हुई ।और उसे अपनी तय जगह पर रखने का निर्देश देती हुई। (मध्य मे श्रावणी)

दोपहर का भोजनावकाश का समय जहां पर बच्चों को सही तरीके से व स्वयं भोजन करना सिखाया जाता हैं। बच्चे खाना खाने से पहले हाथ धोने जाते हैं। फिर टेबल पर रुमाल या टेबल मेट बिछा कर खाना खाया सिखाया जाता है। खाने के उपरान्त भी हाथ धुलवाए जाते है तथा बच्चो को अपना लंच बॉक्स स्वयं पैक करने के लिए कहा जाता हैं व इस कार्य में उनकी मदद की जाती है।

बच्चों से घर पर भी ऐसे ही काम करने की उम्मीद की जाती है, जिससे उनमें अपने छोटे-मोटे काम पूरे करने की ज़िम्मेदारी की भावना आती है और उन्हें लगातार दिशा निर्देश से बच्चे अपना कार्य के बिना दूसरो की मदद के खुद से काम शुरू करते हैं, और अन्य कार्य पूरा करने का हौसला मिलता है।

चित्र 4.16 कॉलेज के छात्रों ने एक रेस कॉम्पिटिशन का आयोजन, जिसमें शिवांश ने भी हिस्सा लिया। (दाई ओर से प्रथम उत्साहित मुद्रा में शिवांश)

विद्यालय में समय-समय पर बच्चों के शारीरिक विकास के लिए विभिन्न तरह के कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। जिसमें 100 मीटर रेस म्यूजिक चेयर, लेमन रेस इत्यादि सम्मिलित रहते हैं। जिसमें कई बार म्यूजिक व डांस का भी आयोजन किया जाता है जहां बच्चे आयोजन का भरपूर आनंद लेते हैं।तथा उन्हें उनकी छोटी-छोटी उपलब्धियो पर सम्मानित भी किया जाता है। इससे वह गर्वीत महसूस करते हैं।

माता-पिता को अक्सर इस प्रतियोगिता में शामिल किया जाता है। ताकि वे अपने बच्चों की गतिविधियाँ में हिस्सा ले सकें और उन्हें बढ़ावा दे सकें। माता-पिता एक मजबूत स्तम्भ की तरह अपने बच्चों के साथ खड़े रहते है। माता-पिता की भागीदारी से बच्चे भावात्मक रूप से ज़्यादा मज़बूत बनते हैं और वे अपनी सफलताओं और असफलताओं दोनों को पूरी तरह से सकारात्मकता रूप में देख पाते हैं।

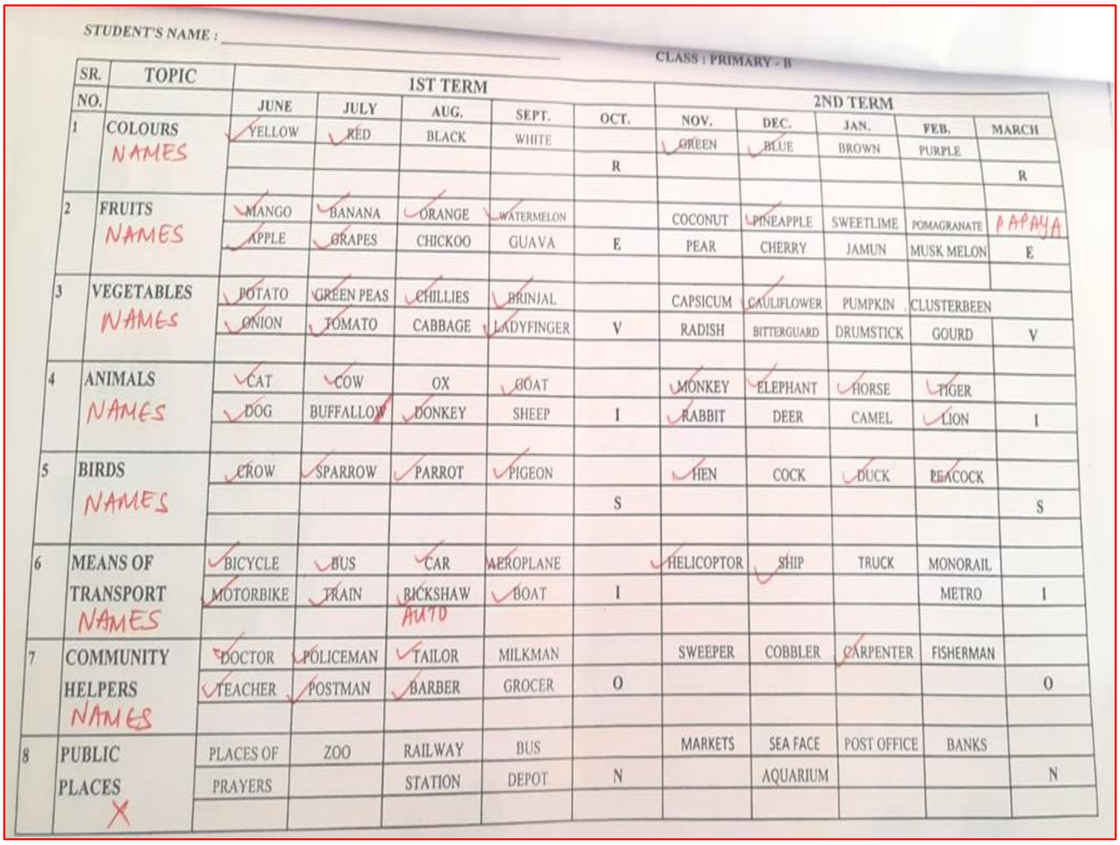

STUDENT'S NAME :

CLASS : PRIMARY - B

SR. NO.	TOPIC	1ST TERM JUNE	JULY	AUG.	SEPT.	OCT.	2ND TERM NOV.	DEC.	JAN.	FEB.	MARCH
1	COLOURS NAMES	YELLOW	RED	BLACK	WHITE	R	GREEN	BLUE	BROWN	PURPLE	R
2	FRUITS NAMES	MANGO APPLE	BANANA GRAPES	ORANGE CHICKOO	WATERMELON GUAVA	E	COCONUT PEAR	PINEAPPLE CHERRY	SWEETLIME JAMUN	POMAGRANATE MUSK MELON	PAPAYA E
3	VEGETABLES NAMES	POTATO ONION	GREEN PEAS TOMATO	CHILLIES CABBAGE	BRINJAL LADYFINGER	V	CAPSICUM RADISH	CAULIFLOWER BITTERGUARD	PUMPKIN DRUMSTICK	CLUSTERBEEN GOURD	V
4	ANIMALS NAMES	CAT DOG	COW BUFFALLOW	OX DONKEY	GOAT SHEEP	I	MONKEY RABBIT	ELEPHANT DEER	HORSE CAMEL	TIGER LION	I
5	BIRDS NAMES	CROW	SPARROW	PARROT	PIGEON	S	HEN	COCK	DUCK	PEACOCK	S
6	MEANS OF TRANSPORT NAMES	BICYCLE MOTORBIKE	BUS TRAIN	CAR RICKSHAW AUTO	AEROPLANE BOAT	I	HELICOPTOR	SHIP	TRUCK	MONORAIL METRO	I
7	COMMUNITY HELPERS NAMES	DOCTOR TEACHER	POLICEMAN POSTMAN	TAILOR BARBER	MILKMAN GROCER	O	SWEEPER	COBBLER	CARPENTER	FISHERMAN	O
8	PUBLIC PLACES X	PLACES OF PRAYERS	ZOO	RAILWAY STATION	BUS DEPOT	N	MARKETS	SEA FACE AQUARIUM	POST OFFICE	BANKS	N

चित्र 4.17 बच्चों का फर्स्ट टर्म और सेकंड टर्म का मूल्यांकन ।

• **स्कूल द्वारा किया गया मूल्यांकन -** बच्चों की शिक्षा संबंधी मूल्यांकन उनकी मानसिक स्तर तथा उनकी विषय संबंधी दक्षता को देखकर किया जाता है ।

फर्स्ट टर्म तथा सेकंड टर्म में हर महीने बच्चों से विभिन्न तरह के रंगों, फलो के, सब्जियों के, जानवरों के, पक्षियों तथा यातायात के साधन और कम्युनिटी हेल्पर्स इत्यादि के बारे में बताया जाता है । इसने संबंदित प्रश्न पूछ कर बच्चो की शिक्षा का मूल्यांकन किया जाता है। आवश्यक होने पर माता- पिता से संपर्क कर उन्हें बच्चों की प्रगति से अवगत किया जाता है।

मूल्यांकन का मुख्य आधार एक ही पृष्ठ भूमि के प्रश्न को विभिन्न तरीकों से पूछना होता है तथा कई बार लिखना भी होता है।यदि बच्चे किसी तरह से असुविधा का सामना करते हैं तो उनके सामने विभिन्न रंगों या विभिन्न वस्तुओं को रख करके से सही उत्तर की ओर इशारा के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

सब बच्चों से मिलने के बाद उनकी मेडिकल फाइल जांचने के बाद कुछ बच्चे शोध कार्य के लिए बिल्कुल उचित लगे, जिनमें ऑटिज्म के लक्षण थे। इन बच्चों की उम्र 4 से वर्ष से लेकर 14 वर्ष के मध्य हैं ।सभी बच्चो के पास भारत सरकार द्वारा मेडिकल प्रमाणपत्र है किन्तु सभी के लक्षण एक दूसरे से भिन्न हैं।

चयनित बच्चों के नाम क्रमशः

क्र.सं.	विद्यार्थी का नाम	विद्यार्थी की आयु	विकलांगता प्रमाण पत्र संख्या	आटिज्म का %
1.	अवधूत	4 से 6 वर्ष के मध्य	MH2390120180361932	50%
2.	श्रावणी	4 से 6 वर्ष के मध्य	MH2390120170333559	50%
3.	आरव	6 से 10 वर्ष के मध्य	MH239012017032511	50%
4.	हम्माद हुसैन शैख़	6 से 10 वर्ष के मध्य	MH4890120170006747	70%
5.	शिवांश	10 से14 वर्ष के मध्य	MH2390120130307266	With Multipule disablility
6.	मुहम्मद शीज़ान शेक	10 से14 वर्ष के मध्य	MH4890020160013056	With Multipule disablility

शोध कार्य शुरू करने से पहले शोध करके एक रूपरेखा बनाई गई जिसमें बच्चों के अनुसार विभिन्न विषयों को सम्मिलित करके एक प्रारूप बनाया गया।बच्चों से जान पहचान के बाद उनके लिए एक पाठ्यक्रम का निर्धारण करना था जिसके हिसाब से वह कार्य कर सकें।

उसी अनुसार बच्चों के पहले के कार्य में और अभी के कार्यों में तुलनात्मक अध्ययन भी सम्मिलित किया गया।

इस शोध कार्य में अध्ययन के लिए उन्हें आयु के अनुसार तीन वर्गों में बांटा गया जो 4 से शुरू होकर 14 वर्ष तक के आयु के बच्चों पर है यहां पर प्राथमिक कक्षा के बच्चों के लिए सर्वप्रथम यह ध्यान में रखा गया।

प्रारंभिक शिक्षा सभी बच्चो के विकास के लिए महत्वपूर्ण होता हैं। वही ऑटिस्टिक बच्चो के लिए यह अत्यधिक आवश्यक है। उनकी प्रारंभिक शिक्षा का उनके जीवन पर बहुत गहरा असर पड़ता हैं ।सही मार्गदर्शन किसी भी बच्चे के भविष्य का निर्धारण करती है।इस आयु में बच्चो को मोटर एक्टिविटी ज्यादा करवाई जाती है। ताकि वह अपनी इन्द्रियों का और अंगो का उपयोग अधिक से अधिक कर सके।

दृश्य कला और प्रदर्शन कला के द्वारा वह अपनी भावनाओं को शब्द के द्वारा ही अधिकतर व्यक्त करते हैं।रंगों और वस्तुओं के प्रयोग से उनके जीवन में सुरक्षा का भाव उत्पन्न होता है।कला के ही द्वारा सीखने का एक सकारात्मक वातावरण बन पाता हैं ।जो आयु के इस पड़ाव पर उनकी शिक्षा में कला उपयोगी सिद्ध होती हैं।

- **शोध परिकल्पना**

कार्यात्मक शोध परिकल्पना में 4-6 वर्ष की आयु के विद्यार्थियों को कला के विभिन्न माध्यम से शिक्षा देने का निर्णय किया गया। जहाँ पर ऑटिस्टिक बच्चें सामान्य बात भी आसानी से समझ नही पाते इस कारण पर उन बच्चों को शिक्षण कार्य देते समय निम्न बिंदुओं का पूर्ण तरह ध्यान रखा गया।

1. लघु समय अवधि - कार्य की समय सीमा कम रखी गई हैं।कम समय सीमा की वजह से बच्चें अपना कार्य जल्दी समाप्त कर लेते हैं।

2. सरल कार्य- कार्य को सरल और सुगम बनाया जाता हैं।जिससे कार्य में रूचि बनी रहे और वह अपना कार्य को आनंद पूर्वक कर सके।

3. नियंत्रित कार्य- बच्चों को दिया गया कार्य में नियंत्रित (कम) दिशा निर्देश दिए जाते हैं, इसकी बच्चें ज्यादा विचलित नहीं होते। दूसरी और उनको कार्य जल्दी समाज में आ जाता है।

4. मोटर कौशल- हाथ और मस्तिष्क के ताल- मेल के लिए मोटर कौशल का उपयोग किया जाता रहा हैं।जिससे वह अपनी क्षमताओं का पूरी तरह उपयोग कर सके।अपनी शोध में यह परिकल्पना की गई कि शिक्षा में दृश्य कला और प्रदर्शन कला का उपयोग अधिक से अधिक किया जाए, जिससे शिक्षण अधिगम आसान हो जाए।

इन सभी बिंदुओं को ध्यान में रखते हुए, बच्चों की आयु के अनुसार लघु पाठ्यक्रम का निर्धारण किया गया, जिसमें आयु और योग्यता का ध्यान रखकर शिक्षण कार्य किया गया।ऑटिस्टिक बच्चो कि स्थिति अनुसार उनके लिए पाठ्यक्रम का चुनाव किया गया, जो क्रमश है।

4.1.1. भाषा का बोध

4.1.2. सामान्य गणित

4.1.3. तार्किक समस्या

4.1 4 से 6 वर्ष की आयु के मध्य कार्यात्मक अध्ययन

अवधूत और श्रावणी कल्पना जी की कक्षा में ही पड़ते हैं। अवधूत और श्रावणी दोनों को ही ऑटिज्म है किंतु कुछ समानताओं के बावजूद भी दोनों में काफी भिन्नता है।

अवधूत और श्रावणी के शारीरिक संरचना तथा मानसिक स्तर काफी भिन्न है। अवधूत जहां नॉनवर्बल है।वही श्रावणी भी नॉनवर्बल बालिका है, किंतु अवधूत नॉन वर्बल (अशाब्दिक) के साथ आई कांटेक्ट (आँखों का संपर्क) बनाने में काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। वह व्यक्ति के साथ सुरक्षित महसूस नहीं करता ।किंतु अपनी टीचर के साथ तथा अपनी मां और पिता के साथ उसके व्यवहार काफी घनिष्ठ है। जिसकी वजह से उनके द्वारा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर वह काफी जल्दी दे देता है।

अवधूत का जन्म एक मराठी परिवार में हुआ है। अवधूत घर में अपनी मां के सबसे अधिक करीब है, वह दो भाई है तथा इनका परिवार एक माध्यमिक वर्ग का परिवार है। अवधूत की मां अवधूत के मानसिक विकास व शारीरिक विकास के लिए शिक्षिका द्वारा दिये गए सारे दिशा निर्देश का पालन करती हैं। उनसे बात करने के पश्चात यह ज्ञात हुआ कि आज भी महानगरों की सामाजिक स्थिति गांव से भिन्न नहीं है। अवधूत को उसके पड़ोस में रहने वाले लोग तारे जमीन पर कहकर चिढ़ाते, किंतु ऑटिस्टिक होने की वजह से न तो उसे कुछ समझ आता न ही उनकी बातो पर वह कुछ प्रतिक्रिया दे पता ।किंतु अवधूत की माँ को काफी बुरा लगता।

बातचीत में आगे बताते हुए कहती है, की उसी समाज में रहते हुए बिना किसी कारण हमारा परिवार हास्य का पात्र बनता हैं किंतु अब उनको आदत सी हो गई हैं की उनकी बातो की नज़र अंदाज करके सदैव अपनी बच्चे की प्रगति तथा भलाई के सदैव कार्य करती रहती है और यूट्यूब पर आने वाले विभिन्न तरह के ऑटिस्टिक प्रोग्राम को समय-समय पर देखती साथ ही साथ अपने बच्चे लिए बेहतर तरीका सोच कर उसका प्रयोग अवधूत पर करती हैं तथा थैरेपिस्ट द्वारा बताए गए तरीके व कुछ नए तरीकों को का भी भली प्रकार उपयोग करती है।

कक्षा में अवधूत नियमित रूप से आता है तथा अपना कार्य समय पर करने की कोशिश करता रहता है और अवधूत के मुख्य लक्षण यह है, कि वह नॉनवर्बल, उसे आई कांटेक्ट में दिक्कत का सामना करना पड़ता तथा उसका कंसन्ट्रेशन भी काफी कमज़ोर हैं। केवल वह कलर करने में खेलने में अधिक रुचि दिखता है।

अवधूत बहुत अंतर्मुखी और कम बोलने वाला बच्चा है, इसलिए पहली मुलाकात में वह मुझसे बात करने में सहज नहीं था, और वह तब भी बात नहीं कर पा रहा था जब शोध कर्ता उससे कार्यात्मक गतिविधियाँ करवा रही थी तब भी वह बातो का जवाब नहीं दे पता था बस मुस्कुराकर देता था।

चित्र 4.18 अवधूत के द्वारा कार्यात्मक अध्ययन करते हुए

दूसरी छात्रा श्रावणी का जन्म भी एक मराठी संगठित परिवार में हुआ। जहां उसकी परवरिश अच्छी तरह से की गई। श्रावणी के ऑटिस्टिक होने के बारे में परिवारवालो को तब पता चला जब वह केवल दो साल की थी।वह नॉन वर्बल हैं। किन्तु ऑय कांटेक्ट (Eye Contact) बिलकुल ठीक हैं। उसको चूड़ियाँ पहनना बहुत पसंद है, साथ ही डांस करना अच्छा लगता हैं ।श्रावणी को दादा जी लेने और छोड़ने आते हैं। वह काफी ज़िंदादिल लड़की हैं।

श्रावणी को फ़ास्ट फ़ूड खाना बहुत पसंद हैं। पर वह दुसरो की तुलना में खाना जल्दी खा लेती है।किन्तु उसे एक समस्या का सामना हमेशा करना पड़ता हैं कि नॉन वर्बल होने की वजह से वह बोलने का भरसक प्रयास करती है किंतु शब्द उच्चारण जीभ के द्वारा सही से नहीं हो पता है और वह अपनी भावनाओ को केवल इशारो के द्वारा ही दुसरो को प्रेक्षित कर पाती हैं।

श्रावणी और अवधूत दोनों को घड़ी में समय देखना नहीं आता है।किन्तु वह अपनी मेन्टल क्लॉक का अच्छी तरह से उपयोग करते है। स्कुल में आने व जाने समय भली प्रकार आता है। जब उनके माता पिता उनको स्कूल से लेने आने में देर हो जाते तब उन्हें स्वतः ही पता चल जाता है और वह दरवाज़े के पास आकर खड़े हो जाते हैं।

4.1.1 भाषा-बोध का कार्यात्मक अध्ययन

चित्र 4.19 कार्य करते हुए अवधूत

चित्र 4.20 कार्य में सहयोग करते शोधकर्ता

कला का इस्तेमाल करके, बच्चों को सबसे पहले इंग्लिश अल्फाबेट ट्रेस करने के लिए कहा गया। यह काम इसलिए दिया गया क्योंकि यह कुछ ऐसा है जो वे नियमित रूप से करते हैं। किन्तु उसका आकर कुछ बड़ा दिया जाता जिससे उनका मोटर स्किल्स बढ़ जाय और उनको अपने पसंदीदा रंग का चुनाव कर कार्य करने की छूट दी जिसकी वजह से वह आनन्दित होकर कार्य करने लगे। चित्र 4.19 और चित्र 4.20 में अवधूत कार्य करते हुए दर्शाया गया है ।

चित्र 4.21 सभी बच्चों के साथ कार्य करते हुए सहयोग कर्ता

चित्र 4.22 शोध कर्ता का सहयोग करते हुए कल्पना जी

चित्र 4.23 बच्चों को दिशा निर्देश देते हुए शोध कर्ता

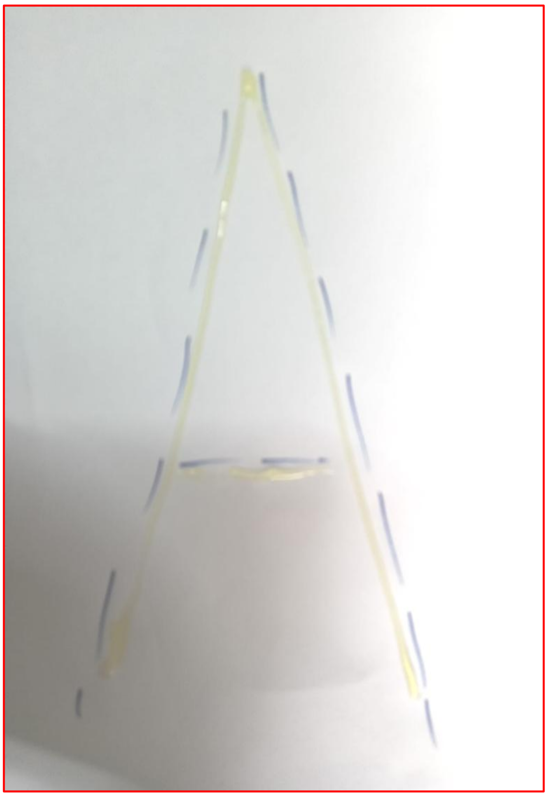

चित्र 4.24 ए अल्फाबेट की ट्रेसिंग

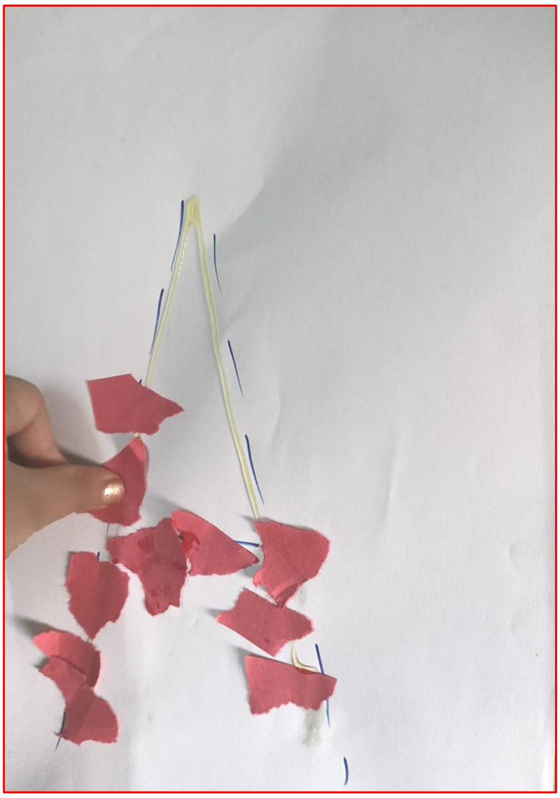

चित्र 4.25 बच्चों द्वारा ट्रेसिंग के ऊपर कागज चिपकाने का कार्य

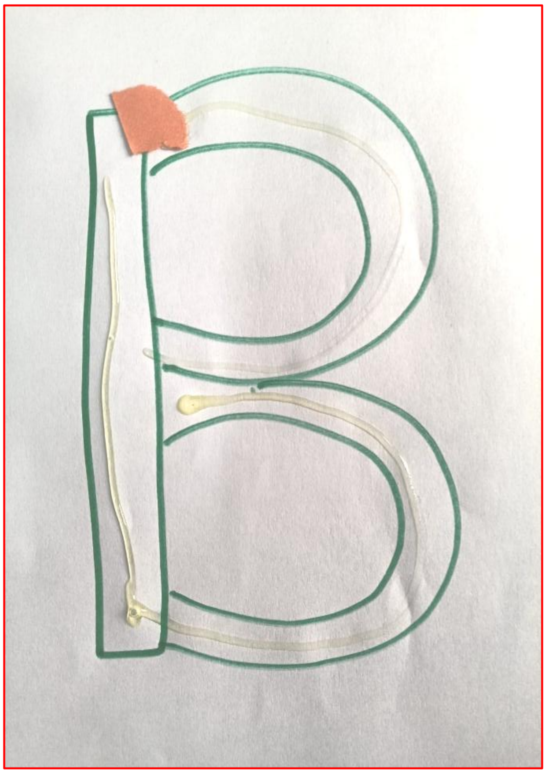

चित्र 4.26 बी अल्फाबेट की ट्रेसिंग

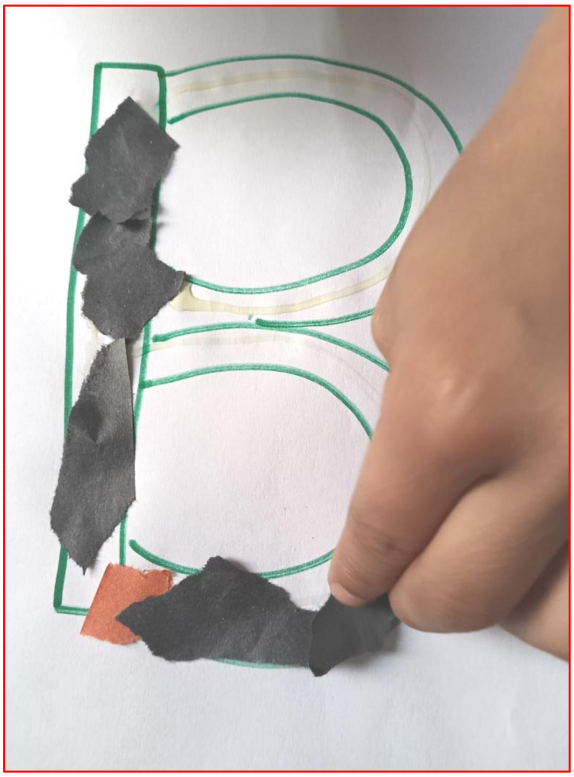

चित्र 4.27 बच्चों द्वारा ट्रेसिंग के ऊपर कागज चिपकाने का कार्य

चित्र 4.18 और चित्र 4.19 में अवधूत कार्य करते हुए दर्शाया गया है। कार्य करते समय अवधूत को पास सट कर बैठना और हाथ पकड़ कर बैठना काफी पसंद हैं।

कार्य की समय सीमा काफी कम रखी गई थी जिससे बच्चे शुरुआती समय में सहज महसूस कर सके तथा अपना कार्य सरलता से पूर्ण कर पाए।

इसी कार्य को प्रदर्शन कला और दृश्य कला दोनों को सम्मिलित करके करने का प्रयास किया गया जहां पर बच्चों को लाल रंग के कागज फाड़ने के लिए दिए गए।बच्चे बड़ी खुशी इस कार्य को करने के लिए तैयार हो गए क्योंकि यह उनके पसंदीदा कम रहा होगा। एक टोकरी तैयार की गई जिसमें उनको निर्देश दिए गए की सभी बच्चे लाल रंग के छोटे-छोटे कागज के टुकड़े करके उसमें इकट्ठा करेंगे फिर जहां उन्होंने ए (A) बनाया है। उसके ऊपर वह कागज को चिपकाएंगे किसी किसी बच्चों ने काले रंग का उपयोग भी किया जैसे चित्र संख्या 4.20, 4.21, 4.22 में देखा जा सकता है।अवधूत काफी नजदीक था,वह लगभग सो ही गया था। हर बच्चा अपनी शिक्षिका को माँ समाझता है।

लाल रंग काफी ऊर्जावान है तथा यह क्रियाशीलता को दर्शाता है। लाल रंगअवधूत के द्वारा चुना गया था, जो यह दर्शाता है शायद वह थोड़ा कम ऊर्जावान महसूस कर रहा होगा और ऊर्जा की आवश्यकता के कारण ही वह शोधकर्ता के काफी नजदीक आकर बैठा था दूसरी ओर लाल रंग का चुनाव शरीर के अंदर हीमोग्लोबिन की मात्रा की कमी को दर्शाता है।

जहां तक बात की जाए आत्मविश्वास की तो ऐसे व्यक्ति को अपनी भावनाएं व्यक्त करने के लिए दूसरों के ऊपर निर्भर होने की पड़ता है, उनमें आत्मविश्वास थोड़ा कम रहता है।

वहीं अगर बात की जाए तो, श्रावणी की पिक्चर क्लिक करना उसके लिए एक प्रेजेंटेशन होता था वह डांस करना शुरू कर देती थी। वह भी बिना म्यूजिक के उसकी कार्य करते हुए सीधी पिक्चर ना लेकर सिर्फ कार्य की ही पिक्चर ली गई है, क्योंकि वह थोड़ी चंचल स्वभाव की है। उसके लिए पिक्चर क्लिक करना यानी डांस करना या फिर सीधी मुद्रा में खड़े हो जाना था।

जो कि किसी भी छोटे बच्चों की मानसिक स्थिति के लिए के हिसाब से सही था ।छोटे बच्चों को फोटो क्लिक करने का मतलब किसी खास मौका जैसे जन्मदिन

शादी डांस इत्यादि के बारे में ही याद दिलाता है, तो श्रावणी ने यह साफ कर दिया कि अगर आपको फोटो क्लिक करनी है, तो आपको उसका नृत्य देखना पड़ेगा।

श्रावणी को भी अवधूत के समान कार्य दिया गया था।कार्य करते समय श्रावणी ने काले रंग का चुनाव किया जो की स्थिरता और अवशोषण को दर्शाता है यह गुण काफी हद तक गंभीरता को भी दर्शाता है, तथा यह एकाग्र रहता है।जिस तरह श्रावणी ने मेरी पूरी बात अच्छे से समझी और अपना सिर हिला कर सहमति दी, कि वह सब समझ गई है। यहां पर यह साफ हो जाता है कि वह नॉनवर्बल होकर भी दिए गए दिशा निर्देशों का सही तरह से पालन कर सकती है।

चित्र 4.28 प्लेट में रखी हुई सूजी

चित्र 4.29 बच्चों द्वारा खींची गई रेखा

श्रावणी और अवधूत दोनों ही थोड़े सेंसिटिव कैटेगरी में आते हैं इसलिए उनके साथ थोड़ी मोटर एक्टिविटी जो सेंसटिविटी पर आधारित थी कि गई।

इस क्रिया के लिए एक थाली में थोड़ी सी सूजी ली गई। जिसके दाने थोड़े मोटे थे, छूने पर यह थोड़ा छुपाने का एहसास एहसास दिलाती थी यहां पर शोध कर्त्ता ने उन्हें नियम कम समझे तथा प्रदर्शित रूप में ज्यादा समझने का प्रयास किया, यह प्रदर्शन कला का एक माध्यम है कि आप दिशा निर्देश काम देंगे, प्रदर्शन को अधिक रखेंगे ताकि बच्चा आपको देखकर सीख सके यहां पर उन्हें किसी भी तरह का आकार बनाने का पूर्ण स्वतंत्रता प्रदान की गई।

चित्र 4.30 बच्चों द्वारा बनाया गया ए अल्फाबेट

चित्र 4.31 बच्चों द्वारा बनाया गया ओ अल्फाबेट

चित्र संख्या 4.28 से 4.31 में यह प्रदर्शित हो रहा हैं, कि बच्चों ने यह क्रिया करते समय काफी आनंद लिया तथा थोड़ी बहुत सूजी को इधर-उधर फेक भी दिया ।किंतु उन्हें यह कार्य करते हुए स्वतंत्रता का अनुभव हुआ और उन्होंने शोध कर्ता द्वारा दिए गए निर्देशों का उन्होंने अच्छी तरह पालन किया तथा सेंसरी इशू होने की वजह से उन्होंने सूजी के दानों को अपनी उंगलियों से महसूस किया तथा उसका आनंद लिया ।जहां पर कार्य के साथ आनंद जुड़ जाता है, वहां पर शिक्षा सरल तथा सुगम बन जाती है।

4.1.2. सामान्य गणित

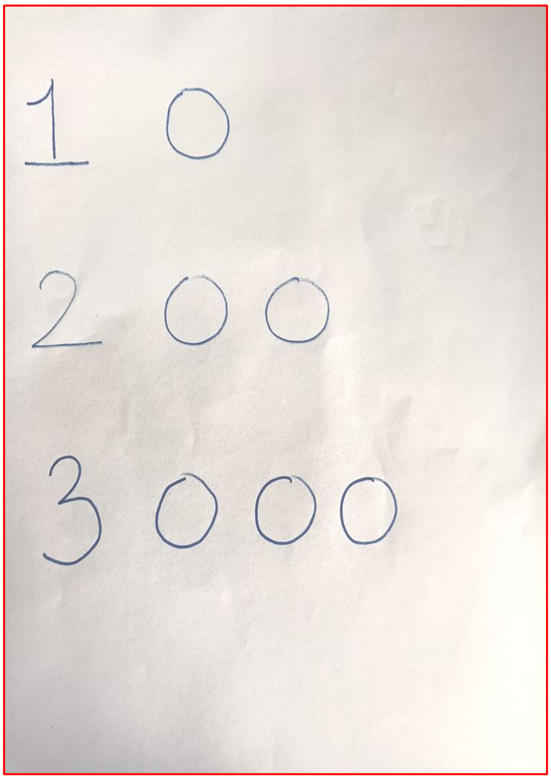

चित्र 4.32 संख्या ज्ञान

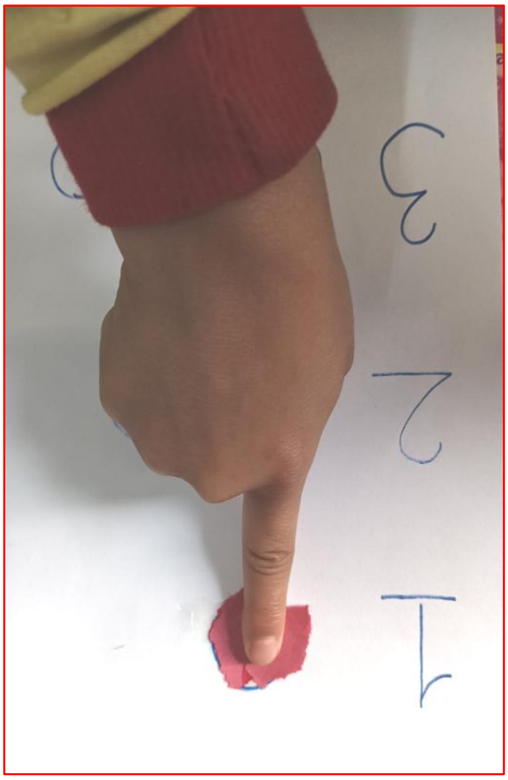

चित्र 4.33 संख्या पहचान

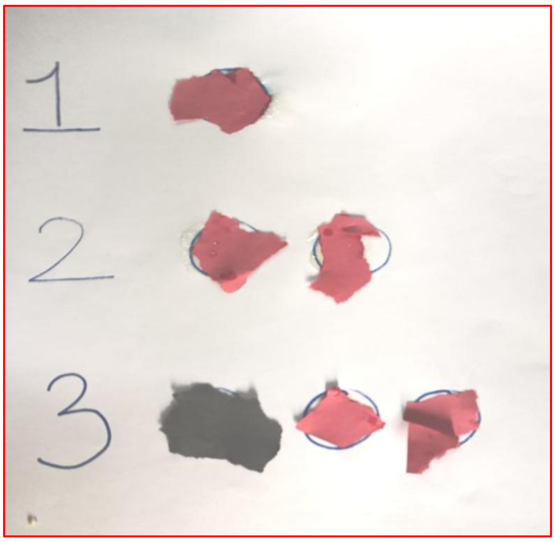

चित्र 4.34 बच्चों द्वारा संख्या पहचना करके पूर्ण किया गया कार्य

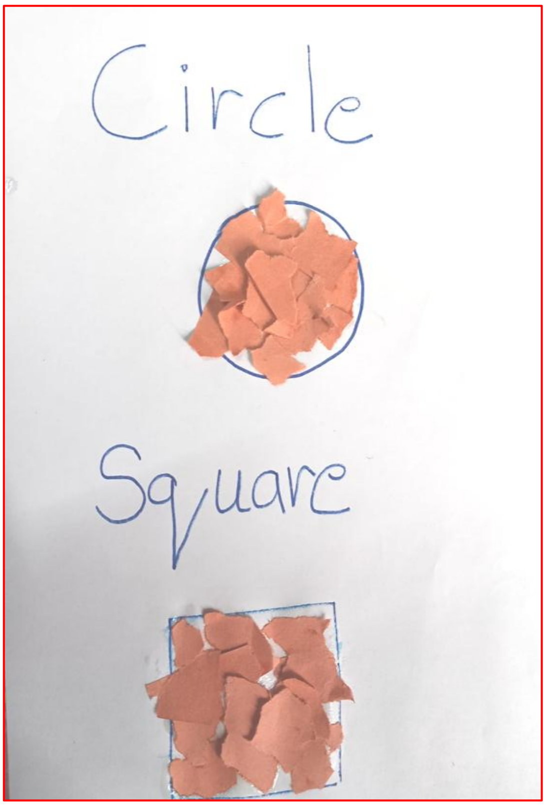

चित्र 4.35 वृत और वर्ग की पहचान **चित्र 4.36 वृत और वर्ग का पूर्ण कार्य**

प्राथमिक शिक्षा में बच्चों के लिए गणित को समझने का काफी सरल माध्यम रखा गया ।जिससे कि वह आसानी से अंक और उसके मूल्यांकन का आकलन कर सके तथा विभिन्न आकारों को समझ सके ।शोध कर्त्ता ने इस कार्य के लिए बच्चों को पुनः कागज फाड़कर चिपकाने का कार्य दिया क्योंकि उन्होंने पहले भी इस कार्य को अधिक सरलता से समझा था।

चित्र संख्या 4.32 से 4.34 तक यह देखा जा सकता है, कि बच्चों को 1 से लेकर 3 अंक तक के सामने गोल बनाए गए, जहां पर बच्चों को अंक के अनुसार मूल्यांकन करके कागज के छोटे टुकड़े चिपकाने थे।

चित्र संख्या 4.35 से 4.36 में बच्चों को वृताकार और वर्ग की आकृति बनाकर दी गई तथा निर्देश दिए गए कि इस आकृति को पूरी तरह छोटे-छोटे कागजों से चिपकाकर भर दे। आकृति के बारे में उनसे प्रश्न पूछे गए। दी गई आकृति कक्षा में उन्हें कहां-कहां दिखाई देती है। किसी ने घड़ी की और इशारा किया और किसी ने ब्लैकबोर्ड की ओर इशारा किया। जो वर्ग और वृतकार की आकृति को प्रदर्शित करता है।

यह काम पूरी तरह से दृश्य कला और प्रदर्शन कला पर निर्भर करता है, इसलिए छात्र इसे आसानी से सीख सकते हैं, जैसा कि आप ऊपर दिए गए उदाहरण में देख सकते हैं, कि वे सीखने का आनंद लेते हैं और वे इसे अपने तरीके से सीखते हैं क्योंकि वे बोल नहीं पाते हैं क्योंकि उन्हें कुछ तंत्रिका संबंधी समस्या है।

जब शोधकर्ता उनसे विभिन्न आकृतियों और आकारों के बारे में पूछते हैं, तो वे मौखिक रूप से उत्तर देने में सक्षम न होने के बावजूद एकदम सही उत्तर देते हैं।

चित्र 4.37 रोटी बेलते हुए बच्चें

चित्र 4.38 आटे से खेलते हुए

चित्र 4.39 मटर छिलते हुए बच्चे

चित्र 4.40 मटर खेलते हुए बच्चे

कुछ बच्चों को शोध कर्ता ने मोटर स्किल सीखने का सबसे आसान व घरेलु तरीका सिखाया कि जब माँ घर में रोटी बनाती है, तो बच्चा भी रोटी बनाने की ज़िद करता है। बच्चो को किसी भी कार्य को करने से रोकना ।एक नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है। फ़ोन देकर बच्चे को वयस्त करने के बजाय बच्चों को अपने साथ इस तरह कि क्रियात्मक कार्यों में बच्चों को सहयोगी बनना चाहिए।उदाहरण के लिए बच्चें मैथी, मटर आदि आसानी से छील लेते हैं।

हाथों के द्वारा किया सभी कार्य मोटर स्किल में गिने जाता हैं। बच्चों अपने हाथों से जब यह कार्य करते हैं, तो उनके छोटे-छोटे उंगलियां काफी मजबूत हो जाती हैं लिखने और पढ़ने के लिए, इसलिए मोटर स्किल्स छोटे बच्चों में काफी उपयोगी सिद्ध होते हैं।

4.1.3. तार्किक समस्या

चित्र 4.41 तार्किक समस्या

चित्र 4.42 तार्किक समस्या

यहां पर एक गत्ते के डब्बे का इस्तेमाल किया गया है जिसके ऊपर कई सारे धागे लपेट दिए गए हैं या कुछ तरीके से सिल दिए गए हैं।जिस में से किसी छोटे बच्चे का हाथ ही जा सकता है। यहां पर समस्या यह थी कि इन भागों के नीचे रंगीन चॉक और चॉकलेट्स रखी हुई थी।

चित्र 4.43 बॉक्स को देखते हुए बच्चे

चित्र 4.44 बॉक्स को छूकर अनुभव करते हुए बच्चे

रोचक बात यह थी, कि किसी भी बच्चों को कोई दिशा निर्देश नहीं दिए थे। बस उनके सामने यह बॉक्स रख दिया गया था। अब देखना यह था कि कौन सा बच्चा किस तरीके से प्रतिक्रिया देता है।

पहले बच्चों ने उस बॉक्स को उल्ट-पुलट कर कई बार देखा और फिर उसे जाली के बीच में से हाथ डाला और अपने पसंद कर लियाऔर उसको निकाल कर मेरे हाथ में रख दिया। निःशब्द होकर भी कह रहे हो की देखो हमने से हल कर लिया।

चित्रा संख्या 4.43 में दिखाई दे रहा है, कि बच्चे डोरियों से बॉक्स को ऊपर नीचे पकड़ कर देख रहे हैं और जांच रहे कि यह है क्या?

चित्र 4.45 बच्चों का ध्यान आकर्षित करते हुए शोधार्थी

चित्र 4.46 बच्चों का ध्यान आकर्षित करते हुए शोधार्थी

चित्र 4.47 कार्य करते हुए बच्चें **चित्र 4.48 कार्य करते हुए बच्चें**

अवधूत को इसे हल करने में किसी भी तरह की परेशानी का सामना नहीं करना पड़ा उसने सीधे बॉक्स को देखा और उसके ऊपर लगी डोरियों को सहलाया ।

फिर उसने अंदर हाथ डालकर अपनी पसंदीदा चॉकलेट निकाली और मेरी इजाजत के लिए और मेरी और देखने लगा, कि क्या मैं इसे खा सकते है। मैंने मुस्कुरा दिया और पुरस्कार स्वरूप उसे वह चॉकलेट दे दी।

चित्र 4.49 जानकारी प्राप्त करते हुए बच्चें

वहीं दूसरी श्रावणी ने इस बॉक्स में रखी चॉकलेट को फटाफट निकाल लिया और मेरी अनुमति की उसे आवश्यकता महसूस नहीं हुई और उसने उस चॉकलेट का आनंद लिया।

चित्र 4.50 प्रश्न करते हुए शोध कर्ता

चित्र 4.51 उत्तर देते हए छात्र

निष्कर्ष- यहां पर बच्चों से तीन अलग तरह के प्रयोग करवाए गए थे। जिनमें कुछ उनके लिए सामान्य थे। कुछ उनके लिए नए थे।

अंत में जब उनसे प्रश्न पूछा गया कियह कौन सा कलर है तो उन्होंने लाल रंग कहा, याकि उन्हें पता है कि वह कौनसे रंग का चुनाव कर रहे है और जब

तार्किक समस्या का प्रश्न आता है, तो उन्होंने उस पजल बॉक्स को बड़ी आसानी से हल कर दिया।

चित्र 4.52 कागज चिपकाते हुए अवधूत

चित्र 4.53 शोध कर्ता द्वारा अवधूत की सहायता

कि यदि शिक्षा में हम कला का उपयोग करते हैं, तो शिक्षा का अधिगम काफी अधिक सरल बन जाता है, हालांकि इसमें समय लगता है। लेकिन जो तथ्य और जो बात बच्चों को समझ में आती है वह लंबे समय तक टिकती है, क्योंकि यह बच्चे ऑटिस्टिक है तो उन्हें सीधी बात और तथ्य समझ में नहीं आते उन्हें उन्हीं की भाषा में समझाना और प्रश्न करना ही समझ में आता है।

चित्र 4.51 और 4.53 में दर्शाए अनुसार कार्य के मध्य में ही प्रश्न पूछे गए क्योंकि ऑटिस्टिक बच्चों की अलग से प्रश्नोत्तरी नहीं रख सकते। कार्य करते समय ही उनका मूल्यांकन कर सकते हैं। कार्य करते समय भी उन बच्चों का सहयोग भी काफी किया गया। जैसा कि आप चित्र में देख सकते हैं, यहां पर उनकी भावनाएं को वह कागज पर प्रदर्शित कर रहे थे।

4.2 6 से 10 वर्ष की आयु के मध्य कार्यात्मक अध्ययन

चित्र 4.54 हम्मार हुसैन शेख कार्य करते हुए **चित्र 4.55 हम्मार हुसैन शेख कार्य करते**

यहां पर 6 वर्ष से 10 वर्ष की आयु के बच्चों के मध्य कार्यात्मक अध्ययन किया गया था तथा अध्ययन का मुख्य विषय उनका ध्यान अवधि बढ़ाना था। इस आयु में बच्चे अपनी संचारित शिक्षण का विस्तार करते हैं। वह विभिन्न विषय जैसे भाषा गणित और पर्यावरण को समझने की कोशिश करते हैं, तथा अन्य प्रकार के चित्रों के माध्यम से अपने विचारों और भावनाओं को व्यक्त करते हैं। कहानीया लेखन तथा भाषण लेखन करना शुरू कर देते हैं ।यहां पर भाषा थोड़ी सुचारू रूप से बच्चों को समझ में आने लग जाती है, जिस वजह से वह किसी भी वस्तु या व्यक्ति विशेष के बारे मंड थोड़ी बहुत जानकारी देने में समर्थ रहते हैं।

यहां पर आरव और हम्माद हुसैन शेख की 6 से 10 वर्ष की आयु के मध्य हैं।

आरव का स्वभाव से थोड़ा चंचल है, वह मुख्य रूप से मुंबई का रहने वाला है तथा यह एक संयुक्त परिवार में रहता है। जब आरव 2 वर्ष का था। तभी उसके घरवालों को उसके ऑटिस्टिक होने का पता चला । उसके घर वालों ने उसका पूरी

तरह से साइकोलॉजिस्ट के द्वारा निदान करवाया तथा पता चला कि वह ऑटिस्टिक है। आरव कम ही स्कूल आता है। उसको लाने और ले जाने की जिम्मेदारी उसके दादाजी की है।

उसे को फ़ास्ट फ़ूड खाना बहुत पसंद है। वह अधिकतर टिफन में फास्ट फूड लेकर आता है। चंचल प्रवृत्ति होने के कारण वह अधिक फोटो नहीं खिंचवा पता। कार्य करते समय उसे काफी शर्म आती है, ऑटिज्म के कारण वह नॉनवर्बल है, किंतु वह सबके साथ दोस्ताना व्यवहार करता है और अपना खाना-पीना दूसरों के साथ बांटता है।

शोधकर्ता के साथ उसका अच्छा व्यवहार रहा किंतु कार्य में उसकी एकाग्रता नहीं है। वो जल्दी ही हर कार्य से उभकर इधर-उधर घूमने लग जाता है। जिस कारण उसका अधिकतर कार्य अधूरा ही रहा ।

हम्मार मुख्यतः भारत के दक्षिणी भाग में रहता है, उसके माता-पिता यहां काम की वजह से स्थानांतरित हुऐ है, इसलिए उसका भी प्रवेश अन्ज़ा स्कूल में करवा दिया गया। उसका स्वभाव अंतर्मुखी है, वह बहुत शर्मीला और कम बोलने वाला है। लगभग 2 साल की उम्र में उसके माता-पिता को पता चलता है कि वह ऑटिस्टिक है।

हम्मार के साथ समस्या यह है कि वह पूरी तरह से आंखों से संपर्क नहीं बना पाता और पेंसिल या पेन को ठीक से पकड़ नहीं पाता; उसे उच्च संवेदी समस्याएं हैं। वह बोलता है कुछ और देखता है कहीं और। जिसकी वजह से शोधकर्ता को भी काफी समस्याओ का सामना करना पड़ा था क्योंकि इस प्रकार के बच्चों की मनो स्थिति का पता लगाना कठिन कार्य है।

शोधकर्ता को उससे काम करवाने में काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ा अधिकतर समय उसका हाथ पकड़ कर या उसका नाम बार-बार पुकार कर उसे काम करवाया जाता है। उसकी मां से बात होने के पश्चात पता चला कि उसकी थैरेपी अभी चालू नहीं की है।

शोध परिकल्पना : शोध परिकल्पना बच्चों की आयु और मानसिक स्थिति को ध्यान में रखकर तय किया इस आयु में बच्चों को अधिकतर एकाग्रचित कार्य करने में काफी कठिनाई का सामना करना पड़ता है।

यहां पर विभिन्न विषयों का समावेश किया गया जिससे कि बच्चे अधिक से अधिक सीख सके और संयुक्त रूप से मिलकर कार्य कर सके इसके लिए पहले जो

बच्चे कार्य कर रहे थे उन बच्चों को भी इस गतिविधि में शामिल किया गया ताकि वह टीमवर्क को समझ सके और उसे हिसाब से कार्य कर सके।साथ ही साथ यहां पर विभिन्न विषयों को सम्मिलित कर कुछ प्रयोगात्मक कार्य भी बच्चों को दिया गया जिससे कि बच्चे अपनी भावनाओं को या तो कागज पर व्यक्त करें या फिर वह टूटे-फूटे शब्दों मेंअपने विचारों को व्यक्त करें। जो की ऑटिस्टिक बच्चों के लिए बड़ी ही कठिनाई कासाधन रहता है यहां पर कला के माध्यम से उन्हें शब्द शक्ति तथा बौद्धिक शक्ति का परीक्षण करने की पूर्ण स्वतंत्रता दी गई। इस परिस्थिति में उनका मूल्यांकन नहीं किया गया। मूल्यांकन करने से नकारात्मकता आ जाती है और वह अपना कार्य करना छोड़ देते हैं। इसकी अपेक्षा यहां पर शोधकर्ता ने उन्हें सदैव सकारात्मक होकर प्रोत्साहित किया कि वह इस कार्य को अच्छे से कर सकते हैं और उनको जो समझ में आता है जैसे अच्छा लगता है बस वह अपना कार्य पूर्ण करें।

• शोधकर्ता ने निम्न प्रकार से इनका रचनात्मक क्रियात्मक पाठ्यक्रम का निर्माण किया जो निम्न प्रकार हैं।

4.2.1 कहानी लेखन और वाचन

4.2.2 रंगों की प्रयोगशाला

4.2.3 अक्षर से चित्र बनाना

4.2.4 अक्षर से शब्दों, व्यक्ति और वस्तु को पहचाना

4.2.1 कहानी लेखन और वाचन

कुछ बच्चों के खिलौने को सामने रखकर हम्मार और आरव से अपेक्षा की गई कि वह किसी भी रूप से कहानी लिखें या वचन रूप में कहे बीच-बीच में शोध कर्ता ने उनका सहयोग किया। वह उन खिलौने के साथ खेल भी सकते हैं और उनका कोई नाम भी रख सकते हैं। यहां पर एक छोटी गुड़िया, एक भालू स्पाइडर-मैन और एक छोटा सा हेलीकॉप्टर प्रदर्शित किया गया जिसको देखकर बच्चे अपने मन के विचारों को वयक्त कर सकते है।

पहले इन सभी खिलौनों को अस्त-व्यस्थ करके रखा गया तथा बच्चों से कहा गया कि इनका वह नाम रखे, आरव ने डॉल का नाम चिंकी रखा तथा भालू को भालू ही बोला और बाकि खिलौनों को उनके नाम से ही पुकारा।

दूसरे चरण में खिलौनों को क्रमबद्ध तरीके से रखा गया तथा आरव को कहानी कहने को बोला गया।

आरव ने बोला कि चिंकी नाम की एक छोटी सी लड़की थी।जिसको जंगल में से आकर एक भालू बहुत परेशान कर रहा था चिंकी जोर-जोर से चिल्ला रही थी।कि मुझे बचाओ बचाओ तभी वहां पर स्पाइडर-मैन अपना हेलीकॉप्टर लेकर आ गया और चिंकी को बचा लिया चिंकी ने स्पाइडर-मैन को थैंक यू बोला और वह दोनों अपने घर चले गए।

दूसरे चरण में हम्मार को कहानी कहने थी।लेकिन हम्मार नॉनवर्बल चाइल्ड था, इसकी वजह से वह अच्छी तरह से बातचीत भी नहीं कह पाता है, तो कहानी कहने के बजाय उसने खिलौने को उठाया आपस में चिंकी और भालू की लड़ाई को दिखाया और बताया कि चिंकी ने स्पाइडर-मैन को कॉल किया और घर जाने के लिए हेलीकॉप्टर मँगवाया और अंत में वह दोनों घर चले गए।

चित्र 4.56 अस्त-व्यस्थ पड़े हुये खिलौने

चित्र 4.57 क्रम में रखे हुये खिलौने

चित्र 4.58 कहानी चित्रण - 1

चित्र 4.59 कहानी चित्रण - 2

चित्र 4.56 से चित्र 4.59 तक के चित्रों की माध्यम से कहानी वाचन किया गया।कहानी को आगे बढ़ाने के लिए शोध कर्ता ने बीच-बीच में काफी सहायता की तथा कहानी कहने से पहले शोध कर्ता ने उन्हें एक कहानी सुनाई जैसे कि एक बार एक लड़की थी जो जंगल में अकेली जा रही थी ।बीच में उसे एक भयानक भालू मिला जिससे वह बहुत डर गई अचानक से वहा एक स्पाइडर-मैन आया और उसने चिंकी को बचा लिया। इस तरह की कहानी बच्चों को बताई गई।ताकि वह प्रोत्साहित महसूस कर सके और अपनी कहानी को पूर्ण कर ।कहानी कहने के पश्चात उन्हें बच्चों सेकुछ प्रश्न पूछे गए जो निम्न प्रकार के थे।

1. लड़की का नाम क्या था?
2. उसने किसको बुलाया?
3. लड़की को कौन तंग कर रहा था?
4. अंत में क्या हुआ?
5. तथा कहानी का शीर्षक क्या होगा?

यह सब प्रश्न पूछने का मुख्य उद्देश्य यह था कि वह अपने विचारों में इन खिलौनों को देखकर क्या व्यक्त कर सकता है। यह एक दृश्य कला का उत्तम माध्यम है।दृश्य कला में बच्चे वस्तुओं को देखकर छूकर महसूस करते हैं, और अपने विचारों को किसी भी माध्यम से व्यक्त कर सकते हैं। 6 से 10 वर्ष की आयु के बच्चों में अपने विचारों को व्यक्त करने में और एकाग्रचित होने में परेशानी का सामना करना पड़ता है।

4.2.2 रंगों की प्रयोगशाला

रंगों की प्रयोगशाला जैसे कि नाम से ही पता चल रहा है यहां पर विभिन्न तरह के रंगों का प्रयोग प्रदर्शन कला के अंतर्गत किया गया था तथा रंगों का हर किसी के जीवन में अलग प्रभाव देखा जा सकता है।रंगों के प्रति हर व्यक्ति की अपना मनोभाव रहता है।हर व्यक्ति का पसंदीदा रंग अलग-अलग होता है किसी को सफेद पसंद होता है तो किसी को काला। व्यक्ति अपने रंगों के चुनाव के साथ अपने व्यक्तित्व का भी चुनाव करता है, जैसे सफेद रंग पसंद करने वाले व्यक्ति का स्वभाव अधिकतर शांत देखा गया है।

चित्र 4.60 रंगों की प्रयोगशाला

चित्र 4.61 दो विभिन्न रंग

चित्र 4.62 रंगों को मिश्रण करते हुए

चित्र 4.63 मिश्रण के पश्चात्

सर्वप्रथम यहां पर प्रयोग के लिए तीन अलग-अलग रंगों का चुनाव किया गया जिसमें बैंगनी पीला और गुलाबी रंग थायहां पर बच्चों से सर्वप्रथम यह प्रश्न किया गया कि यह कौन-कौन से रंग है वह थोड़ा असमंजस में थे, क्योंकि वह इसे शरबत समझ रहे थे की शिक्षिका हमें पिलाने के लिए शरबत लेकर आई लेकिन उन्हें समझाया गया की शरबत नहीं है। हम यहां पर एक प्रयोग करने वाले हैं तो वह थोड़ा उत्साहित हो गए कि यह कौन सा प्रयोग है उसके पश्चात जब उनसे पुनः पूछा गया कि यह कौन सा रंग है तब उन्होंने उत्तर दिया पीला पर्पल इत्यादि।

चित्र 4.64 रंगों को मिश्रित करते हुए बच्चें

चित्र 4.65 मिश्रण के पश्चात् प्राप्त रंग

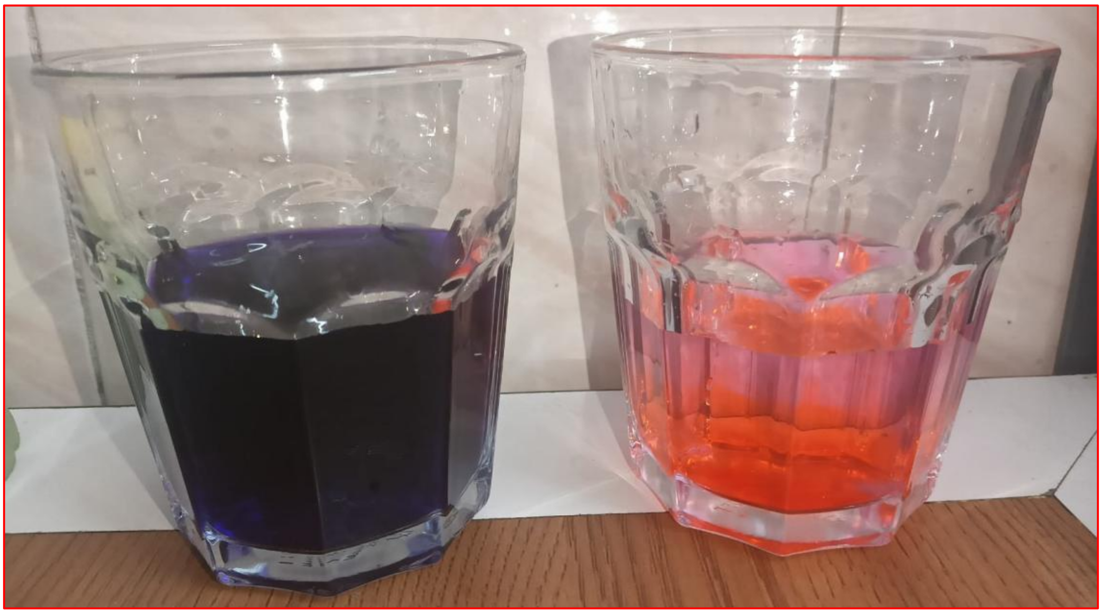

चित्र 4.66 मिश्रण के पश्चात् प्राप्त रंग

बच्चों को इन रंगों को मिलने के लिए कहा गया तथा रंग के बारे में प्रश्न पूछे गए कि कौनसा नया रंग बना। चित्र 4.60 से लेकर चित्र 4.66 में दिए अनुसार कार्य किया गया। यहाँ बच्चो को रंगों के माध्यम से मोटर स्किल और दिमागी तौर पर सोचने की शक्ति प्रदान की।

4.2.3 अक्षर से चित्र बनाना

बच्चों को अक्षर ज्ञान कराना आसान काम है। यहां पर बच्चों को लकड़ी से बने हुए रंगीन अल्फाबेट्स खेलने के लिए दिए गए।बच्चों ने उससे अच्छी तरह खेलने के बाद उन्हें निर्देश दिए गए ,कि इन्हें जोड़कर एक आकृति बनाऐ तथा उसके चारों ऑर रंगीन पेन से परीधि ओर खींचे और प्राप्त आकृति का नाम बताएं।

चित्र 4.67 अव्यवस्थित अक्षर

चित्र 4.68 व्यवस्थित अक्षर

हम्मार ने कुछ अक्षर को जोड़कर दिए हुए दिशा निर्देश अनुसार चश्मे का आकर बनाया था। उसे ऑय (EYE) बोलकर सम्बोधित किया।दूसरी आकृति आरव ने बनाई जो देख़ने में पत्ते की तरह दिखाई देती हैं।आरव ने इसे बड़ी सरलता से बना दिया।

चित्र 4.69 व्यवस्थित अक्षर

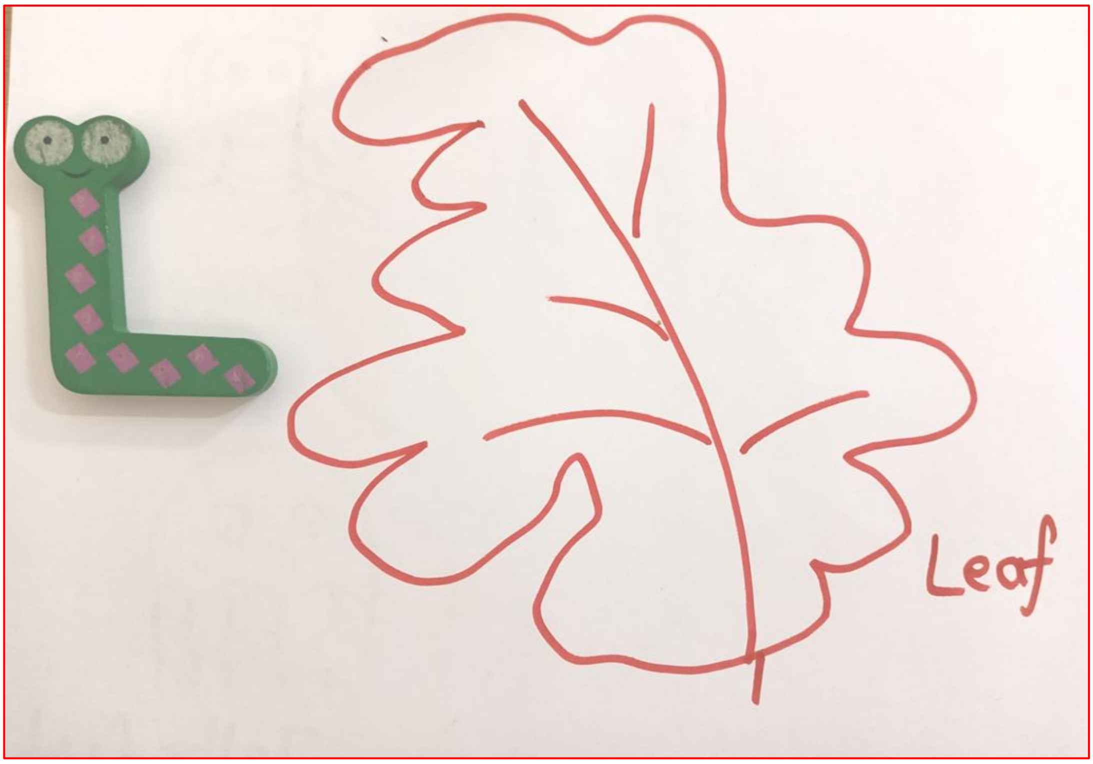

चित्र 4.70 बनी हुई आकृति

चित्र संख्या 4.63 से चित्र संख्या 4.69 लेकर प्रदर्शित किया गया हैं कि बच्चों ने यह कार्य काफी दिल से किया है। कार्य समाप्ति पर उनसे पूछा गया की आँखो से हम क्या करते हैं ? और चश्मे का उपयोग क्यों किया जाता है ? पत्तों का कौनसा रंग होता है ?

इसके जवाब बच्चों ने अपने मन मुताबिक दिए। उनको यह कार्य करना काफ़ी रुचिकर लगा।यहाँ पर प्रदर्शन कला और दृश्य कला को समाहित करके कार्य किया गया जिसके फ़लस्वरूप सीखने के साथ बच्चो के चित्रकारी भी की।

2.2.4 अक्षर से शब्दों, व्यक्ति और वस्तु को पहचाना

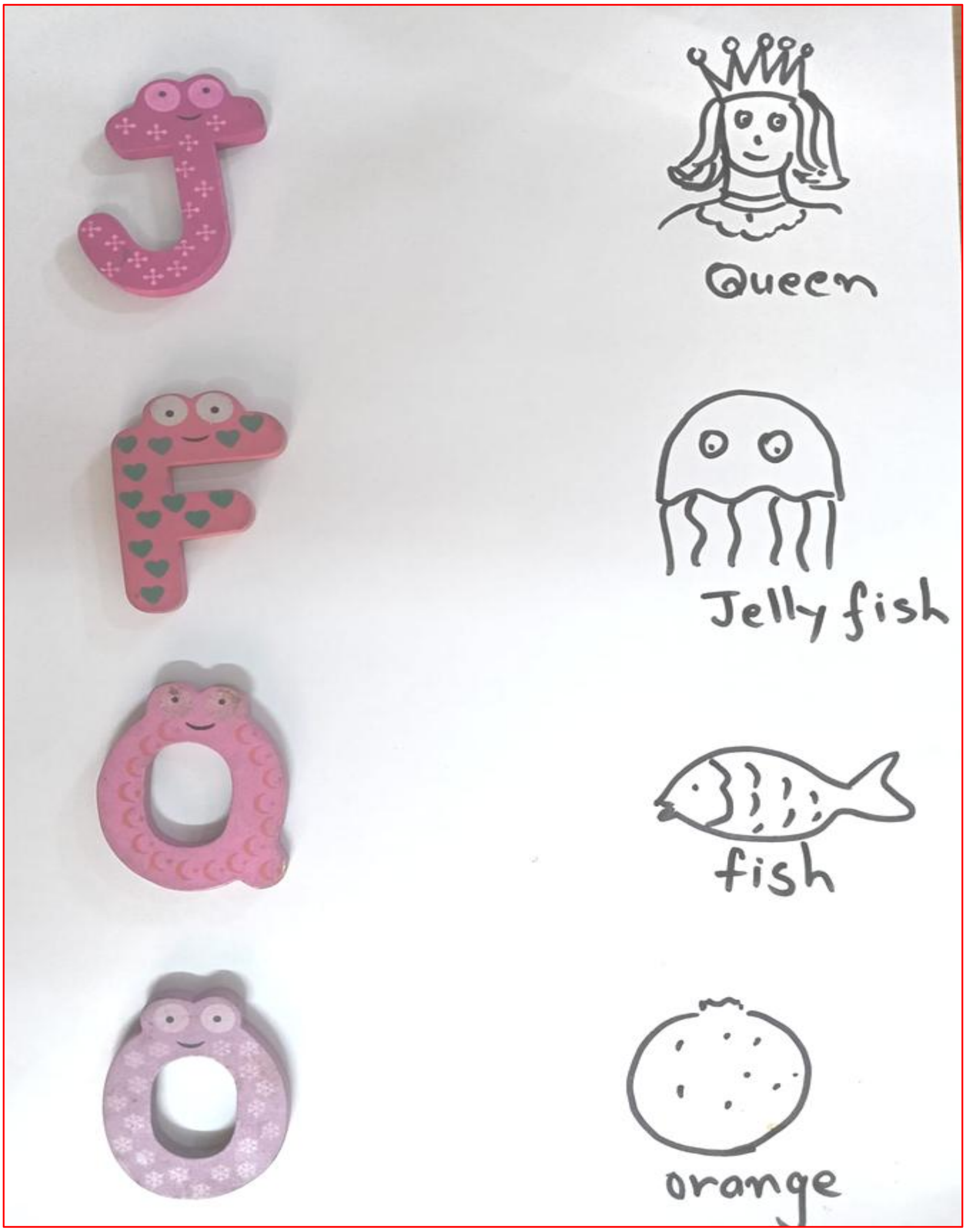

चित्र 4.71 बनी हुई आकृति मिलान करने का प्रश्न

बच्चों को एक कागज पर कुछ आकृतियाँ बना कर दी तथा उसके आगे लकड़ी से बने कुछ अल्फाबेट रखे गए।निर्देश दिए कि उनको सही क्रम में लगाए । यह कार्य दोनों ने मिलकर किया।

चित्र संख्या 4.60 और 4.61 में दर्शाए अनुसार बच्चों ने यहाँ पर बिलकुल सही कार्य किया बिना किसी की सहायता के यह कार्य सुचारु रूप से किया। दोनों एक दूसरे के साथ मिलकर कार्य कर रहे थे जो सहयोग की भावना को बढ़ाती है।

चित्र 4.72 बनी हुई आकृति मिलान के पश्चात् प्राप्त उत्तर

यहाँ दिखाए अनुसार बच्चों ने अक्षरों को सही कर्म में लगा दिया।

Q - QUEEN, J – JELLY FISH आदि का मिलान सटीक रूप में किया गया था। इस कार्य की प्रेरणा छोटे बच्चों के पाठ्यक्रम में दिए हुए मिलना कार्य से ली गई थी। जहां पर उनको पेंसिल के माध्यम से रेखाएं खींचते हुए शब्दों को अक्षरों से मिलान करना होता है। यहां पर उसका अधिक सरल रूप लेकर तथा कम समय में होने वाला कार्य निर्धारित कर पूर्ण किया गया बच्चों ने शब्दों और अक्षरों का पहचान उचित रूप में किया।

4.3 10 से 14 वर्ष की आयु के मध्य कार्यात्मक अध्ययन

इस चरण में दो विद्यार्थियों का चयन किया गया जिनमें 50% से अधिक ऑटिज्म पाया गया ।इन बच्चों का नाम क्रमशःशिवांश और शीज़ान है।

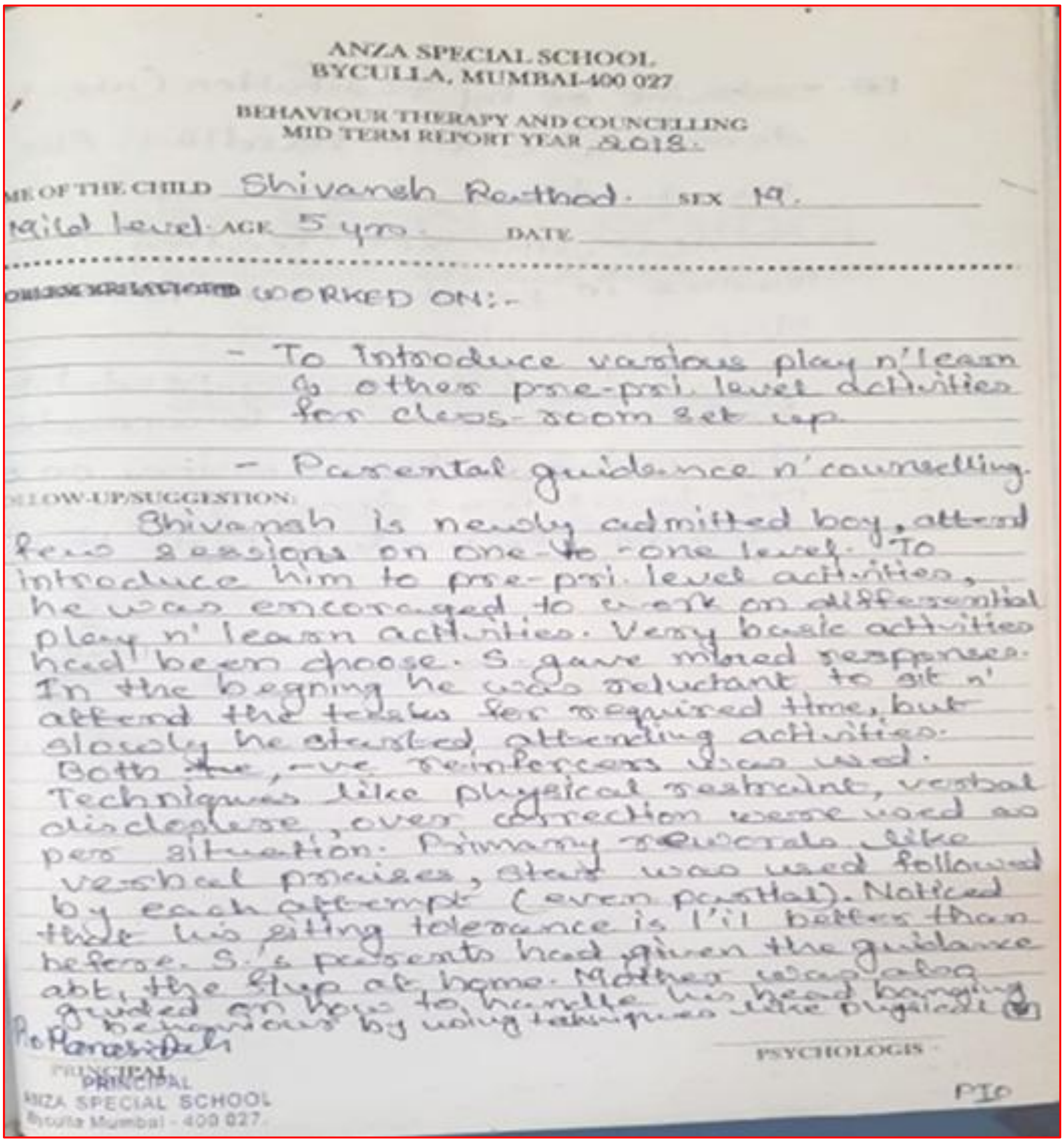

ANZA SPECIAL SCHOOL
BYCULLA, MUMBAI-400 027

BEHAVIOUR THERAPY AND COUNCELLING
MID TERM REPORT YEAR 2018.

NAME OF THE CHILD Shivansh Rathod. SEX M.
Mild level AGE 5 yrs. DATE

WORKED ON:-

- To Introduce various play n' learn & other pre-pri. level activities for class-room set up.
- Parental guidance n' counselling.

FOLLOW-UP/SUGGESTION:

Shivansh is newly admitted boy, attend few sessions on one-to-one level. To introduce him to pre-pri. level activities, he was encouraged to work on differential play n' learn activities. Very basic activities had been choose. S. gave mixed responses. In the begning he was reluctant to sit n' attend the tasks for required time, but slowly he started attending activities. Both +ve, -ve reinforcers was used. Techniques like physical restraint, verbal disclosure, over correction were used as per situation. Primary rewards like verbal praises, star was used followed by each attempt (even partial). Noticed that his sitting tolerance is l'il better than before. S.'s parents had given the guidance abt. the setup at home. Mother was also guided on how to handle his head banging behaviours by using techniques like physical [illegible]

PSYCHOLOGIST

PRINCIPAL
ANZA SPECIAL SCHOOL
Byculla Mumbai - 400 027.

PTO

चित्र 4.73 स्कूल द्वारा किया गया शिवांश की मेडिकल जाँच का प्रमाण-पत्र

शिवांश का हर थोड़े समय में मानसिक और शारीरिक रूप से आकलन स्कूल द्वारा किया जाता है जो चित्र संख्या 4.72 में प्रदर्शित हैं।दोनों ही विद्यार्थियों को ऑटिज्म हैं, किंतु उनके लक्षण बिल्कुल विपरीत थे। शिवांश बहुत ही नटखट बच्चा है। दूसरों को सताने में उसे बड़ा मज़ा आता हैं, कभी किसी की चोटी खींच कर तो कभी चुटी काट कर भाग जाता हैं।शिवांश नॉन-वर्बल हैं, किन्तु वह अपने विचारों का इशारों में ही व्यक्त कर पाते हैं।

चित्र 4.74 माध्यमिक कक्षा

चित्र 4.75 शिंवाश और हम्मार दायें से प्रथम

इन की कक्षा पहली मंजिल पर स्थित है, यहां पर दूसरी श्रेणी के बच्चे पढ़ते हैं जैसे की चित्र संख्या 4.73, 4.74 में दर्शित है। यहां पर कक्षा व्यवस्था अच्छी तरह की गई है। (चित्र संख्या 4.75) कक्षा में खाने के लिए अलग से रूम की व्यवस्था है, तथा पानी पीने के लिए वाटर कूलर लगा हुआ है।स्कूल द्वारा आकलन के बात यह बताया गया कि शिवांश अपने दैनिक दिनचर्या के सभी कार्य लगभग स्वयं पूर्ण कर लेता है।

चित्र 4.76 कक्षा में खाने के लिए अलग से रूम

10 से 14 वर्ष की आयु में ऑटिज़्म से पीड़ित विद्यार्थियों को अपने आप को व्यक्त और भावनाओं को दर्शाने में कठिनाई का सामना करना पड़ता हैं। इस अवस्था में दृश्य कला भावनात्मक अभिव्यक्ति और तनाव को कम करने में सहायक सिद्ध होती है। दृश्य कला और प्रदर्शन कला से विद्यार्थी अपने विचारों और भावनाओं को व्यक्त कर सकते हैं।

शीजान बहुत ही शर्मीला बच्चा है। उसकी घर की स्थिति कुछ ठीक नहीं थी। परन्तु उसकी माँ उसे बहुत सपोर्ट करती है, लेकिन वह एक जगह बैठ नहीं पाता। कुछ मुश्किल हालात की वजह से उसे अपनी थेरेपी छोड़नी पड़ी थी।शिक्षिका ने उसकी माँ को थेरेपी की अहमियत समझाई और उसकी हालत समझने की कोशिश की और कभी-कभी उसकी थेरेपी के लिए स्कूल के अंदर एक थेरेपिस्ट को बुलाया जाता था।

शोध परिकल्पना दृश्य कला और प्रदर्शन के द्वारा 10 से 14 वर्ष के बच्चे अपनी आंतरिक भावनाओं को अच्छी तरह से व्यक्त कर सकते हैं, इसके लिए कुछ नियमित पाठ्यक्रम का निर्धारण किया गया निर्धारण किया गया, जो निम्न प्रकार है-

4.3.1. कला की स्वतंत्रता

4.3.2. सॉफ्ट ब्लॉक प्रिंटिंग

4.3.3. तार्किक समस्या

4.3.4. विषय चित्रण

4.3.1. कला की स्वतंत्रता

यहां बच्चों को कागज और कुछ रंग दिए गए और निर्देश दिया गया कि उन्हें जो भी पसंद है, उसका चित्रण करें शीज़ान का मन बिल्कुल भी इस कार्य में नहीं था वह ज्यादातर समय इधर-उधर घूमने में व्यतीत कर रहा था।तो उसे बाध्य नहीं किया गया। यहां पर शिवांश ने कार्य किया जो चित्र संख्या 4.76 में देखी जा सकती हैं।

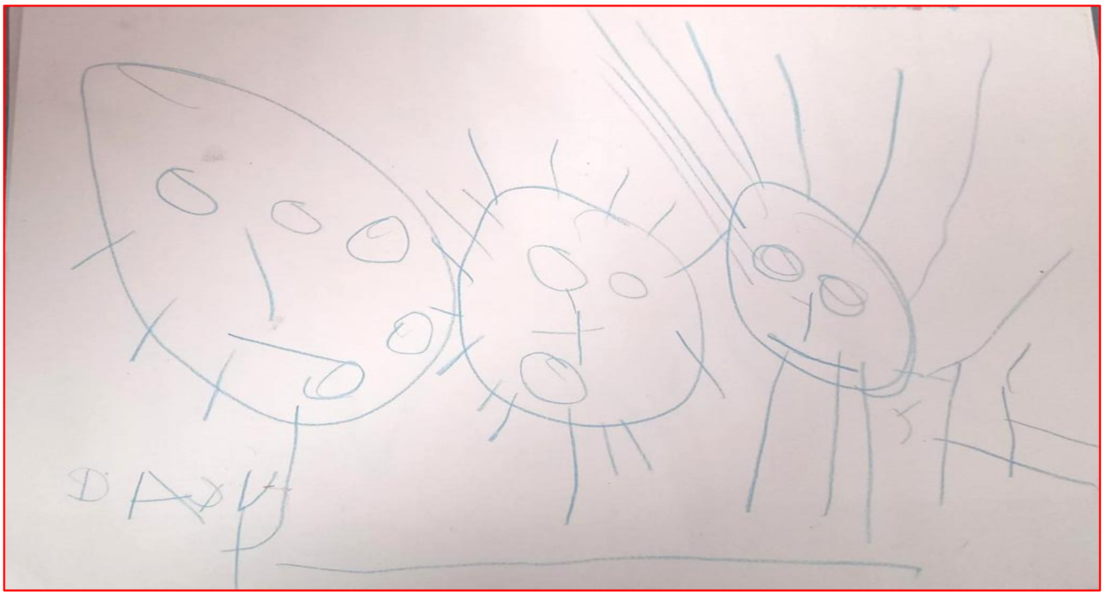

चित्र 4.77 शिंवाश द्वारा बनाया गया परिवार का चित्र

उसने कुछ भूतिया चेहरों का निर्माण किया पूछने पर बताया कि उसने खुद का और अपने माता-पिता का चित्रण किया है उसने खुद का चित्रण मध्य में किया है, चेहरे के सभी मूल अंग अपनी जगह पर सही रूप से व्यवस्थित है। मां की पहचान लंबे बालों से की जा सकती है, बाई और शिवांश ने डैडी लिखा है जिससे उसकी भावनाओं को और अच्छे से समझा जा सकता है।कला चित्रण करना मान की अभिव्यक्तियों का मूल साधन है, जो बात कह कर व्यक्त नहीं की जा सकते।उसे लिखकर या चित्रण के माध्यम से अच्छी तरह व्यक्त किया जा सकता है।

चित्र 4.78 शिक्षिका द्वारा शीज़ान को कराया गया व्यक्तिगत कार्य

यहां पर शीज़ान को अन्य कार्य दिया था कि वह बटन खोलना लगाना जैसे दैनिक कार्य को सीख सके जो कि उसे बिल्कुल भी नहीं आते । क्योंकि उसका स्कूल में दाख़िला अभी हुआ था। चित्र संख्या 4.77।

चित्र 4.79 शॉफ्ट ब्लॉक प्रिन्टिंग

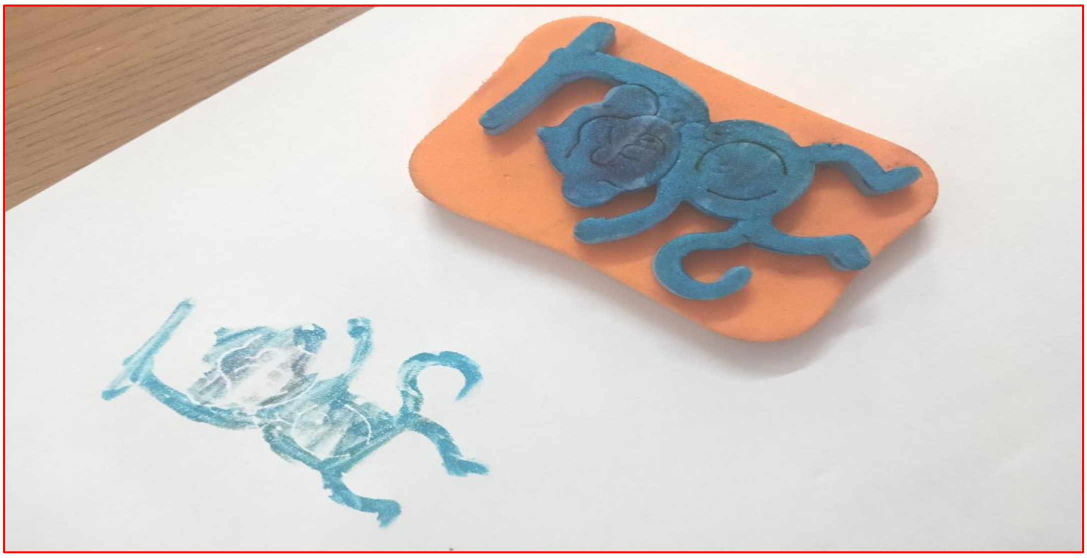

चित्र 4.80 विद्यार्थी द्वारा किया गया विभिन्न प्रिन्टिंग कार्य

चित्र 4.81 विद्यार्थी द्वारा किया गया विभिन्न प्रिन्टिंग कार्य

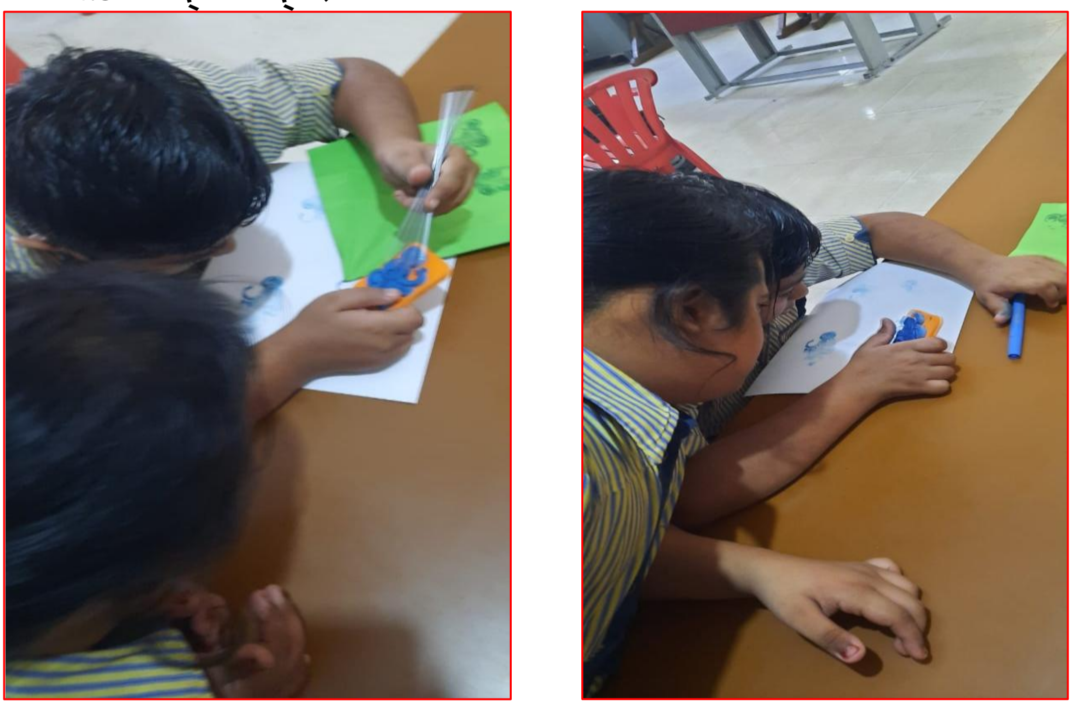

चित्र 4.82 ब्लॉक को रंगते हुए शिवांश एवं शीज़ान

चित्र 4.83 ब्लॉक को रंगते हुए शिवांश एवं शीज़ान

चित्र 4.84 ब्लॉक को रंगते हुए शिवांश का महीन चित्रण

चित्र 8.85 महीन चित्रण

4.3.2. सॉफ्ट ब्लॉक प्रिंटिंग

सॉफ्ट प्रिंटिंग में बच्चों को कुछ सॉफ्ट ब्लॉक दिए गए थे ।जिसके ऊपर वह रंगीन पेन के द्वारा रंग कर पेपर प्रिंट कर सकते हैं। इससे उनकी ग्रॉस मोटर गतिविधियां बढ़ती है। जब उनसे पूछा गया कि यह कौन सा जानवर है कहां रहता है तो उन्होंने प्रिंट किया हुआ है तो जानवर के बारे में सही उत्तर दिया। इसके पश्चात उन्हें शोधकर्ता द्वारा बताया गया की प्रिंटिंग क्या होती है। इसका कहां उपयोग किया जाता है आम जिंदगी में इसे कहां-कहां देख सकते हैं। तो शोधकर्ता ने उन्हें स्कूल से पेपर स्टंप्स लेकर दिखाएं। इस क्रिया से उन्होंने खेलने के साथ-साथ चीजों का उपयोग करना भी सीखा और इस कार्यक्रम का उन्होंने काफी आनंद लिया रंगों का चुनाव उनकी मन की स्थिति को दर्शा रही है। साथ ही कला की उपयोगिता उन्हें समझ में आ रही थी।कि कला न केवल मनोरंजन के लिए बल्कि उसका आम जिंदगी में भी काफी उपयोगी है। सॉफ्ट ब्लॉक प्रिंटिंग चित्र संख्या 4.78 से 4.85 तक।

4.3.3. तार्किक समस्या

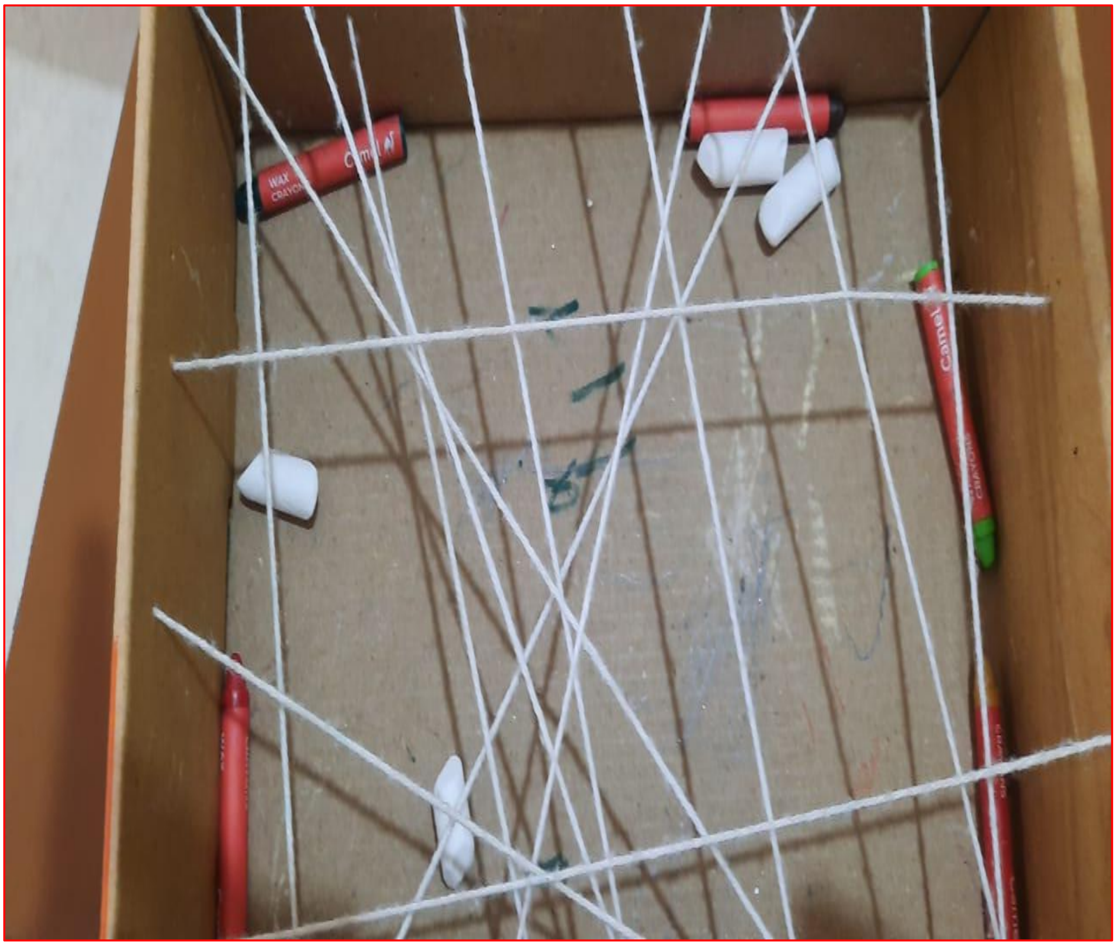

चित्र 4.86 तार्किक समस्या

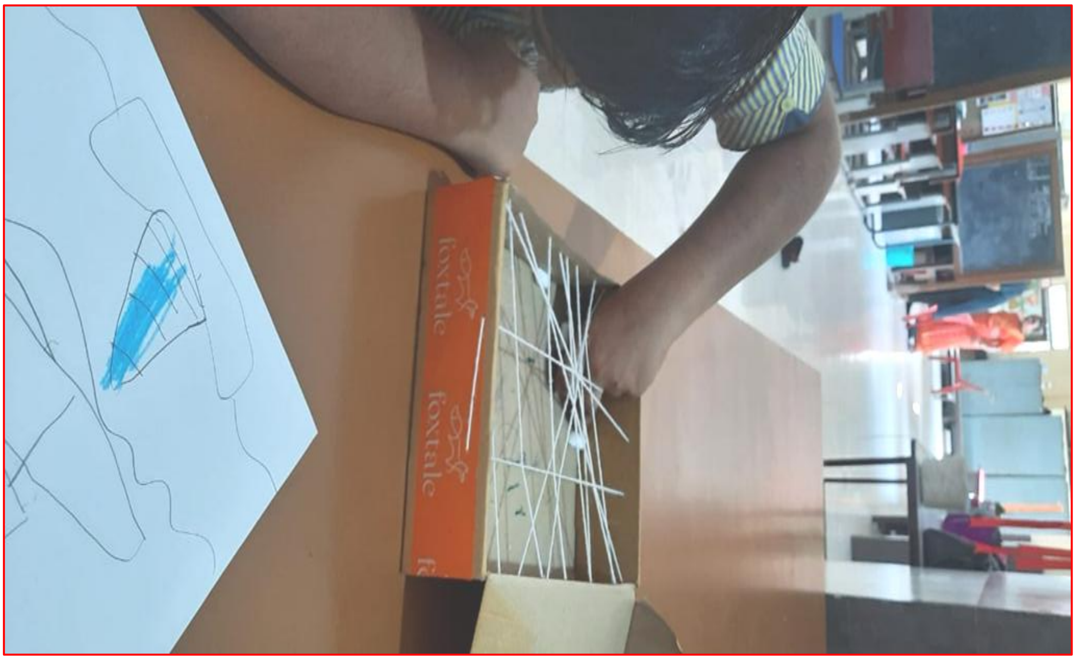

चित्र 4.87 तार्किक समस्या हल करते हुए शीज़ान

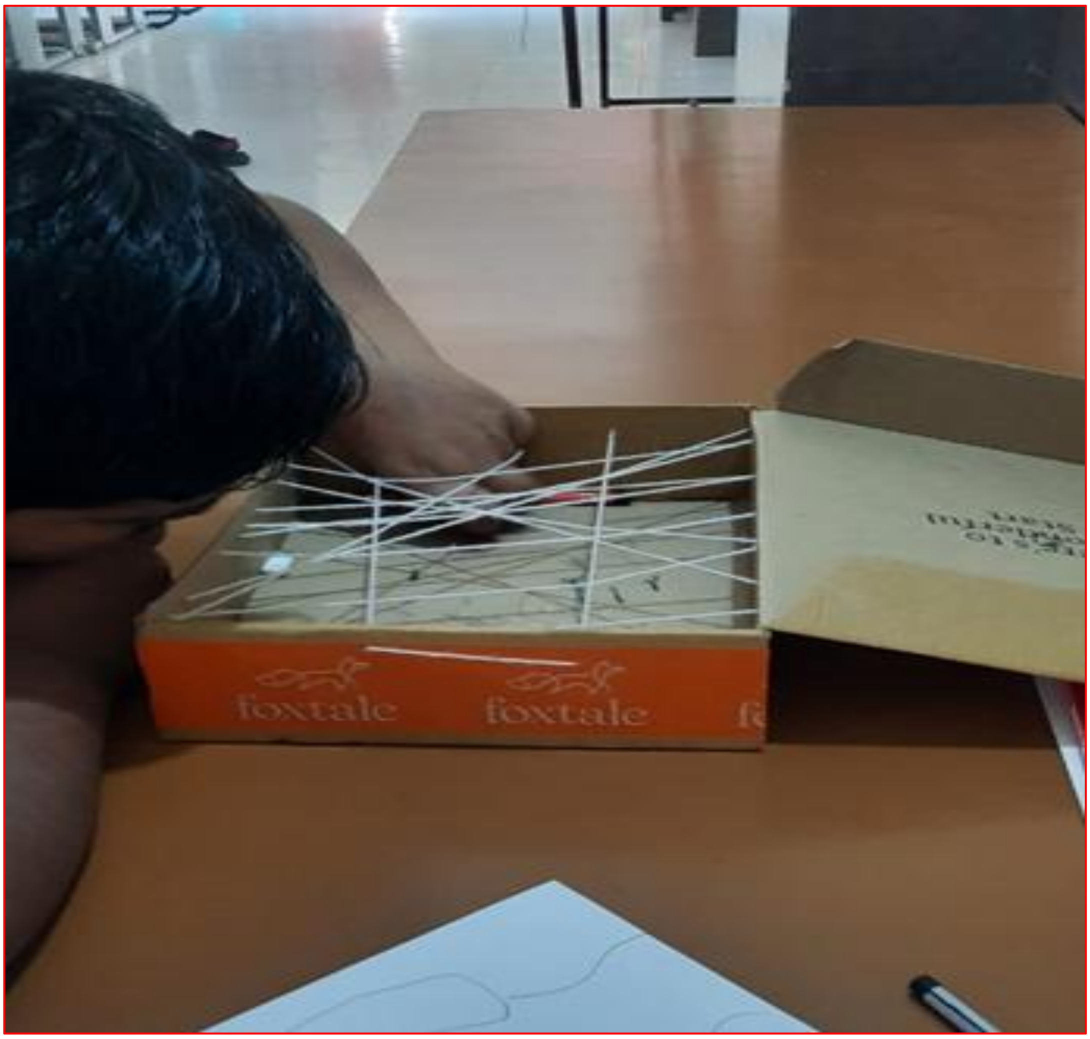

चित्र 4.88 तार्किक समस्या हल करते हुए शिवांश

तार्किक समस्या के समाधान हेतु उन्हें वही गत्ते का डब्बा दिया गया जो छोटे बच्चों को दिया गया था। जिसमें कई धागे बंधे हुए थे।यहां पर उन्हें निर्देश दिया गया कि उनको श्यामपट्ट पर लिखना है, और बॉक्स में से चॉक निकालनी है, जिसका बड़ी सरलता से उन्होंने समाधान कर दिया। यहां पर बच्चे समस्या को समझने के साथ ही उसका हल करने की प्रक्रिया को भी समझे ।जिस तरह आम जिंदगी में समस्या होती है और उसका समाधान भी होता है, ठीक उसी प्रकार इन ऑटिस्टिक बच्चों ने समस्या को पहचान कर उसका समाधान त्वरित रूप में किया। प्रदर्शन कला का माध्यम यह सिद्ध करने में लिया गया कि ऑटिस्टिक बच्चे भी सामान्य बच्चों की तरह अपनी समस्या का समाधान करने में पूर्ण रूप से सक्षम और समर्थ है, यह कार्य दोनों छात्रों ने सम्मिलित रूप से किया ।तार्किक समस्या संख्या 4.85 से 4.88 तक।

4.3.4. विषय चित्रण

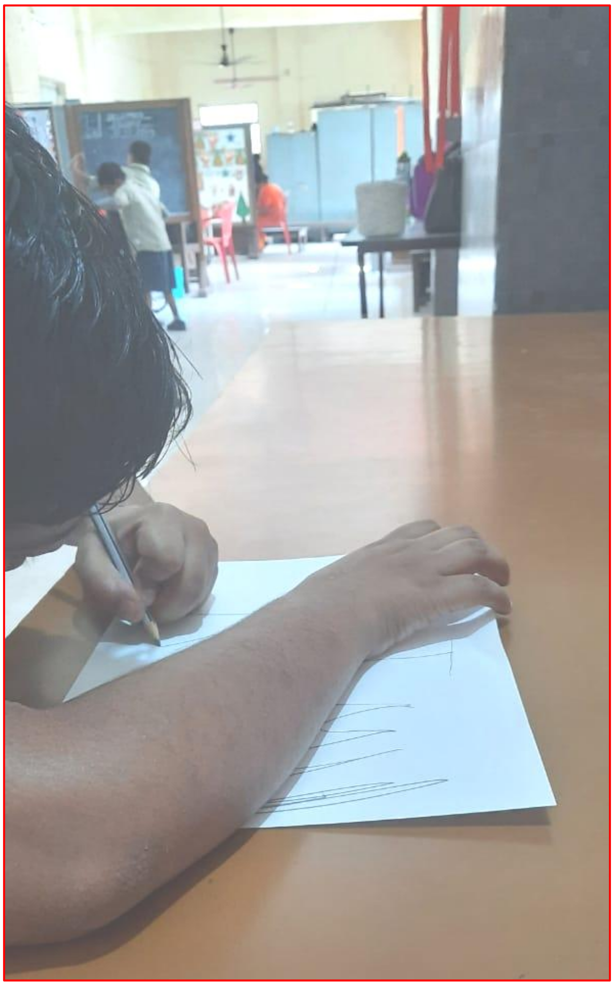

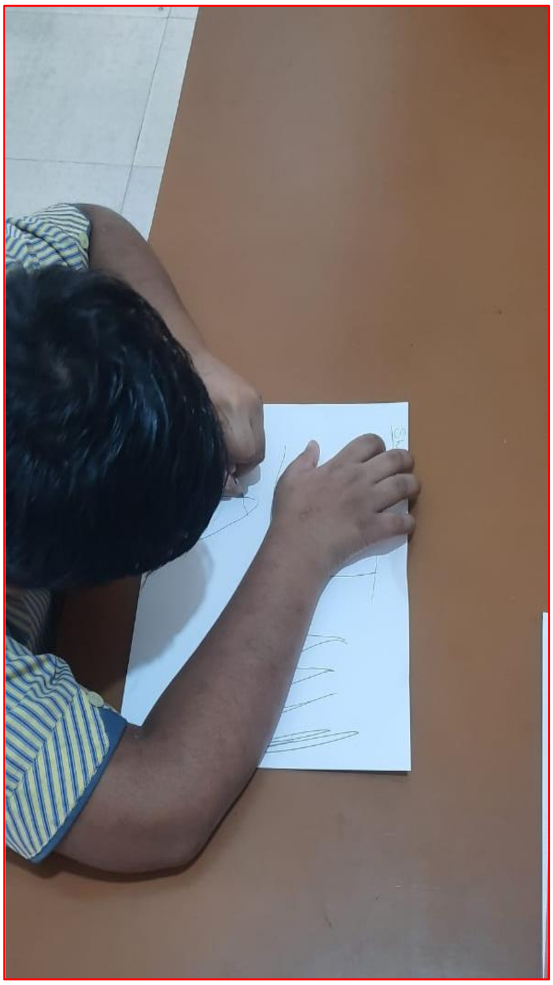

चित्र 4.89 विषय चित्रण करते हुए शीज़ान और शिवांश

चित्र 4.90 रंग भरते हुए शीज़ान

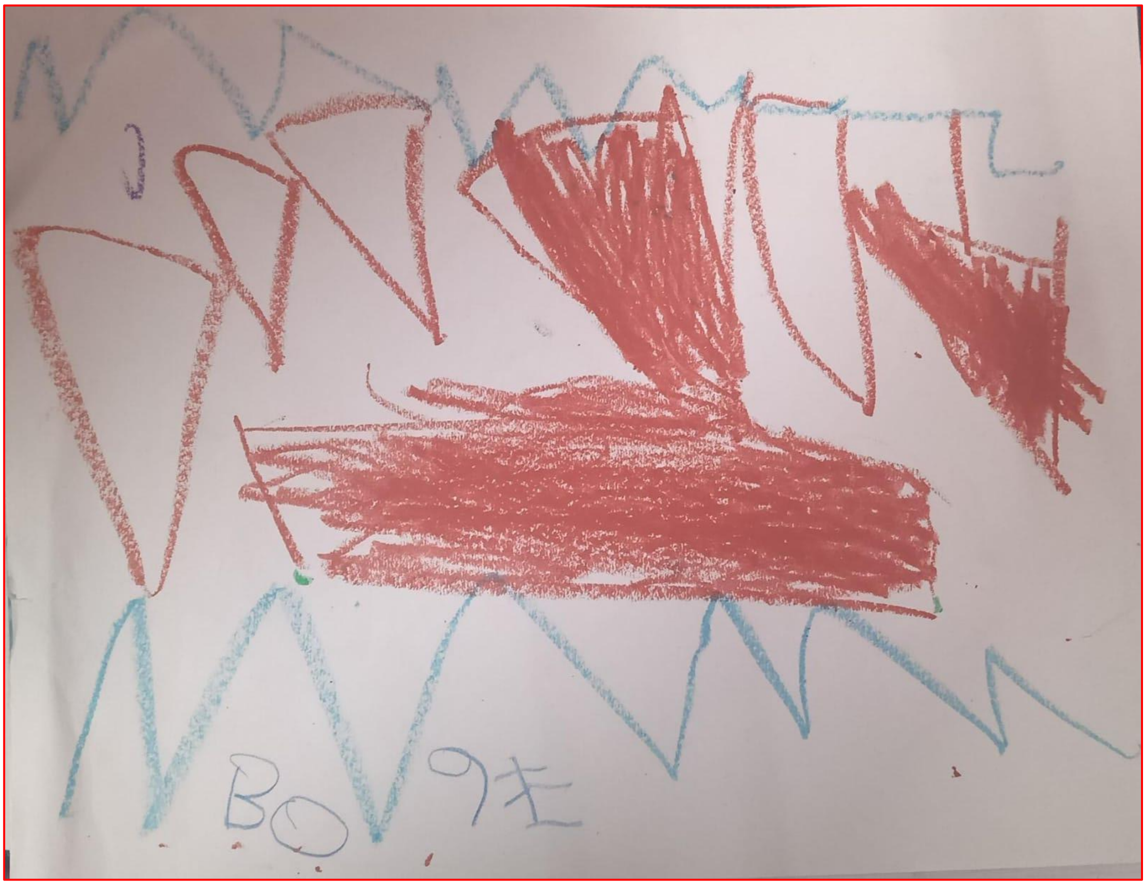

चित्र 4.91 शिवांश का समुद्र चित्रण

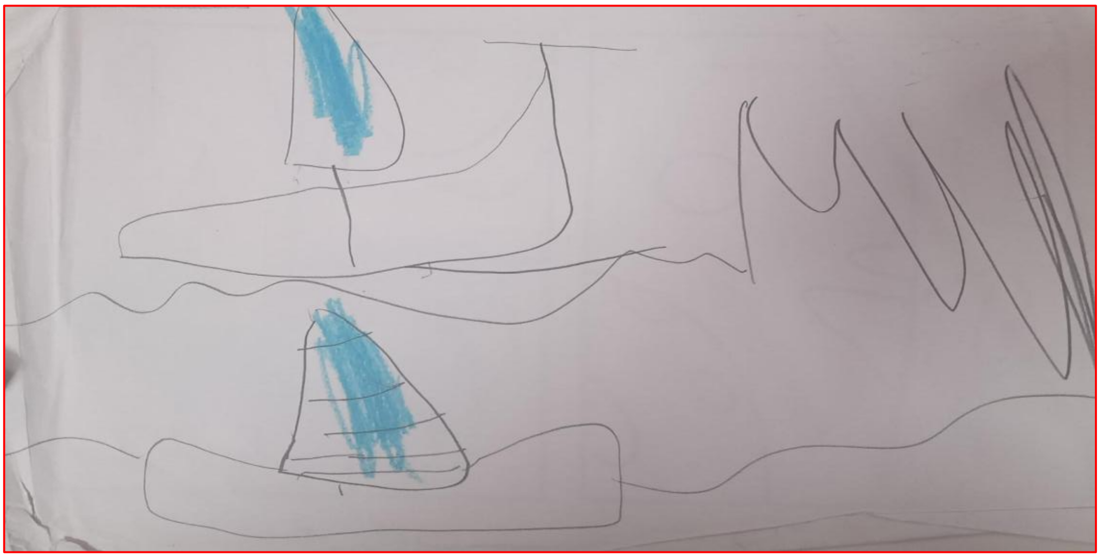

चित्र 4.92 शीज़ान का समुद्र चित्रण

चित्रण के माध्यम से उनके विचार किसी भी वस्तु या व्यक्ति विशेष को लेकर क्या हो सकते हैं यह दर्शित किया गया है ।विषय के रूप में उन्हें समुद्र और नाव का चित्रण करने को कहा गया।इस विषय का चुनाव इसलिए किया गया था, क्योंकि मुंबई में समुद्र है। चित्र संख्या 4.89 में प्रदर्शित हो रहा है, कि फैजान ने सीधा रंगों के माध्यम से चित्रण शुरू किया और लाल रंग से काफी सारे नाव कर, नीले रंग से समुद्र की लहरों को प्रदर्शित किया।

वहीं शिवांश ने पहले पेंसिल से चित्रण किया।उसमें दो नाव को चित्रित किया और समुद्र की लहरों का अच्छे से चित्रण किया (चित्र 4.90)। परंतु शिवांश ने थोड़ा रंग करने के बाद उसका मन भर गया, तो उठकर चला गया। किंतु उसने चित्रकार बहुत अच्छा और स्पष्ट किया ।यहां पर कला के मजबूत धरातल पर उन्होंने अपने विचारों को खड़ा करना सीख जो सामान्य अध्ययन या पाठ्यक्रम से मुश्किल सा प्रतीत होता है।

कला के माध्यम से बच्चों द्वारा की गई अन्य गतिविधियां से दूसरे बच्चों को भी काफी आकर्षित कर रही थी।उन्हें यह समझना कठिन था। यह गतिविधि उनके लिए नहीं है, तो उन सभी बच्चों को स्वतंत्र रूप से वह गतिविधियाँ करने का मौका दिया गया। ताकि वह कुछ नया सीख सके और उसका आनंद ले सके। (चित्र 4.9 से चित्र 4.103 तक)

चित्र 4.93 अवधूत सॉफ्ट प्रिन्टिंग करते हुए

चित्र 4.94 शोधकर्ता द्वारा अवधूत की प्रिन्टिंग में सहयोग करते हुए

चित्र 4.95 प्रिंटिंग करते हुए हम्मार

चित्र 4.96 सॉफ्ट प्रिटिंग करते हुए अवधूत एवं शोधार्थी द्वारा सहयोग

चित्र 4.97 सॉफ्ट प्रिटिंग करते हुए अवधूत के साथ हम्मार एवं शोधार्थी द्वारा

चित्र 4.98 तार्किक समस्याओं को हल करते हुए हम्मार

चित्र 4.99 तार्किक समस्याओं को हल देखते हुए हम्मार

चित्र 4.100 धागों को छूते हुए हम्मार

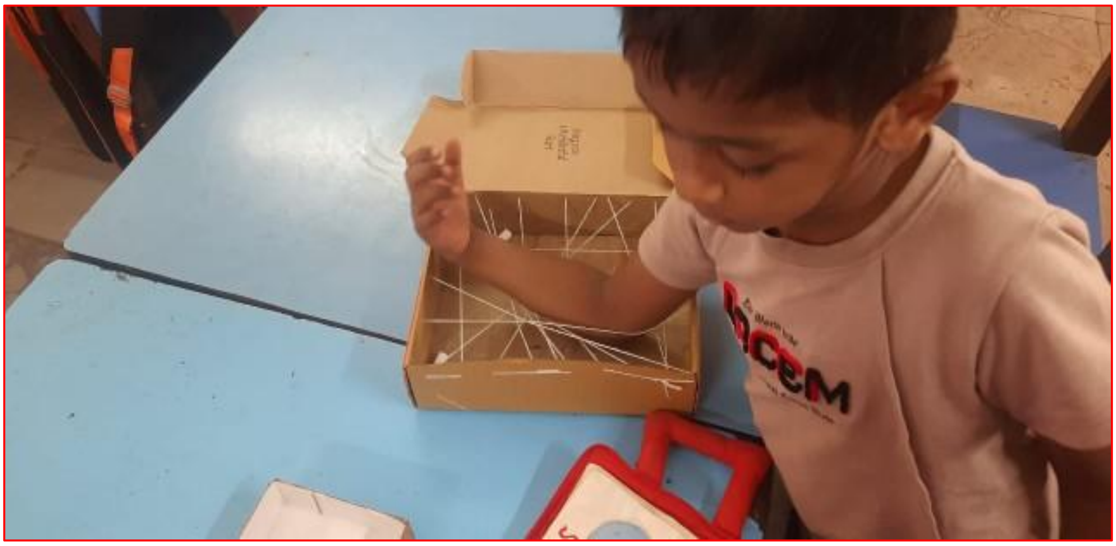

चित्र 4.101 धागों को छूते हुए हम्मार

इसके साथ-साथ स्कूल में होने वाले विभिन्न गतिविधियां भी प्रदर्शित की गई है, जिसका बच्चे आनंद लेते हैं।यह गतिविधियां उनके शारीरिक विकास और मानसिक विकास के लिए महत्वपूर्ण सिद्ध होती है।(चित्र 4.104 से चित्र 4.118 तक)

चित्र 4.102 सिर पर बुक रखकर दौड़ने की तैयारी

चित्र 4.103 सिर पर बुक रखकर दौड़ने में सहयोगी सदस्यों का दृश्य

चित्र 4.104 हाथ में गुब्बारा लेकर दौड़ते हुए बच्चें

चित्र 4.105 हाथ में गुब्बारा लेकर दौड़ते एवं शिक्षिका के साथ सीखते हुए बच्चें

चित्र 4.106 बालक की 100 मीटर रैंस का दृश्य

चित्र 4.107 बालिकाओं की 100 मीटर रैंस का दृश्य

चित्र 4.108 खेल मैदान प्रशिक्षण देते हुए शिक्षक

चित्र 4.109 खेल मैदान प्रशिक्षण लेते हुए विद्यार्थी

चित्र 4.110 विजय छात्रों का चयन करते हुए पैनल

चित्र 4.111 विजय छात्रों का चयन करते हुए पैनल

चित्र 4.112 दौड़ते हुए विद्यार्थी

चित्र 4.113 खेल मैदान प्रशिक्षण में देते हुए शिक्षार्थी

चित्र 4.114 खेल मैदान प्रशिक्षण लेते हुए विद्यार्थी

चित्र 4.115 लेमन रेस का दृश्य

चित्र 4.116 क्रिसमस पार्टी का दृश्य

चित्र 4.117 विजय अफ़िफा के साथ फोटों लेते हुए शोधार्थी

ANZA SPECIAL SCHOOL

ANTONIO DESOUZA HIGH SCHOOL

P.T.A. Regd. No. E-1171 (Mumbai) Dt. 17/10/58

Gloria Church, Sant Savta Marg, Byculla, Mumbai - 400 027. Tel.: 2375 5480 E-mail : anza.spl84@gmail.com

Anza/ Letter /2024-2025/ 194 — Dt. 18.12.2024

TO WHOM SO EVER IT MAY CONCERN

This is to certify that **Mrs. Rubina Khan**, a research scholar at Kota University, Kota, Rajasthan, conducted her case study, interviews, and assessments at Anza Special School, Byculla, Mumbai, from 11th November 2024 to 11th December 2024.

The purpose of her research was to explore **"Visual Art Importance in the Academic Life of Autistic Students: A Functional Study" (Ph.D. registration no. RS/2809/20),** with a special focus on the 4-14 age groups.

During her visit, Mrs. Khan interacted with our special children and teachers between 11:00 am and 12:30 pm. We found her to be cooperative, beneficial, and respectful in her interactions with our students and staff.

We wish her success in her research endeavors.

Head Mistress

Anza Special School

HEAD MISTRESS
ANZA SPECIAL SCHOOL
BYCULLA, MUMBAI-400 027.

चित्र 4.118 शोधार्थी का संस्थान द्वारा दिया गया प्रमाणित प्रमाण-पत्र

संदर्भ सूची

1. **https://rciregistration.nic.in/rehabcouncil/CreCalendarnew.jsp**

पंचम अध्याय

निष्कर्ष

पंचम अध्याय

निष्कर्ष

इस शोध कार्य के पूर्ण होने के पश्चात यह ज्ञात हुआ, कि बच्चा चाहे सामान्य हो या किसी भी विशेषता (विकलांगता) से पूर्ण हो उसे सदैव सही सहयोग और मार्गदर्शन की आवश्यकता रहती है। जिस प्रकार एक पेड़ कभी अपने फल नहीं खाता और अपनी छाया का सुख कभी खुद नहीं भोगता। इस प्रकार एक शिक्षक और मां के साथ-साथ पूरे समाज का यह कर्तव्य बनता है, कि बच्चों को शिक्षा संबंधी सहायता और सहयोग सदैव प्रदान किया जाए। जिससे वह बालक या बालिका और न केवल स्वयं का विकास कर सके। बल्कि संपूर्ण समाज और देश का विकास करने में सहयोगी बन सके।

पाश्चत्य देशो में ऑटिस्टिक बच्चों पर अच्छा खासा ध्यान दिया जाता है और धन व्यय किया जाता है। उनके लिए अलग से डॉक्टर नर्स के साथ-साथ साइकोलॉजिस्ट भी विद्यालय में रहती है।

साइक्लॉजिस्ट और डॉक्टर के द्वारा उनके मानसिक स्तर के अनुसार उनका पाठ्यक्रम निर्धारित करते है तथा समय- समय पर माता-पिता के साथ मिलकर बच्चों के विकास और कठिनाई संबंध में जानकारी प्राप्त की जाती है और उसी अनुसार उनके आगे का पाठ्यक्रम निर्धारित किया जाता है, ठीक इसी तरह उनके प्रगति का भी आँकलन किया जाता है।

किसी भी विषय को वह कितनी अच्छी तरह से समझ पा रहे हैं, और किस विषय या गतिविधि में उत्कृष्ट कार्य कर रहे हैं ,या नहीं कर रहे हैं । यह सब ज्ञात होने के पश्चात उस कार्य में बच्चों की रुचि देखकर उसे ज्यादा से ज्यादा कार्य-वादी बनने हेतु रणनीति का निर्धारण किया जाता है। और बच्चों को प्रोत्साहित किया जाता है, कि वह अपना कार्य पूर्ण करें। क्योंकि कार्य पूर्ण करना यहां पर प्रथम रखा जाता है।

यह जिम्मेदारी भारत के हर नागरिक को समझनी होगी, कि प्रत्येक सहयोग और सहायता के बल पर ही आगे बड़ा जा सकता है। हमारे शिक्षा नीति में अधिक से अधिक सुधार की आवश्यकता है। भारत में आईबी ,आईसीएसई, सीबीएसई (IB,ICSE,CBSE) उच्च शिक्षण के बोर्ड उपलब्ध हैं और उनमें शिक्षा का मापन भी

उचित प्रक्रिया के अनुसार किया जाता रहा है। हमारा कार्य केवल बच्चों को उच्च शिक्षण की ओर अग्रसर करना है, बल्कि उचित शिक्षा की और भी अग्रसर करना है।

उच्च शिक्षा आज के युग में बहुत महत्वपूर्ण है। इसकी तुलना कुछ इस प्रकार की जा सकती है, जैसे कि आपातकाल में रोगी को दिए जाने वाली प्राणदायनी दवा की आवश्यकता होती हैं। सही समय पर दी गई दवा से रोगी की जान बच सकती है। और सही समय पर दी गई सही शिक्षा से बच्चों की पूरी जिंदगी सही दिशा की ओर अग्रसर हो जाती है।

क्रियात्मक शोध कार्य पूरी तरह से कला पर आधारित रहा। ऑटिस्टिक बच्चों के मानसिक स्तर पर आधारित ही पाठ्यक्रम बनाया गया। यह सामान्य बच्चों की तरह शिक्षा सरलता से ग्रहण नहीं कर सकते । इन सभी बच्चों में एक सामान्य चीज केवल यही थी। कि वह अपना काम ~~सम्मय~~ तय समय सीमा में नहीं पाते थे और कुछ ही चीजों में रुचि होने के कारण वह उसे पूर्ण कर लेते थे। यदि मध्य में ही उनका मन भर जाता था। तो वह कार्य करते-करते उठ जाते थे।

ऑटिस्टिक बच्चों की कक्षा का वातावरण भी कुछ इसी प्रकार था। यदि उनका कार्य करने में मन नहीं लगता तो वह अपनी जगह से उठकर खेल सकते थे। इसकी अनुमति शिक्षिका द्वारा उन्हें पूर्व में ही प्राप्त था। पूर्व में किए गए शोध के आधार पर यह ज्ञात हुआ, कि कला का कार्य केवल उपयोगी और ललित कला तक सीमित न रहकर शिक्षा का एक अभिन्न अंग बन जाता है। कला शिक्षा जितनी उपयोगी सिद्ध होती है, उससे कहीं अधिक शिक्षा में । कला का उपयोग सिद्ध होता है। यदि शिक्षा में कला का उपयोग सही से किया जाए तो शिक्षा कि गुणवत्ता को सुधारा जा सकता है और विद्यार्थियों के लिए शिक्षा का कार्य अधिक सुगम बनाया जा सकता है। यहां पर कला के द्वारा विद्यार्थियों के शिक्षण कार्य को सुगम बनने का कार्य किया गया हैं।

ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर एक न्यूरोडेवलपमेंटल स्थिति है, जिसमें बच्चों को कई प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है जो निम्न प्रकार है-

1. संचार- शिक्षिका के द्वारा दिए गए, दिशा निर्देशों को समझने में उन्हें काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, उनका ध्यान केंद्रित करने और अन्य गतिविधियों को नियमित करने में उनको कई दिक्कतों करना पड़ता है।

2. सामाजिक व्यवहार- सम्मिलित रूप से कार्य करने में उन्हें काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ता है, क्योंकि जहां पर वह कुछ काम करना चाहते हैं। वहीं उनके

सहयोगी किसी ओर काम को करने की इच्छा रख सकते है। साथ ही सभी विद्यार्थियों का स्वभाव एक दूसरी से मेल नहीं खाता है। मित्रता करने में भी कठिनाई आती है।

3. संवेदी संबंधी समस्या- ऑटिस्टिक बच्चों को कक्षा में पढ़ते समय, तेज रोशनी, तेज आवाज,। शिक्षिका द्वारा जोर से बोलना आदि उनके शिक्षण को प्रभावित करता है। उनकी कक्षा को समायोजित वातावरण रखना आवश्यक है|

4. चिंता और भावनात्मक समस्या- ऑटिस्टिक बच्चों को शिक्षा में कई बाधाओं का सामना करना पड़ता है। कई बार जटिल कार्यक्रम और विस्तारित कार्य की वज़ह से वह अवसाद से ग्रसित हो जाते है।

5. कक्षा का वातावरण- ऑटिस्टिक बच्चों को एक ही तरह के वातावरण की आदत होती है, यदि वातावरण में थोड़ा सा भी बदलाव किया जाए तो वह विचलित हो जाते है और शिक्षण कार्य में उनको बाधा का सामान करना पड़ता है।

कला और प्रदर्शन कला के माध्यम से जब शिक्षण कार्य पूर्ण किया गया। तो पूर्व में किए गए शिक्षण की तुलना शोध कार्य में किए गए शिक्षण से की गई। यहां पर अविश्वसनीय परिणाम सामने आए जैसे कि शोध परिकल्पना में तय था कि प्रत्येक बच्चे की मानसिक स्थिति अलग है। उनको आयु वर्ग में और मानसिक स्थिति के अनुसार वर्गीकृत करना अत्यधिक महत्वपूर्ण था और उसी के हिसाब से पाठ्यक्रम का निर्धारण किया गया पाठ्यक्रम सरल और सहजता के साथ बनाया गया।हर विषय वस्तु को अच्छी तरह से समझ में आने लायक बनाए गए। भाषा संबंधी, तार्किक समस्या और गणित जैसे कठिन विषयों को कला के द्वारा सरलता से समझ सके और अपने आस-पास रखे गए वस्तुओं कि और इंगित करके उनकी तुलना उन वस्तुओं और आकारों से करने में सक्षम रहे।

ऑटिज्म की बढ़ती हुई जानकारी और नए शोध के अनुसार यहां पर कला के माध्यम से उनके शिक्षण विकास मे सुधार का प्रयास किया गया है। कला के माध्यम से ऑटिस्टिक बच्चों की शिक्षण में सुधार कई तरीकों से किया जा सकता है। जिसमें कला थेरेपी, ड्राइंग एंड पेंटिंग, परफॉर्मिंग कला, मिम्क्री इत्यादि हो सकती है। इन सभी की वजह से कला के द्वारा बच्चों में आंखों का संपर्क, सामाजिक व्यवहार में बदलाव, शिक्षा की गुणवत्ता का सही होना तथा आत्मविश्वास कि बढ़ोतरी देखी जा सकती है।

पूर्व से किए शोध से हमें यह ज्ञात होता है, कि कला से बच्चों में उनके शिक्षण विकास, मोटर स्किल्स,न्यूरोडेवलपमेंट को बेहतर करने में सहायक है। सबसे महत्वपूर्ण प्रभाव आर्टिस्टिक बच्चों का भाषा संचार में सुधार हुआ है और उनका शिक्षण कार्य में प्रगति आई है। (RCT Systematic Review, 2025)।

शोध कार्य 4 से 14 वर्ष बच्चों के मध्य किया गया था। शोध कार्य में यह ज्ञात करना था। कि कला के द्वारा माध्यम से उनके जीवन में और उनके शिक्षण कार्य में क्या-क्या बदलाव आ सकते हैं।

कला के ज़रिए सीखना 4-14 वर्ष आयु के ऑटिस्टिक बच्चों के लिए शिक्षा को अधिक समावेशी, प्रभावी और आनंददायक बना सकता है। प्रारंभिक बचपन में यह विकास की नींव मजबूत करता है, मध्य बचपन में शैक्षिक और सामाजिक कौशल सुधारता है, और किशोरावस्था में आत्म-पहचान और भावनात्मक संतुलन विकसित करता है। भविष्य में यदि कला -आधारित शिक्षण को मुख्यधारा शिक्षा में अधिक शामिल किया जाए, तो यह ऑटिस्टिक बच्चों के समग्र विकास के लिए अत्यंत लाभकारी साबित हो सकता है।

• 4 से 6 वर्ष की उम्र में बच्चों का मस्तिष्क का विकास तेजी से होता है, इस उम्र में वह हर एक चीज को अच्छे से समझते हैं और जल्दी ग्रहण करने की क्षमता रखते हैं वही ऑटिस्टिक बच्चों में काफी सेंसरी इश्यूज होते हैं।

• कला के माध्यम से उनके संचार में और व्यवहार में काफी बदलाव आया। जो बच्चे चुप-चुप बैठा करते थे। वह धीरे-धीरे बात करना शुरू किया भले ही वह इशारों में हो उनमें ग्रहण करने की क्षमता में विकास हुआ। वह जल्दी ही अल्फाबेट्स और कहानी लेखन जैसे कार्यो को करने में पूर्ण रूप से सक्षम बन रहे हैं।

• कला के माध्यम से आत्मविश्वास में विकास और तनाव और चिंता में कमी पाई गई।

• कला के द्वारा उनका गैर मौखिक संचार बड़ा और उनका एक ही विषय को लेकर ध्यान की अवधि बड़ी है। जिससे वह किसी भी कार्य को कला के माध्यम से अधिक समय तक कर सकते हैं। वह एकाग्रचित होकर काम कर सकते है।

शोध कार्य के पश्चात शिक्षा संबंधी परिवर्तन

6 से 10 वर्ष की उम्र में बच्चे अपनी प्रारंभिक शिक्षा प्रणाली में प्रवेश करते हैं। यहां पर ऑटिस्टिक बच्चों को भाषा, कहानी निर्माण, तार्किक समस्याओं जैसे गतिविधियों से अवगत कराया गया।

इस आयु वर्ग में कला के द्वारा आए शैक्षिक प्रभाव:

- भाषा और संचार कौशल में सुधार
- समूह गतिविधियों के माध्यम से सामाजिक सहयोग
- ध्यान और सीखने की क्षमता में वृद्धि
- व्यवहार नियंत्रण और आत्म-नियमन

इस आयु में बच्चों की मानसिक स्थिति के अनुसार पाठ्यक्रम निर्धारित किया गया था। तथा शोध के बाद यह ज्ञात हुआ ,कि जब कला का उपयोग कहानी लेखन और वाचन,रंगों के साथ अक्षरों के ज्ञान में ,व्यक्ति और वस्तु को पहचानने में किया गया। तो यह अधिगम उनके लिए अधिक से अधिक सरल बन गया तथा पूर्व की तुलना में वह शिक्षण को अधिक सरलता से ग्रहण कर सके तथा वह लंबे समय तक याद रखने में कला सहायक बनी।

6 से 10 वर्ष के बच्चों के बीच जब यह शोध कार्य किया गया। तब उन्हें काफी सेंसरी दिक्क़ते रहती थी, इन परेशानियों को ध्यान में रखते हुए उनके पाठ्यक्रम में छूने वाली चीजों का ज्यादा उपयोग किया गया। जिससे कि वह चीजों को छूकर महसूस कर सकें। और उनको अनुभव करके उसका उपयोग सीखने में कर सके।

पूर्व में उन्हें किसी भी कार्य को करने में अधिक समय लगता था और वह कम समय के लिए एकाकृत होकर उसे कार्य को कर पाते थे। उनकी ध्यान अवधि काफी कमजोर थी।

शोध के पश्चात उनके भाषा में उनके कार्य अवधि में विकास हुआ तथा वह छोटे कार्यों को सटीक रूप में करने लगे,जहां बड़े कार्यो को करने में उन्हें अधिक समय और श्रम ख़र्च होता था। वही कला के माध्यम से कार्य सरल और सुगम बन गया।

और कला के माध्यम से किए गए कार्यों से उनकी मोटर गतिविधियों में विकास हुआ जो उनके शारीरिक और मानसिक विकास के लिए अत्यधिक उपयोगी है। रंगों के माध्यम से उन्होंने अपनी भावनाओं को व्यक्त करना सीखा। वह रंगों को देखकर उत्साहित हो उठे जिस कारण लिखित कार्यों का बदलाव रंगीन पेन्सिल और वेक्स रंगों से किया गया।

रंगों से कार्य करने के पश्चात वह कार्य उन्हें बोझिल नहीं लगा और उन्होंने जल्दी ही उस कार्य को संपन्न कर लिया । यह छोटे- छोटे सुधार शिक्षण में प्रगति

का कारण बन सकते हैं। ऑटिस्टिक बच्चे अन्य बच्चों की तुलना में थोड़े भिन्न होते हैं। थोड़े बहुत बदलाव से उनके शिक्षण में काफी बदलाव आया है। यदि यह कार्य सतत रूप से किया जाए तो, वह उच्च शिक्षा की ओर अग्रसर हो सकते हैं।

10-14 वर्ष की उम्र में बच्चे पहचान निर्माण और सामाजिक समझ विकसित करते हैं। इस चरण में कला उन्हें आत्म-अभिव्यक्ति, भावनात्मक नियंत्रण और समस्या समाधान कौशल विकसित करने में मदद करता है।

शोध बताता है कि कला और म्यूजिक आधारित थेरेपी से लगभग 29% मामलों में संज्ञानात्मक, भावनात्मक और सामाजिक कौशल में सुधार देखा गया, जबकि संचार और सामाजिक कौशल में भी महत्वपूर्ण सुधार पाया गया।

इसके अलावा, कला गतिविधियाँ बच्चों को तनाव और चिंता से निपटने में मदद करती हैं, जिससे उनकी कक्षा में भागीदारी और शैक्षणिक प्रदर्शन बेहतर होता है।

इस आयु वर्ग में कला के फायदे:

- **आत्मविश्वास और पहचान निर्माण**
- **रचनात्मक सोच और समस्या समाधान**
- **भावनात्मक संतुलन**
- **सामाजिक संबंध मजबूत करना**

10 से 14 वर्ष की आयु में ऑटिस्टिक होने की वजह से बच्चों में आत्मविश्वास की कमी और अपनी बातों को दूसरों तक पहुंचाने की असमर्थता पाई जाती है। यहां पर चित्रों और खिलौने की सहायता से और स्वतंत्रता के माध्यम से उन्होंने यह सिखाया गया कि अपनी बात दूसरों तक कैसे पहुंचा सकते हैं, तथा उन्हें स्वयं भी यह काफी अच्छा लगा।

जब उन्हें चित्रण कार्य में स्वतंत्रता प्रदान की गई तो उन्होंने अपना पारिवारिक चित्रण करने में काफी रूचि दिखाई इसी तरह यदि उनका मूल्यांकन स्वतंत्र रूप से उनके मानसिक स्तर पर किया जाए तो यह आशा की जा सकती है कि वह प्रोत्साहित होकर अपना शिक्षण कार्य कला के माध्यम से काफी अच्छा कर सकते हैं।

मूल्यांकन के लिए शिक्षण कार्य के बीच में ही उनसे प्रश्न पूछे गए, कि यह कौन सा रंग है। इस खिलौने का क्या नाम है, तो उन्होंने इसका सही-सही उत्तर दिया और उत्तर नहीं देने के अवस्था में उन्होंने शोधकर्ता का हाथ पकड़ कर किसी वस्तु की तरफ इशारा किया।

10 से 14 वर्ष के सामान्य बच्चों में भी कई बार भावात्मक असुरक्षा चिंता और अवसाद पाया जाता है और इसी के साथ यदि हम तुलना ऑटिस्टिक बच्चो की करते है। तो यह विषय पर विचार अत्यधिक गम्भीर बन जाता है।

ऑटिस्टिक बच्चों को भी भावात्मक रूप में समर्थ बनाने के लिए स्वतंत्र छोड़ना पड़ता है, यहां पर स्वतंत्रता केवल कार्य करने हेतु ही दी जाती है। किसी भी विषय पर अपने भावों को कागज पर उकेरना, रंग भरना उनकी भावनाओं को व्यक्त करने की स्वतंत्रता है।

कला के माध्यम से जब उन्हें विषय संबंधी चित्र बनाने को कहा गया। तो उन्होंने बिना देखें अपनी मानसिक स्तर पर उन चीजों को याद करके चित्रण किया भले ही वह चित्रण अधूरा सा रह गया। किंतु ध्यान से देखने पर यह प्रतीत हुआ, कि सामान्य बच्चों की तरह ही आर्टिस्टिक बच्चों ने भी एकदम सही चित्रण किया ।

तार्किक समस्याओं का समाधान भी ऑटिस्टिक बच्चों ने कला के माध्यम से काफी जल्दी संपन्न कर लिया। इस कार्य से यह निष्कर्ष निकला। कि यदि उन्हें तार्किक समस्याएं किताबी ना होकर प्रदर्शित रूप में दी जाए, तो वह उसका समाधान जल्दी से जल्दी कर सकते हैं। जिस प्रकार लकड़ी के अलग-अलग ब्लॉक को जोड़कर उन्होंने आकृति निर्माण किया।

बने हुए चित्रों को उन्होंने सही रूप में पहचान तथा उनके विभिन्न उपयोगों को इशारों के माध्यम से वह शब्दों के माध्यम से व्यक्त किया और बच्चों ने कला के आधार पर समस्या का समाधान और अभिव्यक्त करना अद्भुत था।

अंत में शोध में यह पाया गया की और ऑटिस्टिक बच्चों का पाठ्यक्रम और शिक्षण अधिगम उनके मानसिक स्तर को और आयु को लेकर होना चाहिए । जिससे कि वह अपने शिक्षण कार्य को पूर्ण रूप से कर सके। और ऑटिस्टिक बच्चों का पाठ्यक्रमपूर्ण रूप से कला आधारित और प्रदर्शित होना चाहिए जिससे कि वह मानसिक स्तर पर उसे समझ सके और उसी अनुसार अपने कार्य को कर सके जिससे कि उनके आगे का जीवन और उनकी शिक्षा को उच्च बनाया जा सकता है। यह न केवल कुछ बच्चों का विषय है बल्कि यह संपूर्ण देश व विश्व का चिंताजनक विषय है। जहां पर काफी शोध कार्य करने व सामाजिक कार्य करने की जरूरत है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. An, Q. (2025). Drawing therapy and emotional regulation in children with autism spectrum disorder.
2. Art Therapy and Autism: A Picture of the Literature. (2024). Journal of the American Academy of Special Education Professionals
3. Creative Arts Therapy Review. (2024). Creative arts therapy for autistic children: A systematic review.
4. Jia, X. (2023). The effectiveness of art therapy on social development in children with autism spectrum disorders.
5. MDPI. (2023). Interventions through art therapy and music therapy in pediatric neurodevelopmental disorders.
6. Moulik, M. R., & Dutt, S. (2025). Color in art therapy for emotional and sensory support in children with autism. International Journal of Indian Psychology.
7. Vrisaba, N. A., & Yudiharso, A. (2021). Systematic review of art therapy in children with autism spectrum disorder.
8. Wei, S., Lai, A. H. Y., & Ho, H. W. H. (2025). The effectiveness of art therapy on children and adolescents with ASD: A systematic review of RCTs.

शोध सारांश

शोध सारांश

प्रथम अध्याय : दृश्य कला

1. दृश्य कला

(i) परिचय

भारतीय संस्कृति में कला को जीवन का अनिवार्य अंग माना गया है। कला के जनक के रूप में भगवान शिव को स्वीकार किया गया है, क्योंकि उनके द्वारा तांडव नृत्य की रचना तथा अनेक पुराणों में कलात्मक चेतना का वर्णन मिलता है। भगवान शिव को **"प्रथम गुरु"** भी कहा जाता है, जिन्होंने सृष्टि को लय, गति और सौंदर्य से जोड़ा। दृश्य कला की मानव जीवन में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका रही है। आदिम समाज से लेकर आधुनिक युग तक कला मनुष्य के जीवन का अभिन्न अंग रही है और सामाजिक, सांस्कृतिक तथा मानसिक विकास का आधार बनी है।

भारतीय दर्शन में कला के महत्व को निम्न श्लोक द्वारा स्पष्ट किया गया है–

"साहित्यसंगीतकलाविहीनः साक्षात्पशुः पुच्छविषाणहीनः।
तृणं न खादन्नपि जीवमानस्तद्भागधेयं परमं पशूनाम् ॥"

इस श्लोक का भावार्थ यह है कि साहित्य, संगीत और कला से रहित व्यक्ति, बिना पूँछ और सींग वाला पशु समान है। इससे यह स्पष्ट होता है कि कला मानव को संवेदनशील, विवेकशील और सभ्य बनाती है।

दृश्य कला में सबसे महत्वपूर्ण शब्द "कला" है। प्राचीन काल से ही कला का विशेष महत्व रहा है। आदि मानव ने कला का उपयोग सबसे पहले संवाद स्थापित करने के लिए किया। इसके प्रमाण हमें गुफा चित्रों में देखने को मिलते हैं, जैसे भीमबेटका और अल्तामीरा की गुफाएँ। इन चित्रों में शिकार, नृत्य, पशु-पक्षी और दैनिक जीवन के दृश्य अंकित हैं, जो उस समय के मानव जीवन को समझने में सहायता करते हैं (Arnheim, 1974)।

आदि काल से ही कला मनुष्य के जीवन का अभिन्न अंग रही है। इसका उपयोग संवाद स्थापित करने के साथ-साथ प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति और मनोरंजन के लिए भी किया जाता था। इन कलात्मक साक्ष्यों के माध्यम से आज भी हम उस समय के स्थान, सामाजिक संरचना और गतिविधियों का अनुमान लगा सकते हैं। इस प्रकार दृश्य कला ऐतिहासिक दस्तावेज़ के रूप में भी कार्य करती है।

(ii) दृश्य कला का अर्थ

दृश्य कला से आशय उन कलाओं से है जिन्हें हम देख सकते हैं और जिनके माध्यम से विचारों, भावनाओं और अनुभवों की अभिव्यक्ति दृश्य रूप में की जाती है। इसमें रेखा, रंग, आकार, बनावट और संरचना जैसे तत्वों का प्रयोग किया जाता है। दृश्य कला मानव की कल्पनाशक्ति और रचनात्मकता को मूर्त रूप प्रदान करती है। यह कला केवल सौंदर्य तक सीमित नहीं होती, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक अर्थ भी संप्रेषित करती है (Eisner, 2002)।

(iii) विभिन्न प्रकार की दृश्य कलाएँ

दृश्य कला अपने आप में एक विशाल और व्यापक विषय है, जिसका उल्लेख प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक मिलता है। इसमें समय-समय पर सामाजिक, मानसिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों के अनुसार नए आयाम जुड़ते रहे हैं। यहाँ मानसिक परिवर्तन का उल्लेख इसलिए आवश्यक है क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति का कला के प्रति अनुभव, दृष्टिकोण और अभिव्यक्ति भिन्न होती है। यही कारण है कि एक ही कलाकृति को अलग-अलग व्यक्ति अलग अर्थों में समझते हैं (Eisner, 2002)।

दृश्य कलाओं को मुख्य रूप से दो श्रेणियों में विभाजित किया जाता है–

- **ललित कलाएँ (Fine Arts)**

ललित कलाओं का उद्देश्य सौंदर्यबोध और आत्म-अभिव्यक्ति होता है। इसके अंतर्गत चित्रकला, मूर्तिकला, ग्राफिक कला और फोटोग्राफी आती हैं। ये कलाएँ मनुष्य की भावनाओं, विचारों और कल्पनाशक्ति को दृश्य रूप प्रदान करती हैं।

- **उपयोगी कलाएँ (Applied Arts)**

उपयोगी कलाओं में सौंदर्य के साथ-साथ उपयोगिता पर भी बल दिया जाता है। इसमें शिल्पकला, वस्त्र डिज़ाइन, आंतरिक सज्जा, वास्तुकला और औद्योगिक डिज़ाइन शामिल हैं। ये कलाएँ दैनिक जीवन को सुंदर और सुविधाजनक बनाने में सहायक होती हैं।

(iv) शिक्षा के क्षेत्र में दृश्य कला का महत्व

शिक्षा के क्षेत्र में दृश्य कला की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। दृश्य कला छात्रों के शैक्षणिक जीवन में उनके प्रदर्शन को बढ़ाने में सहायक होती है। कला-आधारित शिक्षण छात्रों की रचनात्मकता, कल्पनाशक्ति और समस्या-समाधान क्षमता को

विकसित करता है (Gardner, 1993)। जब छात्र किसी विषय को चित्र, चार्ट या मॉडल के माध्यम से समझते हैं, तो उनकी समझ अधिक गहरी और स्थायी होती है।

दृश्य कला छात्रों में अवलोकन शक्ति, विश्लेषणात्मक सोच और अभिव्यक्ति कौशल को विकसित करती है। कला गतिविधियों के माध्यम से छात्र अपने विचारों और भावनाओं को स्वतंत्र रूप से व्यक्त करना सीखते हैं, जिससे उनका आत्मविश्वास बढ़ता है। इसके अतिरिक्त, कला शिक्षा भावनात्मक संतुलन और मानसिक स्वास्थ्य को भी सुदृढ़ बनाती है।

शोध बताते हैं कि जिन छात्रों को कला-आधारित शिक्षा प्राप्त होती है, वे भाषा, गणित और विज्ञान जैसे विषयों में भी बेहतर प्रदर्शन करते हैं (Winner, Goldstein, & Vincent-Lancrin, 2013)। दृश्य कला सहयोग, धैर्य और अनुशासन जैसे गुणों को विकसित करती है, जो समग्र व्यक्तित्व विकास के लिए आवश्यक हैं।

इस प्रकार, दृश्य कला केवल एक विषय नहीं है, बल्कि यह शिक्षा को जीवंत, प्रभावी और आनंददायक बनाने का सशक्त माध्यम है।

2. प्रदर्शन कला

प्रदर्शन कला वे कलाएँ हैं जिनमें अभिव्यक्ति को मंच या प्रस्तुति के माध्यम से दर्शाया जाता है। इसमें शरीर, ध्वनि, लय और भाव-भंगिमा का प्रयोग किया जाता है।

(i) प्रदर्शन कला की परिभाषा

प्रदर्शन कला वह कला है जिसमें कलाकार अपने भावों और विचारों को नृत्य, संगीत, नाट्य या अभिनय के माध्यम से दर्शकों के समक्ष प्रस्तुत करता है।

(ii) दृश्य कला और प्रदर्शन कला के बीच मुख्य अंतर

दृश्य कला स्थिर होती है और देखने पर आधारित होती है, जबकि प्रदर्शन कला गतिशील होती है और प्रस्तुति पर आधारित होती है। दृश्य कला में चित्र या मूर्ति स्थायी रूप में होती है, जबकि प्रदर्शन कला क्षणिक होती है और मंच पर जीवंत रूप में प्रस्तुत की जाती है।

(iii) शिक्षा के क्षेत्र में प्रदर्शन कला का महत्व

प्रदर्शन कला शिक्षा में भावनात्मक, सामाजिक और संचार कौशल के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। नृत्य, नाटक और संगीत छात्रों में आत्मविश्वास, सहयोग और अनुशासन को बढ़ावा देते हैं। यह कला छात्रों को भावनात्मक

अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान करती है और उनकी संप्रेषण क्षमता को सशक्त बनाती है (Eisner, 2002)।

द्वितीय अध्याय : दृश्य कला और प्रदर्शन कला का अन्य विषयो पर प्रभाव

भूमिका

आधुनिक शिक्षा में केवल पुस्तकीय ज्ञान पर्याप्त नहीं माना जाता। प्रभावी शिक्षण के लिए रचनात्मक, अनुभवात्मक और सहभागितापूर्ण विधियों की आवश्यकता होती है। दृश्य कला (चित्रकला, मूर्तिकला, ग्राफिक डिज़ाइन) और प्रदर्शन कला (नृत्य, संगीत, नाटक) ऐसी ही विधियाँ हैं जो सीखने की प्रक्रिया को जीवंत और अर्थपूर्ण बनाती हैं। अनुसंधानों से यह सिद्ध हुआ है कि कला-आधारित शिक्षा से विद्यार्थियों की संज्ञानात्मक क्षमता, समझ और स्मरण शक्ति में वृद्धि होती है (Eisner, 2002)।

(i) भाषा शिक्षण में कला का महत्व

दृश्य कला : भाषा शिक्षण में दृश्य और प्रदर्शन कला अत्यंत प्रभावी साधन हैं। चित्र, पोस्टर और स्टोरीबोर्ड के माध्यम से शब्दावली और अर्थबोध विकसित होता है। प्रदर्शन कला:- नाटक, संवाद-अभिनय और भूमिका-निर्वहन से उच्चारण, अभिव्यक्ति और आत्मविश्वास में सुधार होता है। विद्यार्थी भाषा को केवल पढ़ते नहीं, बल्कि उसे अनुभव करते हैं, जिससे संप्रेषण कौशल सशक्त होता है (Rabkin & Redmond, 2006)।

(ii) गणित शिक्षण में योगदान

दृश्य कला :

गणित को अक्सर अमूर्त और कठिन विषय माना जाता है, किंतु दृश्य कला और इसे सरल बना सकती हैं। आकृतियों, पैटर्न, चार्ट और मॉडल के माध्यम से गणितीय अवधारणाएँ स्पष्ट होती हैं।

प्रदर्शन कला :

संगीत में ताल और लय गणना, अनुपात और क्रम को समझने में सहायक होते हैं। नृत्य के माध्यम से पैटर्न और अनुक्रम को शारीरिक अनुभव से जोड़ा जा सकता है, जिससे गणितीय सोच विकसित होती है (Gardiner et al., 1996)।

(iii) सामाजिक विज्ञान में कला की भूमिका

दृश्य कला :

सामाजिक विज्ञान में दृश्य कला, मानचित्र-चित्रण, पोस्टर निर्माण और लोकनृत्य विद्यार्थियों को संस्कृति, परंपरा और समाज की गहरी समझ प्रदान करते हैं। जिससे आलोचनात्मक और विश्लेषणात्मक दृष्टि विकसित होती है

प्रदर्शन कला :

प्रदर्शन कला विषय को सजीव बनाती हैं। ऐतिहासिक घटनाओं पर आधारित नाटक के माध्यम से विद्यार्थी अतीत और वर्तमान के बीच संबंध स्थापित कर पाते हैं, (Winner et al., 2013)।

(iv) विज्ञान शिक्षण में प्रभाव

दृश्य कला :

विज्ञान के शिक्षण में मॉडल, चार्ट और चित्र जैसी दृश्य कलाएँ जटिल अवधारणाओं को स्पष्ट करती हैं। नाटक और माइम के माध्यम से वैज्ञानिक प्रक्रियाओं–जैसे जल चक्र, कोशिका विभाजन या ऊर्जा रूपांतरण–को सरल रूप में समझाया जा सकता है। यह विधि अवधारणा स्पष्टता बढ़ाने के साथ-साथ वैज्ञानिक जिज्ञासा को भी प्रोत्साहित करती है (Hetland et al., 2013)।

निष्कर्ष

दृश्य कला और प्रदर्शन कला शिक्षा को बहुआयामी बनाती हैं। ये भाषा, गणित, सामाजिक विज्ञान और विज्ञान जैसे विषयों में न केवल रुचि उत्पन्न करती हैं, बल्कि गहन समझ, रचनात्मकता और समस्या-समाधान क्षमता भी विकसित करती हैं। इसलिए कला-आधारित शिक्षण को आधुनिक शिक्षा प्रणाली का अनिवार्य अंग बनाया जाना चाहिए।

तृतीय अध्याय : ऑटिज़्म

(i) परिचय

ऑटिज़्म, जिसे चिकित्सकीय भाषा में ऑटिज़्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर (Autism Spectrum Disorder - ASD) कहा जाता है, एक तंत्रिका-विकासात्मक विकार है जो मुख्यतः व्यक्ति के सामाजिक व्यवहार, संप्रेषण क्षमता और रुचियों को प्रभावित करता है। ऑटिज़्म कोई बीमारी नहीं, बल्कि मस्तिष्क के विकास से जुड़ी एक भिन्न अवस्था है। यह अवस्था जन्म से ही मौजूद होती है और जीवनभर व्यक्ति के साथ

रहती है। हाल के वर्षों में ऑटिज़्म के प्रति जागरूकता बढ़ी है, जिससे यह समझ विकसित हुई है कि ऑटिस्टिक व्यक्ति भी अपनी विशिष्ट क्षमताओं के माध्यम से समाज में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं (APA, 2013)।

ऑटिज़्म को "स्पेक्ट्रम" कहा जाता है क्योंकि इसके लक्षण और उनकी तीव्रता प्रत्येक व्यक्ति में अलग-अलग होती है। कुछ व्यक्ति अत्यधिक सहायता पर निर्भर होते हैं, जबकि कुछ उच्च बौद्धिक क्षमता और असाधारण प्रतिभा के साथ स्वतंत्र जीवन जीते हैं।

(ii) ऑटिज़्म की परिभाषा

अमेरिकन साइकियाट्रिक एसोसिएशन के अनुसार, ऑटिज़्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर एक ऐसा विकासात्मक विकार है जिसमें व्यक्ति को सामाजिक संपर्क, संचार और व्यवहार में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, साथ ही सीमित और दोहरावपूर्ण रुचियाँ दिखाई देती हैं (2013)।

सरल शब्दों में, ऑटिज़्म वह अवस्था है जिसमें व्यक्ति का मस्तिष्क जानकारी को सामान्य से अलग तरीके से ग्रहण और संसाधित करता है। ऑटिस्टिक व्यक्ति संवेदनात्मक (sensory) उत्तेजनाओं के प्रति अधिक या कम संवेदनशील हो सकते हैं, जैसे तेज़ आवाज़, रोशनी या स्पर्श।

ऑटिज़्म के प्रमुख लक्षण

ऑटिज़्म के कुछ सामान्य लक्षण निम्नलिखित हैं–

- सामाजिक संपर्क में कठिनाई
- आँखों से संपर्क कम करना
- बोलने में विलंब या असामान्य भाषा प्रयोग
- दोहरावपूर्ण व्यवहार (जैसे हाथ हिलाना, वस्तुओं को घुमाना)
- सीमित रुचियाँ और दिनचर्या में बदलाव से असहजता
- कुछ मामलों में असाधारण स्मरण शक्ति या विशिष्ट कौशल

हालाँकि, यह ध्यान रखना आवश्यक है कि हर ऑटिस्टिक व्यक्ति में ये सभी लक्षण हों, ऐसा आवश्यक नहीं है।

(iii) ऑटिज़्म के प्रकार

ऑटिज़्म को मुख्यत: निम्न प्रकारों में समझा जाता है–

(i) ऑटिज़्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर (ASD)

यह सबसे व्यापक श्रेणी है, जिसमें हल्के से लेकर गंभीर स्तर तक के ऑटिज़्म शामिल हैं। इसमें सामाजिक और संचार संबंधी कठिनाइयाँ प्रमुख होती हैं।

(ii) एस्परगर सिंड्रोम (Asperger's Syndrome)

इस प्रकार के ऑटिज़्म में व्यक्ति की भाषा और बौद्धिक क्षमता सामान्य या उच्च होती है, लेकिन सामाजिक संपर्क और भावनात्मक समझ में कठिनाई होती है। कई प्रसिद्ध और सफल व्यक्तित्व इसी श्रेणी में आते हैं (Attwood, 2007)।

(iii) बचपन का विघटनकारी विकार (Childhood Disintegrative Disorder)

इसमें बच्चे का प्रारंभिक विकास सामान्य होता है, लेकिन 2-4 वर्ष की आयु के बाद भाषा, सामाजिक और मोटर कौशल में गिरावट आने लगती है। यह एक दुर्लभ प्रकार है।

(iv) व्यापक विकासात्मक विकार - अन्यथा निर्दिष्ट नहीं (PDD-NOS)

इस श्रेणी में वे बच्चे आते हैं जिनमें ऑटिज़्म के कुछ लक्षण होते हैं, लेकिन वे पूर्ण रूप से किसी एक श्रेणी में नहीं आते।

- **प्रसिद्ध ऑटिस्टिक व्यक्तित्व और उनकी उपलब्धियाँ**

ऑटिज़्म किसी व्यक्ति की सफलता में बाधा नहीं है। इतिहास और वर्तमान में कई ऐसे व्यक्तित्व हुए हैं जिन्होंने अपनी विशिष्ट क्षमताओं से दुनिया को प्रेरित किया है।

1. टेम्पल ग्रैंडिन (Temple Grandin)

टेम्पल ग्रैंडिन एक प्रसिद्ध वैज्ञानिक, पशु व्यवहार विशेषज्ञ और लेखिका हैं। वे स्वयं ऑटिस्टिक हैं और उन्होंने पशु पालन उद्योग में मानवीय सुधार किए। उनकी दृश्य सोचने की क्षमता ने उन्हें एक सफल वैज्ञानिक बनाया (Grandin, 2006)।

2. स्टीफन विल्टशायर (Stephen Wiltshire)

स्टीफन विल्टशायर एक विश्वविख्यात ऑटिस्टिक कलाकार हैं, जिन्हें फोटोग्राफिक मेमोरी के लिए जाना जाता है। वे किसी शहर को एक बार देखकर उसका विस्तृत चित्र बना सकते हैं। उनकी कला ने यह सिद्ध किया कि ऑटिज़्म रचनात्मकता की सीमा नहीं, बल्कि एक अलग दृष्टिकोण है।

3. ग्रेटा थुनबर्ग (Greta Thunberg)

ग्रेटा थुनबर्ग एक प्रसिद्ध पर्यावरण कार्यकर्ता हैं। वे एस्परगर सिंड्रोम से ग्रसित हैं और इसे अपनी "सुपरपावर" मानती हैं। उनका स्पष्ट और केंद्रित सोचने का तरीका वैश्विक जलवायु आंदोलन का आधार बना (Thunberg, 2019)।

4. डैन आयक्रॉयड (Dan Aykroyd)

डैन आयक्रॉयड एक प्रसिद्ध अभिनेता और पटकथा लेखक हैं। उन्हें एस्परगर सिंड्रोम है। उनकी रचनात्मकता और विशिष्ट रुचियों ने उन्हें हॉलीवुड में अलग पहचान दिलाई।

5. रेट सिंड्रोम: इस प्रकार से संचार और व्यवहार संबंधी महत्वपूर्ण चुनौतियाँ हो सकती हैं, जो दैनिक जीवन कौशल को प्रभावित करती हैं। एक दुर्लभ और गंभीर न्यूरोलॉजिकल और जेनेटिक विकार है। यह लड़कों की तुलना में लड़कियों को अधिक प्रभावित करता है। सामान्य ऑटिज़्म की तरह, इसके लक्षण बच्चों में 2 वर्ष की आयु में दिखाई देने लगते हैं।

निष्कर्ष

ऑटिज़्म कोई कमजोरी नहीं, बल्कि मानव विविधता का एक स्वरूप है। ऑटिस्टिक व्यक्तियों में चुनौतियों के साथ-साथ विशिष्ट क्षमताएँ भी होती हैं। सही मार्गदर्शन, समावेशी शिक्षा और सामाजिक समर्थन के माध्यम से वे अपने जीवन में असाधारण उपलब्धियाँ प्राप्त कर सकते हैं। प्रसिद्ध ऑटिस्टिक व्यक्तित्वों के जीवन हमें यह सिखाते हैं कि समझ, स्वीकार्यता और अवसर मिलने पर हर व्यक्ति समाज के लिए मूल्यवान योगदान दे सकता है।

चतुर्थ अध्याय : ऑटिज़्म से पीड़ित विद्यार्थियों के शैक्षिक जीवन पर दृश्य कला का प्रभाव व महत्त्व

प्रस्तावना

ऑटिज़्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर (ASD) एक न्यूरो-विकासात्मक स्थिति है, जिसमें संचार, सामाजिक सहभागिता, व्यवहार और संवेदी प्रसंस्करण में भिन्नताएँ देखी जाती हैं। ऐसे विद्यार्थियों के लिए पारंपरिक शिक्षण विधियाँ प्रायः प्रभावी सिद्ध नहीं होतीं। दृश्य कला–जैसे चित्रकला, रंग भरना, कोलाज, मिट्टी का कार्य और शिल्प–ऑटिज़्म से पीड़ित विद्यार्थियों के लिए अभिव्यक्ति, सीखने और भावनात्मक संतुलन का सशक्त

माध्यम बनती हैं (Eisner, 2002)। आयु के अनुसार दृश्य कला का प्रभाव अलग-अलग रूपों में दिखाई देता है।

यह शोध कार्य अन्ज़ा स्पेशल स्कूल भायखला मुंबई (Anza Special School in Byculla Mumbai) में किया गया है यह स्कूल शोधकर्ता के घर से काफी नजदीक है तथा प्रतिदिन 1 से 2 घंटे शोधकर्ता बच्चों के साथ प्रायोगिक कार्य करते हुए शोधकर्ता व्यतीत करते थी |

चित्र 1 अंज़ा स्पेशल स्कूल बायकुला मुंबई

(i) 4-6 वर्ष की आयु

यह आयु ऑटिज़्म से पीड़ित बच्चों के लिए प्रारंभिक हस्तक्षेप (Early Intervention) की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। इस चरण में बच्चे मौखिक भाषा की अपेक्षा दृश्य संकेतों और चित्रों के माध्यम से बेहतर प्रतिक्रिया देते हैं। चित्र बनाना, रंग भरना और उँगलियों से पेंटिंग करना बच्चों की संवेदी एकाग्रता और आँख-हाथ समन्वय को विकसित करता है।

दृश्य कला के माध्यम से बच्चे भावनाओं को बिना शब्दों के व्यक्त कर पाते हैं, जिससे उनकी झुंझलाहट और व्यवहार संबंधी समस्याएँ कम होती हैं (Malchiodi, 2012)। रंगों और आकृतियों के प्रयोग से बच्चों में सुरक्षा की भावना विकसित होती

है, जो सीखने के लिए अनुकूल वातावरण बनाती है। इस आयु में दृश्य कला बच्चों को विद्‍यालयी परिवेश से जोड़ने में सहायक सिद्ध होती है।

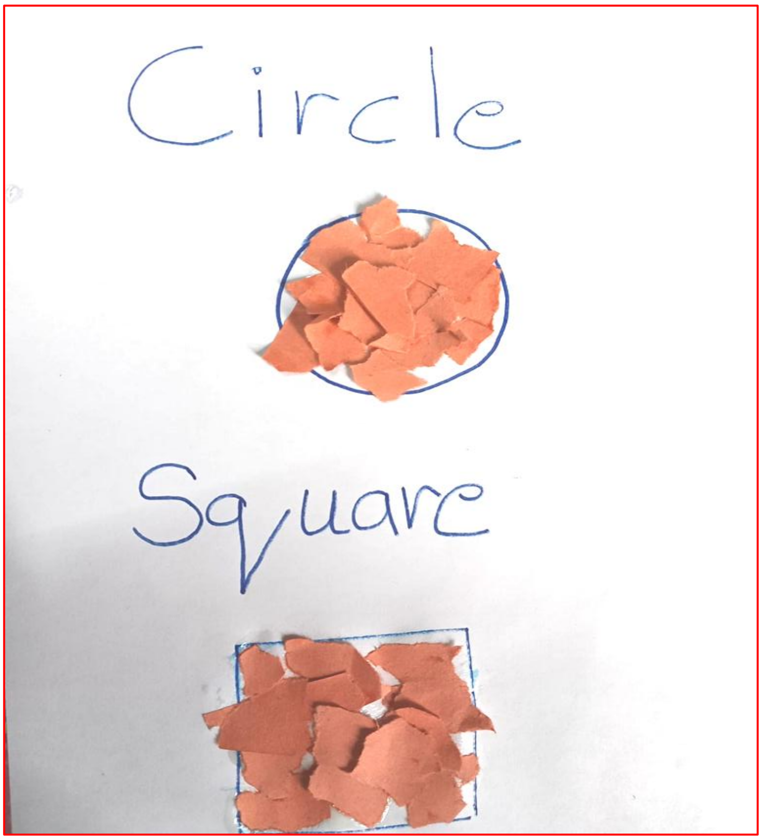

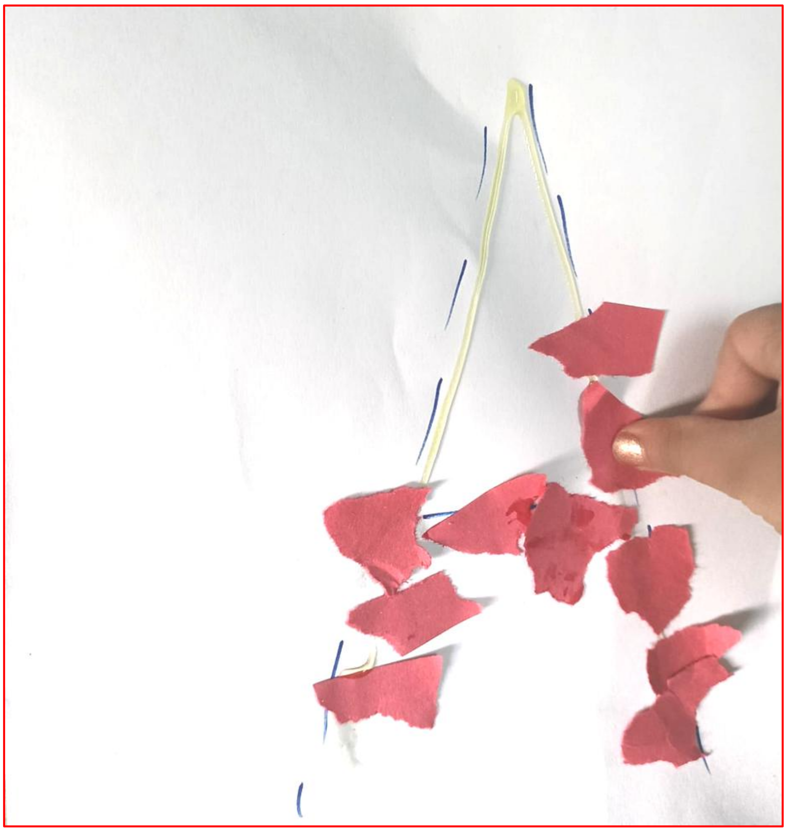

चित्र- 2 अंज़ा स्पेशल स्कूल बायकुला मुंबई (शैक्षणिक सुविधा)

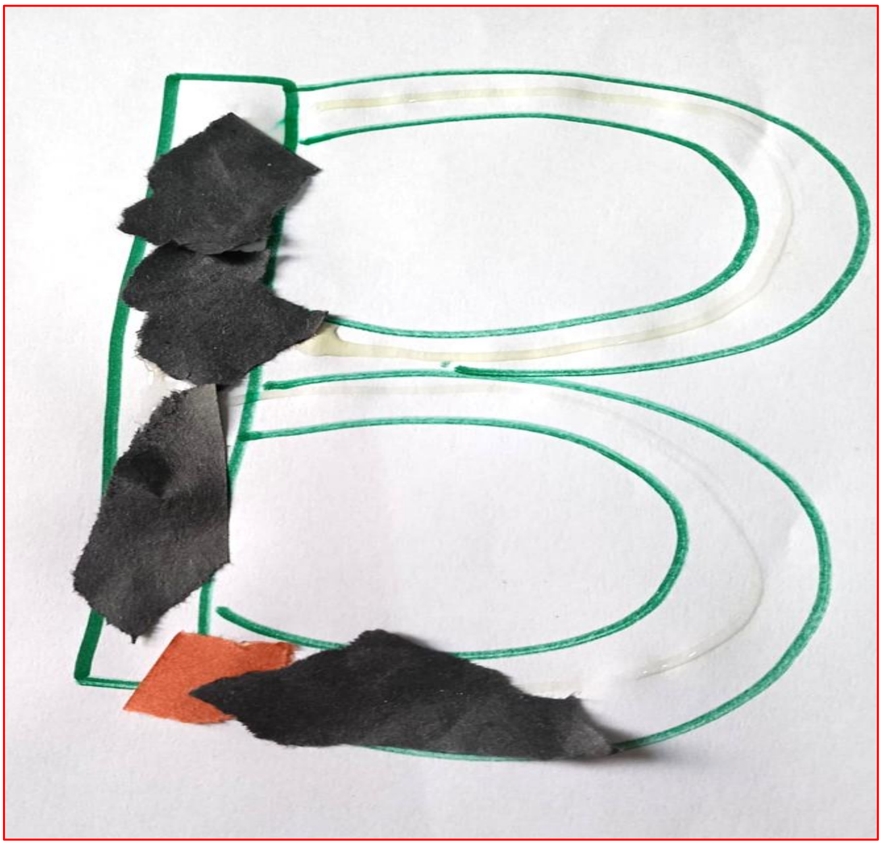

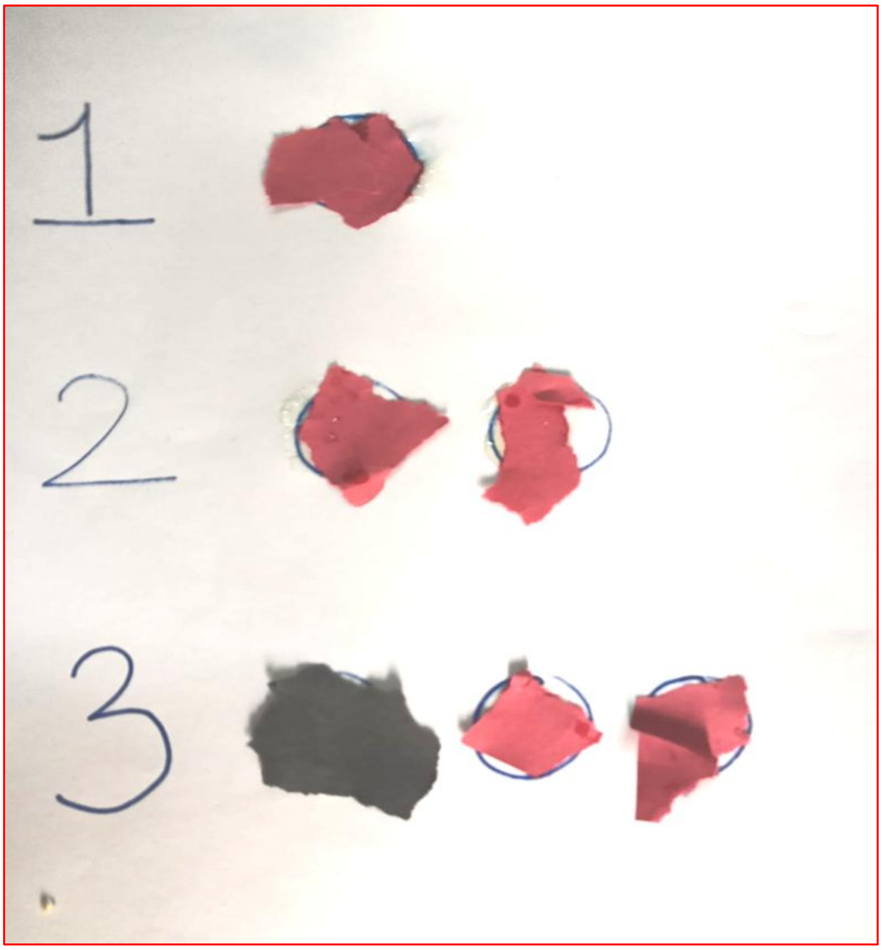

चित्र- 3 अंज़ा स्पेशल स्कूल बायकुला मुंबई (शैक्षणिक सुविधा)

(ii) 6-10 वर्ष की आयु

6 से 10 वर्ष की आयु में ऑटिज़्म से पीड़ित विद्यार्थी संरचित शिक्षण की ओर बढ़ते हैं। इस स्तर पर दृश्य कला शैक्षणिक विषयों–जैसे भाषा, गणित और पर्यावरण अध्ययन–को समझने में सहायता करती है। उदाहरण के लिए, चित्रों के माध्यम से कहानी बनाना भाषा विकास को प्रोत्साहित करता है, जबकि आकृतियाँ और पैटर्न गणितीय अवधारणाओं को स्पष्ट करते हैं।

दृश्य कला गतिविधियाँ बच्चों की ध्यान अवधि बढ़ाने में सहायक होती हैं और कार्य पूर्ण करने की क्षमता विकसित करती हैं। समूह कला गतिविधियों से सामाजिक सहभागिता, साझेदारी और सहयोग की भावना उत्पन्न होती है, जो ऑटिज़्म से पीड़ित विद्यार्थियों के लिए विशेष रूप से चुनौतीपूर्ण होती है (Winner et al., 2013)। इस आयु में कला आत्म-विश्वास को भी सुदृढ़ करती है, क्योंकि बच्चा अपनी रचना के माध्यम से पहचान और प्रशंसा प्राप्त करता है|

(iii) 10-14 वर्ष की आयु

10 से 14 वर्ष की आयु में ऑटिज़्म से पीड़ित विद्यार्थियों में आत्म-पहचान और भावनात्मक जटिलताएँ बढ़ने लगती हैं। इस अवस्था में दृश्य कला भावनात्मक अभिव्यक्ति और तनाव प्रबंधन का प्रभावी साधन बनती है। स्केचिंग, पेंटिंग और डिजाइन कार्य के माध्यम से विद्यार्थी अपने विचारों और भावनाओं को सुरक्षित रूप से व्यक्त कर सकते हैं।

इस आयु में दृश्य कला समस्या-समाधान, योजना निर्माण और निर्णय-क्षमता को भी विकसित करती है। कला-आधारित परियोजनाएँ विद्यार्थियों को स्वतंत्र रूप से सोचने और अपनी रुचियों को पहचानने का अवसर देती हैं, जो भविष्य की व्यावसायिक दिशा के लिए उपयोगी हो सकता है (Hetland et al., 2013)। इसके अतिरिक्त, कला गतिविधियाँ आत्म-नियंत्रण और धैर्य को बढ़ावा देती हैं, जिससे शैक्षिक जीवन अधिक संतुलित बनता है।

निष्कर्ष

ऑटिज़्म से पीड़ित विद्यार्थियों के शैक्षिक जीवन में दृश्य कला का महत्व अत्यंत व्यापक है। 4 से 14 वर्ष की आयु तक दृश्य कला न केवल सीखने की प्रक्रिया को सरल और आनंददायक बनाती है, बल्कि संवेदी, भावनात्मक, सामाजिक और संज्ञानात्मक विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसलिए समावेशी शिक्षा (Inclusive Education) के अंतर्गत दृश्य कला को एक अनिवार्य शैक्षिक

उपकरण के रूप में अपनाया जाना चाहिए, जिससे ऑटिज़्म से पीड़ित विद्यार्थियों को अपनी पूर्ण क्षमताओं के विकास का अवसर मिल सके।

पंचम अध्याय : निष्कर्ष

प्रस्तुत कार्यात्मक अध्ययन के आधार पर यह स्पष्ट रूप से निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि 4–14 वर्ष आयु वर्ग के ऑटिस्टिक विद्यार्थियों के शैक्षिक जीवन में दृश्य कलाएँ अत्यंत महत्वपूर्ण, प्रभावशाली और आवश्यक भूमिका निभाती हैं। ऑटिज़्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर (ASD) से प्रभावित विद्यार्थियों की सीखने की प्रक्रिया पारंपरिक शिक्षण विधियों से भिन्न होती है, क्योंकि उनमें संचार, सामाजिक सहभागिता, संवेदी प्रसंस्करण और व्यवहार से संबंधित विशिष्ट आवश्यकताएँ पाई जाती हैं। ऐसे में दृश्य कला एक वैकल्पिक, संवेदनशील और बाल-केन्द्रित शिक्षण माध्यम के रूप में उभरकर सामने आती है (Eisner, 2002)।

अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि 4–6 वर्ष की आयु में दृश्य कला प्रारंभिक हस्तक्षेप का सशक्त साधन है। इस अवस्था में चित्रकला, रंग भरना और स्पर्श आधारित कला गतिविधियाँ बच्चों के संवेदी विकास, ध्यान केंद्रित करने की क्षमता और भावनात्मक सुरक्षा को बढ़ाती हैं। चूँकि ऑटिस्टिक बच्चे अक्सर मौखिक अभिव्यक्ति में कठिनाई अनुभव करते हैं, दृश्य कला उन्हंत बिना शब्दों के अपनी भावनाएँ व्यक्त करने का अवसर प्रदान करती है, जिससे व्यवहार संबंधी तनाव में कमी आती है (Malchiodi, 2012)।

6–10 वर्ष की आयु में दृश्य कलाएँ शैक्षिक विषयों के साथ समन्वय स्थापित करने में विशेष रूप से सहायक सिद्ध होती हैं। इस आयु वर्ग में कला-आधारित शिक्षण से भाषा, गणित और पर्यावरण अध्ययन जैसे विषय अधिक सुलभ और अर्थपूर्ण बनते हैं। चित्रों, चार्ट और मॉडल के माध्यम से अवधारणाएँ स्पष्ट होती हैं, जिससे सीखने की गति और स्मरण शक्ति में सुधार देखा जाता है। इसके साथ ही, समूह कला गतिविधियाँ सामाजिक सहभागिता, सहयोग और साझा ध्यान (Joint Attention) को प्रोत्साहित करती हैं, जो ऑटिस्टिक विद्यार्थियों के सामाजिक विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है (Winner et al., 2013)।

10–14 वर्ष की आयु में दृश्य कला का महत्व और अधिक गहरा हो जाता है। यह अवस्था आत्म-पहचान, भावनात्मक उतार-चढ़ाव और सामाजिक दबाव की होती है। अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि इस आयु में दृश्य कला ऑटिस्टिक विद्यार्थियों के लिए भावनात्मक अभिव्यक्ति, तनाव प्रबंधन और आत्म-नियंत्रण का

प्रभावी माध्यम बनती है। स्केचिंग, पेंटिंग और डिज़ाइन जैसी गतिविधियाँ विद्यार्थियों में रचनात्मक सोच, समस्या-समाधान क्षमता और निर्णय लेने की योग्यता विकसित करती हैं, जो उनके शैक्षिक एवं भविष्यगत जीवन दोनों के लिए उपयोगी होती हैं (Hetland et al., 2013)।

समग्र रूप से देखा जाए तो दृश्य कला ऑटिस्टिक विद्यार्थियों के शैक्षिक जीवन में केवल एक सह-पाठ्य गतिविधि नहीं, बल्कि एक कार्यात्मक शिक्षण उपकरण है। यह न केवल संज्ञानात्मक विकास को समर्थन देती है, बल्कि भावनात्मक संतुलन, सामाजिक अनुकूलन और आत्म-अभिव्यक्ति को भी सशक्त बनाती है। अध्ययन यह भी संकेत देता है कि कला-आधारित शिक्षण से ऑटिस्टिक विद्यार्थियों में आत्म-विश्वास बढ़ता है और विद्यालयी वातावरण के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित होता है।

अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि समावेशी शिक्षा (Inclusive Education) के अंतर्गत दृश्य कलाओं को पाठ्यक्रम का अभिन्न अंग बनाया जाना चाहिए। शिक्षकों, विशेष शिक्षकों और अभिभावकों को यह समझने की आवश्यकता है कि दृश्य कला ऑटिस्टिक विद्यार्थियों की क्षमताओं को पहचानने और विकसित करने का एक मानवीय तथा प्रभावी माध्यम है। यदि विद्यालयी शिक्षा प्रणाली में योजनाबद्ध और आयु-अनुकूल कला गतिविधियों को शामिल किया जाए, तो ऑटिस्टिक विद्यार्थियों को एक सार्थक, आत्मनिर्भर और सम्मानजनक शैक्षिक जीवन प्रदान किया जा सकता है (Eisner, 2002; Malchiodi, 2012)।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

संदर्भ ग्रन्थ सूची

English Books

1. (2018). Hans Asperger, national socialism, and "race hygiene" in Nazi-era Vienna. Molecular autism, 9(1), 1-43.
2. (2018). The truth about Hans Asperger's Nazi collusion. https://doi.org/10.1038/d41586-018-05112-1 10.4169/194762111X12954578042939.
3. A History and Timeline of Autism (verywellhealth.com)
4. American Psychiatric Association. (2013). Diagnostic and statistical manual of mental disorders (5th ed.). Washington, DC: Author.
5. American Psychiatric Association. (2013). Diagnostic and statistical manual
6. American Psychiatric Association. (2013). Diagnostic and statistical manual of mental disorders (5th ed.). Washington, DC: Author.
7. An, Q. (2025). Drawing therapy and emotional regulation in children with autism spectrum disorder.
8. Arnheim, R. (1974). Art and visual perception: A psychology of the creative eye.
9. Art Therapy and Autism: A Picture of the Literature. (2024). Journal of the American Academy of Special Education Professionals
10. Asher, C. B. (1992). Architecture of Mughal India. Cambridge University Press.
11. Bailey, D. (1993). *Wings to Fly: Bringing Theatre Arts to Students with Special.
12. Bamford, A. (2006). The wow factor: Global research compendium on the impact (2021), Dr.shyama Prasad Mukherjee University
13. Belcastro, sarah & Schaffer, Karl. (2011). Dancing Mathematics and
14. Bender, L. (1982), In Memoriam Leo Kanner, MD June 13, 1894–April 4, 1981, J.Am.Acad.Child.Psychiatry21(1):88-89.
15. Bhartrihari. (2014). Nītiśatakam (English trans.). Motilal Banarsidass.
16. Bleuler, P. E. (1911). Dementia praecox or the group of schizophrenias. New York: International Universities Press.
17. Britannica. (2023). Visual arts. Encyclopaedia Britannica.

18. Creative Arts Therapy Review. (2024). Creative arts therapy for autistic children: A systematic review.
19. Dewey, J. (1934). Art as experience. Perigee Books.
20. Eisner, E. W. (2002). The arts and the creation of mind. Yale University Press.
21. Eisner, E. W. (2002). The arts and the creation of mind. Yale University Press.
22. Factfile, A., Training, A., Times, T., Legal, U. K., Kanner, L., & W-Wide, A. L. Hans Asperger–Definition.
23. Gardiner, M. F., Fox, A., Knowles, F., & Jeffrey, D. (1996). Learning improved by
24. Garvis, S., & Pendergast, D. (2011). An investigation of early childhood teacher 55(2), 104–127.
25. Gombrich, E. H. (2006). The story of art. Phaidon Press.
26. Grandin, T. (2006). Thinking in pictures: My life with autism. New York, NY: Vintage Books.
27. Grandin, T. (2006). Thinking in pictures: My life with autism. New York, NY: Vintage Books.
28. Hendrickx, S. (2015). Neurodiversity, autism and mental health. London: Jessica Kingsley Publishers.
29. Hetland, L., Winner, E., Veenema, S., & Sheridan, K. (2007). Studio thinking:
30. https://courses.mapacademy.io/courses/sculpture-archeology-and-architecture-
31. https://en.wikipedia.org/wiki/Greta_Thunberg#cite_note-YouTube-Thunberg(2018-11-24)-11
32. **https://rciregistration.nic.in/rehabcouncil/CreCalendarnew.jsp**
33. https://sketchplanations.com/the-golden-ratio
34. https://the-art-of-autism.com/the-autism-puzzle-piece-a-symbol-of-what/
35. https://the-art-of-autism.com/the-autism-puzzle-piece-a-symbol-of-what/
36. https://www.aajtak.in/education/news/story/bihar-teacher-khushboo-again-famous-on-social-media-with-her-unique-teaching-style-video-2007341-2024-08-11
37. https://www.adobe.com/creativecloud/design/discover/golden-ratio.html
38. https://www.amarujala.com/shakti/13-year-old-para-swimmer-jiya-rai-swims-from-sri-lanka-to-india-a-story-of-true-inspiration-2025-06-18
39. https://www.autismspeaks.org/pervasive-developmental-disorder-pdd-nos
40. https://www.britannica.com/biography/Dan-Aykroyd

41. https://www.gettyimages.in/search/2/image?page=9&phrase=susan%20boyle%20pictures&sort=mostpopular&license=rf%2Crm
42. https://www.hindustantimes.com/lifestyle/art-culture/strait-shooter-a-wknd-interview-with-the-parents-of-autistic-record-setting-swimmer-jiya-rai-101650617403158.html
43. https://www.indiatoday.in/trending-news/story/bihar-teacher-hindi-matra-song-and-dance-teaching-method-viral-video-2581385-2024-08-13
44. https://www.levelaheadaba.com/blog/dan-aykroyd-autism#:~:text=Dan%20Aykroyd%2C%20known%20for%20his,like%20in%20Aykroyd's%20case%E2%80%94comedy.
45. https://www.matttommeymentoring.com/blog/considering-art-as-spiritual-experience-hobby-and-vocation/
46. https://www.oakridge.in/blogs/how-performing-arts-develop-childs-personal-development/
47. https://www.pib.gov.in/PressReleaseIframePage.aspx?PRID=2038861&reg=3&lang=2
48. https://www.secondcity.com/people/dan-aykroyd
49. https://www.shutterstock.com/editorial/image-editorial/stephen-wiltshire-4241234l?trackingId=tFdQtHIxTpJaC_pEfwh-6A
50. https://www.stephenwiltshire.co.uk/biography
51. https://www.youtube.com/watch?v=-jwG5NaieWE
52. Itard, J. M. G. (1801). The wild boy of Aveyron. Paris: Goujon.
53. Jia, X. (2023). The effectiveness of art therapy on social development in children with autism spectrum disorders.
54. Kanner, L. & Eisenberg, L. (1956), Early Infantile Autism 1943-1955, American Journal of Orthopsychiatry, 26, pp.55-65.
55. Kanner, L. (1943). Autistic disturbances of affective contact. Nervous child, 2(3), 217-250. Czech, H.
56. Kanner, L. (1946), Irrelevant and Metaphorical Language in Early Infantile Autism, American Journal of Psychiatry, 103, pp.242-246.
57. Kotowicz, Z. (2011). Children, Insanity and Child Psychiatry c. 1800-1935. Kairos Revista de Filosofia Ciencia, 7-37.
58. Levy, F. J. (2005). Dance movement therapy: A healing art. American Alliance.

59. Lowenfeld, V., & Brittain, W. L. (1987). Creative and mental growth. Macmillan.
60. Marshall, J. (2014). Transdisciplinarity and art integration: Toward a new
61. MDPI. (2023). Interventions through art therapy and music therapy in pediatric neurodevelopmental disorders.
62. Moulik, M. R., & Dutt, S. (2025). Color in art therapy for emotional and sensory support in children with autism. International Journal of Indian Psychology.
63. National Council of Educational Research and Training (NCERT). (2005).
64. National Education Policy. (2020). Ministry of Education, Government of India.
65. NCERT. (2019). Art education: Upper primary stage. National Council of
66. NCERT. (2020). Visual and performing arts curriculum. NCERT.
67. Rabkin, N., & Redmond, R. (2006). The arts make a difference. Educational
68. Silberman, S. (2015). NeuroTribes: The legacy of autism and the future of neurodiversity. New York, NY: Avery.
69. Thunberg, G. (2019). No one is too small to make a difference. London: Penguin Books.
70. UNESCO. (2006). Road map for arts education. UNESCO.
71. Vrisaba, N. A., & Yudiharso, A. (2021). Systematic review of art therapy in children with autism spectrum disorder.
72. Vygotsky, L. S. (1978). Mind in society: The development of higher
73. Wei, S., Lai, A. H. Y., & Ho, H. W. H. (2025). The effectiveness of art therapy on children and adolescents with ASD: A systematic review of RCTs.
74. Wiltshire, S. (2006). Drawings. London: Michael Joseph.
75. Winner, E., Goldstein, T. R., & Vincent-Lancrin, S. (2013). Art for Education & the Arts, 12(9),1–15.
76. Winner, E., Goldstein, T. R., & Vincent-Lancrin, S. (2013). Art for art's sake?
77. नागरिकशास्त्र शिक्षण में सहायक सामग्री [Teaching Aids in Civics Teaching]

पत्र-पत्रिकाऐं

1. इंडिया टुडे
2. क्रानिकल

समाचार-पत्र

1. राजस्थान पत्रिका
2. दैनिक भास्कर
3. द हिन्दू
4. द इकोनोमिक एण्ड पॉलिटिकल वीकली
5. हिन्दुस्तान टाइम्स

वेबसाइट्स

1. http://www.insoso.6rg
2. http://censusindia.gov.in
3. http://shodhganga.national digital library of India.

अनुसंधान प्रकाशन

संदर्भित पत्रिकाओं में

Published Research Paper-1

Year: **2024**, Volume: **10**, Issue: **11**
ISSN Print: 2394-7500, ISSN Online: 2394-5869, CODEN: IJARPF
Online Available at www.allresearchjournal.com

International Journal of Applied Research

Index for 2024 (Vol - 10, Issue - 11) Part - A

01. Aspect of students towards B.ED course in Tripura
Authored by: Uttam Deb
Page: 01-03

02. Trans-adaptation and validation of dizziness handicap inventory in Telugu version (DHI-t)
Authored by: Chandra Prakash Sunkar, Subhashree Sahoo, Bhaskar Dey, Dr. VVK Sandeep, Shaik Shaheeda, Jenny Mevis D'Souza and Suraj Sonkar
Page: 04-11

03. Status of multilingual education in Mayurbhanj District, Odisha
Authored by: Abhishek Panda
Page: 12-16

04. Geospatial crop concentration analysis using GIS techniques in Parbhani district
Authored by: Ankush Ramrao Gaike and Dr. Vijay Baisane
Page: 17-26

05. मणि मधुकर के 'पत्तों की बिरादरी' उपन्यास में अकाल विभीषिका
Authored by: दिनेश कुमावत
Page: 27-31

06. A study to assess the effectiveness of structured teaching programme on knowledge and practice regarding prevention of anaemia among the adolescent girls in a selected rural area of Belagavi, Karnataka
Authored by: Kiran Kempi
Page: 32-34

07. कला का प्रभाव मानव जीवन पर
Authored by: Rubina Khan and Dr. Shalini Bharti
Page: 35-37

08. A study to compare the effectiveness of myofascial release versus Maitland mobilization on pain and functional disability in patients with osteoarthritis, a comparative study
Authored by: Dr. Syed Rais Akhter Rizvi and Dr. Radharani Shubham Kabra
Page: 38-43

09. Survey based on evaluation of knowledge, attitude and practice in rural/urban dental professionals regarding amalgam and tooth colored composite materials in Maharashtra: A questionnaire study
Authored by: Shaima Pathan, Haani Patel, Shifa Patel, Zainab Mohammad Sabahuddin, Dr. Gulnaz Tamboli, Dr. Hussain Mookhtiar and Dr. Vivek Hegde
Page: 44-47

10. Impacts of various intensity red lasers at 635 nm on colon cancer cells
Authored by: Mohannad M Hurry and Mohammed HH AL-Jassani
Page: 48-51

International Journal of Applied Research 2024; 10(11): 35-37

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor (RJIF): 8.4
IJAR 2024; 10(11): 35-37
www.allresearchjournal.com
Received: 13-08-2024
Accepted: 18-09-2024

Rubina Khan
Ph.D Scholar, Department of Drawing and Painting, Kota University, Kota, Rajasthan, India

Dr. Shalini Bharti
HOD, Drawing and Painting Govt. Arts College Kota, Rajasthan, India

Corresponding Author:
Rubina Khan
Ph.D Scholar, Department of Drawing and Painting, Kota University, Kota, Rajasthan, India

कला का प्रभाव मानव जीवन पर

Rubina Khan and Dr. Shalini Bharti

DOI: https://doi.org/10.22271/allresearch.2024.v10.i11a.12115

सारांश
कला के कई रूप मानव जीवन में निहित है। भौतिक-अभौतिक रूप में,आध्यात्मिक व साहित्यिक रूप में, प्रदर्शन कला व दृश्य कला के यह रूप मानवता को सदा से ही प्रभावित करते रहे हैं। मानव एक सामाजिक प्राणी है, समाज पर मानव के कार्यों से नये बदलाव आते रहते है, तथा मानव पर स्वयं इन गतिविधियों का प्रतिकूल व अनुकूल प्रभाव देखा जा सकता है। कला के संदर्भ में यह गतिविधियां मुख्यतः बाल्यकाल से शुरू होकर जीवन के अंतिम चरण तक बनी रहती है।
आदिमानव मनुष्य के पूर्वज माने गए हैं। आदिमानव में अनुसरण करने की का गुण अधिक था। एक व्यक्ति जो कार्य करता दूसरा व्यक्ति भी उसी कार्य को बिना हिचकिचाए अनुसरण करता। आज की समय मे भी यह देखा जा सकता ही की फैशन चाहे कैसा भी हो शोभनीय या अशोभनीय युवा वर्ग उसका आँख बंद कर उसका अनुसरण कर लेती है। कला के इस प्रभाव से सभी जीवित प्राणी प्रभावित हुए है। कला का यही प्रभाव वयक्तित्व निर्माण, सामाजिक- समाजस्ता, वैचारिक भाव, मनोवैज्ञानिक रूप में देखा जाता रहा हैं। इसे गहराई से जानना और समझना बहुत ज़रूरी है। क्योकि यह सभी भविष्य को भी निर्धारित करती है। यहाँ मुख्तः कला की विभिन रूपो से उत्पन्न प्रभावों की विस्तृत चर्चा तथा नई सम्भावना खोजने का प्रयास किया गया है।

कूटशब्द: परिवर्तन, कलाकार, सकारात्मकता, कला, ग्राफिटी कला

प्रस्तावना

आज के समय में मनुष्य चारों तरफ से कला से घिरा हुआ है। यह कला मनुष्य को प्रभावित करती है तथा उसके व्यक्तित्व परिवर्तित करने का एक बड़ा कारण भी बनती है। सुबह आंख खोलने के पश्चात सबसे पहली नजर मोबाइल फोन पर पड़ती है, यह जांचा परखा जाता हैं कि नया चलन में क्या है कहां सेल लगी है किसने मैसेज किया है। उसी प्रकार अखबार, मैगजीन, मॉल, सिनेमा घर इत्यादि दृश्य और श्रव्य कला के स्पष्ट उदहारण है। इसी प्रकार कला सभी दिशाओं से मनुष्य के आचरण व्यवहार को प्रभावित करती है।

इस विषय पर लेखिका को सबसे अधिक प्रभावित मैक्सिकन ग्राफिटी कलाकार और फ़ोटोग्राफ़र जे.आर ने किया है, उनकी कला का मूल विषय " मनुष्य के शरीर तथा चेहरों की भाव भंगिमा" है।

जे.आर इसी भावभंगिमा का दानवाकार रूप देकर प्रिंट करवाकर उसे किसी दीवार या ज़मीन पर चिपकाकर अपनी कला को आकर दे बड़े-बड़े होर्डिंग पर लगाया जाता

है। इसके लिए सबसे पहले वह विभिन्न तरह की फोटो खींचकर उसका आकलन करते हैं। फिर उसका चयन कर प्रिंटर से प्रिंट कर बड़ी व सपाट दीवार या ज़मीन पर चिपकाया जाता है।

अमेरिका-मेक्सिको सीमा की दीवार पर झाँकते लड़के की एक विशाल कलाकृति फ्रांसीसी कलाकार और फ़ोटोग्राफ़र जे.आर., अपनी दृश्य कला में"किकिटो" टेकाटे, बाजा कैलिफ़ोर्निया, 2017 मैक्सिको में बनाया गया।

अपनी कला के माध्यम से वह विश्व मे मनुष्यों की स्थिति का और भावना को प्रदर्शित करते है। जे. आर ने कैलिफोर्निया में एक कारगृह में अपनी कृति का निर्माण किया। जिसके लिए खुद वहा की मेयर ने उनको अनुमति दी। यह जेल तेहाचापि कैलिफोर्निया में स्थित है। इस जेल को दुनिया में कैदियों के लिए सबसे खतरनाक जेल माना जाता है।

कार्य विषय कैदी थे, जब कैदी से मिलने गए तब वह पूरी तरह से एक दूसरे से अनभिज्ञ थे, मुलाकात बड़ी ही साधारण रही। जे. आर ने जब उन लोगो के साथ काम करना शुरू किया तो उन लोगो में सहकर्मी जैसे सम्बन्ध हो गए। काम करते समय उनको हर छोटी से छोटी चीज़ का पूरा विवरण देना होता था। हर बार सेक्युटिरी चेकिंग होती। लेकिन काम के समय कैदियों और वहाँ के गॉर्ड ने उनका बहुत सहयोग किया। उनको किसी भी चीज़ की गुम होने की शिकायत का कभी-भी सामना नहीं करना पड़ा। सबसे रोचक बात तो यह थी कुछ कैदी वहा काफी समय से वही रह रहे थे। उनको बाहर की दुनिया में क्या घटित हो रहा है उसका कुछ भी ज्ञान नहीं था। वह ड्रोन, फेसबुक और विभिन्न तरह की एप्लीकेशन नए आविष्कारो के बारे में बिल्कुल अबोध बच्चों जैसे उत्सुक थे।उनको ज्यादा से ज्यादा उन चीजों के बारे में जानना था। इसी वजह से प्यार और सहानुभूति के साथ व्यवहार करते।इसी बीच एक कैदी आपसे ज्यादा हिल मिल गया।

उस कैदी का नाम केविन है, बातचीत की समय जे. आर को बताया की वह किसी गैगं का सदस्य था। लेकिन वह अपने जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाना चाहता था, जिसकी शुरुआत उसने अपने किसी टैटू को हटाने से की, यह टैटू उसके पुराने गैंग से सम्बंधित था। उसका इच्छा थी, की वह भी सभी की तरह सामान्य जीवन जीना चाहता है।

कैलिफ़ोर्निया जेल के प्रांगण में, "तहचापी"अधिकतम सुरक्षा वाली जेल। कलाकार और फ़ोटोग्राफ़र जे.आर. केविन ने अभिव्यक्ति जाहिर की वह रिहाई मिलने के बाद वह जे. आर मिलना चाहता है। जे. आर ने भी खुशी-खुशी इस को अनुमति दे दी। कुछ समय के बाद न केवल केविन में बल्कि अधिकतर कैदियों में व्यव्हार में सुधार देखा गया और जिसकी वजह से कैदियों कई रिहाई भी जल्दी मिल गई।

महाराष्ट्र: कोविड19 पर जागरूकता फैलाने के लिए मुंबई के जेजे अस्पताल की दीवारों पर भित्तिचित्र बनाए गए। मोना लिसा, फ्रीडाकाहलो

मुंबई के जेजे अस्पताल की दीवारों पर मर्लिन मुनरो और स्टैच्यू ऑफ लिबर्टी के भित्तिचित्र

दूसरी घटना जिसनी न केवल मूझे बल्कि पुरे संसार को झंझोर कर रख दिया। यह समय था कोरोना का, जब लॉक डाउन की वजह से सभी मानसिक, शारीरिक और आर्थिक रूप से परेशान थे। उस समय में मुंबई में जे.जे हॉस्पिटल की दीवारों पर मोनालीसा जैसे कई प्रसिद्द चित्रों की पुनः रचना की गई। चुकी यह सब कोरोना काल में था तो सभी कृतियों ने मास्क पहन रखा था। जिससे पढ़ालिखा और अनपढ़ सभी यह बड़ी-बड़ी पेंटिंग देखकर जीवन की अमुलय्ता को समझ रहे थे और सजग हो रहे थे। यह चित्र आज भी धूमिल अवस्था में जे.जे. हॉस्पिटल की बाहरी दीवारों पर देखा जा सकता हैं। यहाँ चित्रण करने का मकसद शहर को महामारी से बचने हेतु जागरूक करना था। शहर में इस प्रकार की कई कलाकृतियां हे जो नगरीय सुंदरता बढ़ने के साथ कुछ न कुछ सन्देश देती है।

उद्देश्य

कला का मूल उद्देश्य मनोरंजन के साथ-साथ सकारात्मक परिवर्तन की ओर अग्रसर होने वाला होना चाहिए। एक कलाकार की समाज के प्रति उसकी जिम्मेदारी उसकी कला के माध्यम से अवलोकित होती है। कलाकार समाज में क्या नये बदलाव चाहता है इस विचारधारा को सभी तक पहुचाने का कार्य उसकी कला से प्रदर्शित होता है। यह मानव जीवन में परिवर्तन का कारण भी बनता है। मानव जीवन की तथागत मानसिक व सामाजिक स्थिति का दर्पण भी होता है

निष्कर्ष

इस पूरे प्रसंग से यह सीखने को मिलता है कि कला एक सीधी तौर पर अभिव्यक्ति का माध्यम है। कला हर तरह से मानव को प्रभावित करती रहती है ख़ास कर मनुष्य को नवीन विचारधारा के बीजारोपण का काम करती है जिससे समाज में विकास और आपसी सामजस्य बड़ता है। कला किसी डॉक्टर की तरह उपचार करती है। साथ ही साथ सभी मनुष्य अपने जीवन में सकारात्मक परिवर्तन और अच्छे व्यवहार की आशा रखते है। यदि उन्हें सही वातावरण और सहयोग मिले तो वह भी जीवन में एक उत्तम परिवर्तन ला सकते हैं।

संदर्भ

1. https://www.collater.al/en/jr-prison-techachapi-street-art/
2. https://www.theguardian.com/us-news/2017/sep/18/proud-to-be-mexican-meet-the-baby-whose-huge-image-gazes-over-the-border
3. https://twitter.com/ANI/status/1377538666319388673
4. https://timesofindia.indiatimes.com/videos/city/mumbai/graffiti-painted-on-hospital-walls-to-create-awareness-on-covid-19/videoshow/81847225.cms TED. (Jun 28, 2022). JR: Can Art Change the World? [Video]. YouTube. https://www.youtube.com/watch?v=2fY-iSzbls8

International Journal of Applied Research

International Journal of Applied Research

Peer Reviewed Journal, Refereed Journal, Indexed Journal

ISSN Print: 2394-7500, ISSN Online: 2394-5869, CODEN: IJARPF

Publication Certificate

This certificate confirms that **"Rubina Khan"** has published manuscript titled "**कला का प्रभाव मानव जीवन पर**".

Details of Published Article as follow:

Volume	:	**10**
Issue	:	**11**
Year	:	**2024**
Page Number	:	**35-37**

Certificate No.: **10-11-17**

Yours Sincerely,

Akhil Gupta
Publisher
International Journal of Applied Research
www.allresearchjournal.com
Tel: +91-9711224068

Published Research Paper-2

Year: **2025**, Volume: **11**, Issue: **10**
ISSN Print: 2394-7500, ISSN Online: 2394-5869, CODEN: IJARPF
Impact Factor (RJIF): 8.69
Online Available at www.allresearchjournal.com

International Journal of Applied Research

Index for 2025 (Vol - 11, Issue - 10) Part - B

01. **A comparative study on physiological variables among rural and urban high school children's**
Authored by: Dullayya and Shashidhara Kellur
Page: 82-85

02. **Gas flaring and the transition to a green economy in Nigeria: An empirical analysis**
Authored by: Oboro Emmanuel David
Page: 86-93

03. **Diversity of medicinal plants of semariya forest range, Rewa district Madhya Pradesh, India**
Authored by: Aknksha Dwivedi, RK Tripathi and SK Agnihotri
Page: 94-96

04. **Integrating artificial intelligence into managerial decision making-opportunities and challenges**
Authored by: Dr. Riya Shalini
Page: 97-102

05. कला के माध्यम से शैक्षणिक, व्यक्तिगत विकास और सकारात्मकता।
Authored by: Rubina Khan and Dr. Shalini Bharti
Page: 103-105

06. **Asserting the components of collaboration and community engagement in colleges of education-Andhra Pradesh**
Authored by: Shaik Fathima
Page: 106-114

07. **Vikshit Bharat 2047 and the future of higher education in India**
Authored by: Kashi Nath Pandey
Page: 115-119

08. **Study on the fabrication of prompt power measurement device using low-cost inertial sensor and improvement of accuracy**
Authored by: UnJu Kim, SeHung Kim, NamChol Yu
Page: 120-123

09. **Inspection frameworks and educational outcomes: A Cross-Emirate Analysis of KHDA, ADEK, SPEA, and MOE private inclusive education schools**
Authored by: Ganaie SA and Zahra AS
Page: 124-135

10. **Dynamic movement of endophytic bacteria in sugarcane during the crop lifecycle**
Authored by: Avinash Salunke
Page: 136-137

International Journal of Applied Research 2025; 11(10): 103-105

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor (RJIF): 8.69
IJAR 2025; 11(10): 103-105
www.allresearchjournal.com
Received: 14-08-2025
Accepted: 17-09-2025

Rubina Khan
Ph.D. Scholar, Department of Drawing and Painting, Kota University, Rajasthan, India

Dr. Shalini Bharti
H.O.D, Department of Drawing and Painting, Government Arts College Kota, Kota, Rajasthan, India

Corresponding Author:
Rubina Khan
Ph.D. Scholar, Department of Drawing and Painting, Kota University, Rajasthan, India

कला के माध्यम से शैक्षणिक, व्यक्तिगत विकास और सकारात्मकता

Rubina Khan and Dr. Shalini Bharti

DOI: https://www.doi.org/10.22271/allresearch.2025.v11.i10b.12929

सारांश

कला के माध्यम से शैक्षणिक, व्यक्तिगत विकास और सकारात्मकता । कला और शिक्षा का गहरा संबंध है। बच्चे की प्रारंभिक शिक्षा घर पर ही होती है। बच्चे का व्यवहार और सोचने की क्षमता घर के माहौल पर निर्भर करती है। जब बच्चा शैशवावस्था में पहली बार पेंसिल पकड़ता है, तो वह क्षैतिज और तिरछी रेखाएँ खींचता है। यह उसके द्वारा बनाया गया पहला चित्र होता है। ये छड़ी जैसी क्षैतिज और तिरछी आकृतियाँ बच्चों के विकास के साथ, तेजी से सजीव चित्रों में बदल जाती हैं। और सबसे पहले वह अपने माता-पिता को ध्यान में रखकर उन्हें चित्रित करने की पूरी कोशिश करता है। इस समय उसकी आयु लगभग 4-5 वर्ष होती है। इस बिंदु तक लड़के और लड़की का संघर्ष उन्हें आत्म-संतुष्टि और खुशी देता है।
यहाँ पर दूसरा महत्पूर्ण भूमिका शिक्षा में प्राथमिक विद्यालयों की होती है | जहां पर निश्चित और निर्धारित समय में अनुशासित रूप में शिक्षा दी जाती है| वही अगर शिक्षा की बात की जाय, तो शिक्षा केवल किताबी रह गई है | जहाँ स्कूल के होमवर्क को मन मार कर करना ही पड़ता है | जिससे बच्चो में धीरे-धीरे, सृजनात्मकता, समस्या को सुलझाने की क्षमता, आलोचनात्मक सोच कम होती जा रही है | क्योंकि शिक्षक भी कला को अन्य विषयो की तुलना में काम महत्वपूर्ण समझते है | जबकि कला का प्रारंभिक शिक्षा में महत्व अन्य विषयो की तुलना में कही अधिक है |

कुटशब्द: कला और शिक्षा, प्रारम्भिक शिक्षा, कला के महत्व, दृश्य कला और मंचीय कला |

प्रस्तावना

किसी गगन चुभी ईमारत को बनने में आधार शिला का जितना महत्व है, ठीक उसी प्रकार हमारे जीवन में प्रारंभिक शिक्षा का महत्व है | इसके साथ-साथ यदि स्कूली शिक्षा में कला को गंभीरता से लिया जाय तो, वह उस ऊँची ईमारत को बाहरी परिवर्तन और कठिनाइयों में जूझने की शक्ति प्रदान करती है| आज के समय में स्कूल में जो विषय सम्बन्धी समय सारणी होती है वहाँ सप्ताह में कला की केवल दो कक्षा अंकित होती है |अन्य विषयो की तुलना में कला को कम आंका जाता रहा है | जहां शिक्षक और माता-पिता का कार्य सदैंव बच्चो को उनकी काबिलियत के हिसाब से प्रोत्साहित करना होता है|वहाँ पर बच्चो पर इस बात पर प्रैशर बनाया जाता है, की उनके कॅरियर के लिए या भविष्य के लिए सारे निर्णय माता-पिता करेंगे | क्योंकि 14-16 वर्ष की आयु में माता-पिता अपने बच्चों को इतना योग्य नहीं समझते |

विकसित देशों में साउथ कोरिया, चीन, जापान भविष्वादी रहे है | वहाँ पर नई-नई टेक्नोलॉजी देखने को मिलती है | जिसका मूल आधार वहाँ की शिक्षा रही है | विश्व में सबसे कठोर शिक्षा प्रणाली साउथ कोरिया, चीन, जापान जैसे देशो में है | यह देश अपनी कठोर कानून के लिए भी जाना जाता है | यहाँ गला काट प्रतियोगिता के कारण विद्यार्थियों में आत्महत्या करने के प्रवृति का चलन विश्व में सबसे अधिक है | छात्रों में आत्महत्या की दर औसत से अधिक है, क्योंकि वे अपने समाज द्वारा निर्धारित किये गये मापदंडों में सफल होने के लिए उच्च स्तर का दबाव महसूस करते हैं। जब वे अपने लक्ष्य हासिल नहीं कर पाते, तो उन्हें लगता है कि उन्होंने अपने परिवार का अपमान किया है। जिसके फलस्वरूप शराब का सेवन, नींद की कमी, तनाव और खराब सामाजिक रिश्तों के कारण छात्रों में आत्महत्या का खतरा बढ़ सकता है।

सर्वे में प्राप्त आंकड़ों के अनुसार भारत देश में 35,000 से ज्यादा छात्रों ने आत्महत्या दर वर्ष 2019-2021 में पाया गया है | सभी के कारण लगभग सामान ही थे | माता-पिता को चाहिए की वह अपने बच्चो से केवल उतनी उपेक्षा रखे जितना वह अपनी अस्तित्व को बिना खोय प्राप्त कर सके | शिक्षा के अनुसार बच्चों का जीवन नियंत्रित न होकर बच्चों की योग्यता और रुचि की अनुसार उनको शिक्षा प्रदान करनी चाहिए जिसे वह सहजता से ग्रहण कर सके|

दृश्य कला और मंचीय कला को अन्य विषयों की साथ सम्मलित कर यदि पढ़ाया जाय और साथ ही प्रायोगिक कक्षा की अधिकता रखी जाए तो इसका सकरात्मक प्रभाव बच्चो में परिलक्षित होता है | बच्चे खेल-खेल में कई चीज़े सीख जाते है |

कला का केवल एक मुख्य रूप सभी को दिखाई देता है जो ड्राइंग एंड पेंटिंग है | जबकि कला के कई रूप है, जैसे संगीत, नाटक, वाकपटुता, आदि | कला जीवन को सुन्दर और सुगम बनती है | रचनात्मक तथा, कल्पनात्मक होने की और अग्रसर करती है | कला के द्वारा कई कैरियर के मौके खुल जाते है | कला के माध्यम से बच्चे अपना भविष्य सुरक्षित कर सकते है और वह भी अच्छा-खासा कमा सकते है |

लास वेगास के एक मल्टीमीडिया कलाकार विक्टर लैंग्लोइस 19 वर्षीय कलाकार है, जो एनएफटी क्षेत्र के सबसे प्रमुख युवा कलाकारों में से एक है | सबसे लोकप्रिय एनएफटी (NFT) प्लेटफार्मों पर एनएफटी की एक विस्तृत श्रृंखला जारी की है, क्रिस्टी और सोथबी के माध्यम से नीलामी में भी उनकी कृति के टुकड़े बेचे गए थे। जिसकी लगभग 2.5 करोड़ बिक्री हुई है। ऐसे कई उदाहरण है जिससे यह सिद्ध होता है की कला के आधार पर अधिक पैसा और प्रसिद्धि पाई जा सकती है|

चित्र 1: लैंग्लोइस द्वारा बनाई गई कलाकृति

चित्र 2: मल्टीमीडिया कलाकार विक्टर लैंग्लोइस

कला के किसी भी क्षेत्र में यदि बच्चो की रूचि है, तो माता-पिता और शिक्षण-गण का कार्य केवल इतना है, की उनको समय-समय पर प्रोत्साहित करते रहे और बच्चो में अपना विश्वास बनाए रखे | कला को मुख्य धारा में जोड़ने का कार्य प्राथमिक शिक्षा के साथ ही संभव हैं | यही कला विद्याथियों के जीवन की आधार शीला बन जाती है जिसके द्वारा वह आकाश की उचाईयो को छु सकते है |

निष्कर्ष

कला प्राथमिक शिक्षा में हमेशा से उपयोगी सिद्ध हुई है | आवश्यकता है, तो बस इतनी की इस विषय पर गंभीरता से कार्य किया जाए | जिस तरह शिशु के

x

विकास में सभी पोषक तत्वों का होना अनिवार्य ही उसी प्रकार शिक्षा में कला की अनिवार्यता है | जो विद्यार्थी के सम्पूर्ण विकास की लिए आवश्यक है | सभी विषय अपने स्थान पर अत्यंत महत्वपूर्ण हैं, बच्चों को कौन सा विषय कैसे सीखना है, इसके लिए प्राथमिक स्तर पर ही ध्यान देना उचित है। जीवन में लक्ष्य पर चलने योग्य पथ निर्माण का कार्य प्राथमिक कक्षा ही करती हैं| जहां समय-समय पर कला विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करती हुई नजर आती है|

संदर्भ सूची

1. Anaheim Elementary School District. Benefits of art education for children [Internet]. Anaheim (CA): Anaheim Elementary School; [cited 2025 Oct 10]. Available from: https://anaheimelementary.org/curriculum-and-instruction/programs/vapa/benefits-of-art-education-for-children/
2. Thomas L. 5 teen artists who made more than six figures from NFTs [Internet]. NFTNOW; 2022 Feb 23 [cited 2025 Oct 10]. Available from: https://nftnow.com/features/6-teen-artists-6-figures-from-nfts/
3. RAS. Why arts and culture education is essential [Internet]. YouTube; 2018 Aug 29 [cited 2025 Oct 10]. Available from: https://www.youtube.com/watch?v=1pJQ-Nr_nUw
4. The Times of India. Over 35,000 students committed suicide between 2019–21: MoS Social Justice [Internet]. 2023 Dec 6 [cited 2025 Oct 10]. Available from: https://timesofindia.indiatimes.com/india/over-35000-students-committed-suicide-between-2019-21-mos-social-justice/articleshow/105762222.cms
5. UCLA Center for the Transformation of Schools. Sir Ken Robinson: "Reimagine learning that can change the world" – Reimagine education [Internet]. YouTube; 2018 Jan 29 [cited 2025 Oct 10]. Available from: https://www.youtube.com/watch?v=ZT3QpUfEg1Q
6. Wasserman D, Cheng Q, Jiang X. Global suicide rates among young people aged 15–19. World Psychiatry. 2005;4(2):114–20. Available from: https://www.ncbi.nlm.nih.gov/pmc/articles/PMC1414751/
7. World Population Review. Suicide rate by country 2024 [Internet]. 2024 [cited 2025 Oct 10]. Available from: https://worldpopulationreview.com/country-rankings/suicide-rate-by-country

International Journal of Applied Research

Peer Reviewed Journal, Refereed Journal, Indexed Journal

ISSN Print: 2394-7500, ISSN Online: 2394-5869, CODEN: IJARPF, Impact Factor (RJIF): 8.69

Publication Certificate

This certificate confirms that **"Rubina Khan"** has published manuscript titled **"कला के माध्यम से शैक्षणिक, व्यक्तिगत विकास और सकारात्मकता ।"**.

Details of Published Article as follow:

Volume	:	**11**
Issue	:	**10**
Year	:	**2025**
Page Number	:	**103-105**

Certificate No.: **11-9-36**

Yours Sincerely,

Akhil Gupta
Publisher
International Journal of Applied Research
www.allresearchjournal.com
Tel: +91-9711224068

प्रमाण-पत्र

प्रमाण-पत्र

NATIONAL CONFERENCE

INNOVATIVE RESEARCH AND PRACTICES IN COMMERCE, MANAGEMENT AND SOCIAL SCIENCES FOR SUSTAINABLE GROWTH (IRPCM 2024)

3 - 4 APRIL, 2024

C E R T I F I C A T E

This is to certify that Mr./Ms./Mrs./Dr./Prof. Rubina Khan

Govt. Arts college Kota, Rajasthan has presented

Research Paper entitled प्रारम्भिक शिक्षा में कला का महत्त्व |

in the *Technical Session IV* on *"Innovative Research and Practices in Business Governance, Economics and Social Sciences"* in the Two Days National Conference Organized by Department of Commerce and Management, University of Kota, Kota, Rajasthan and Indian Accounting Association, Kota Branch on 3 - 4 April 2024.

Prof. Sanjay Bhayani
General Secretary, IAA
&
Head & Dean
Department of Business Management
Saurashtra University, Rajkot

Prof. Ashok Kumar Gupta
President
IAA Kota Branch
&
Principal(Retd.)
Government Arts Girls College, Kota

CMA Dr. Meenu Maheshwari
Conference Director
&
Head, DOCM, University of Kota, Kota
National Executive Member & General Secretary
IAA ,Kota Branch

Dr. Ashish Asopa
Convener
&
Assistant Professor
DOCM, University of Kota, Kota

DAYANAND COLLEGE, AJMER

&

ART LITERATURE AND CULTURAL FOUNDATION, AJMER

National Conference

on

Art and Literature

22nd December 2023

Certificate

This is to certify that Dr./Mr./Ms. Rubina Khan

of Govt. Art's college Kota, Rajasthan *has attended / presented a paper on Topic*

कला का प्रभाव मानव जीवन पर | *in this Conference.*

Dr. Ritu Shilpi	. Mahindra Singh Chouhan	Dr. Abhinav Kamal Raina	Dr. Laxmi Kant
Conference Secretary	*Secretary*	*President*	*Conference Director*
HOD Drawing and Painting	*ALCFA*	*ALCFA*	*Principal*
DAV College, Ajmer			*DAV College, Ajmer*

MADHYA PRADESH BHOJ (OPEN) UNIVERSITY

Raja Bhoj Marg (Kolar Road), Bhopal-462016

ऑनलाईन संगोष्ठी

नई शिक्षा नीति का एक वर्ष, अनुभव एवं चुनौतियां

दिनांक – 11 अगस्त 2021, बुधवार

Registration No :
MPBOU/2021/035

Certificate

प्रमाणित किया जाता है कि

Rubina Khan

ने प्रतिभागी के रूप में जिसका विषय **नई शिक्षा नीति का एक वर्ष, अनुभव एवं चुनौतियां,** दिनांक 11 अगस्त 2021, बुधवार को सहभागिता रही। हम आपके उज्जवल भविष्य की कामना करते हैं।

प्रो. रतन सूर्यवंशी
निदेशक, सीका

आयोजक

सेंटर फॉर इंटरनल क्वालिटी एशुरेंश सेल (सीका)
मध्यप्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय, भोपाल

VOICE OF SPECIALLY ABLED PEOPLE

AN ORGANIZATION IN SPECIAL CONSULTATIVE STATUS WITH UN ECOSOC

VOSAP ART FROM HEART

CERTIFICATE of PARTICIPATION

TO

Rubina Khan

IN ARTIST CATEGORY OF

Adult Artist

VOSAP ART FROM HEART CONTEST 2020

THEME: DISABILITY

DATE OCTOBER 31, 2020

EVENT SPONSORS

GRAND SPONSOR

PRANAV DESAI,
FOUNDER, VOSAP

YOU MADE A DIFFERENCE IN PEOPLE'S LIVES

WWW.VOICEOFSAP.ORG